महामति प्राणनाथ की किरंतन पदावली

का

सांस्कृतिक-अनुशीलन

[प्रयाग विश्वविद्यालय की डी०फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत]

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक

डा० मातावदल जायसवाल, एम०ए०डी०लिट०

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

प्रस्तुत कर्त्री

श्रीमती इन्दुबाला गुप्ता

सन् 1986 ई०

प्राक्कथन

भारत के मध्यकालीन इतिहास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक हलचल का केन्द्र मध्य युग का सूबा हिन्दुस्तान रहा है। इसी युग की समृद्धिशाली परम्परा को सुदृढ़ करने में सन्त कवियों की केन्द्रीय भूमिका रही है। इसी युग में राष्ट्रीय चेतना के उज्जीवन के साथ ही साथ हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर जिज्ञासा और अन्वेषण की भी प्रबलता बढ़ी है। साहित्यिक और समाज के अनुशीलन में भी इस परिवर्तनशील मनोवृत्ति के प्रभाव दृष्टिगत होते हैं।

इस परिवर्तित दृष्टिकोण के सूक्ष्म द्रष्टा मध्यदेश की महान्तम विभूति महामति प्राणनाथ का नाम श्रद्धा से स्मरण किया जात है। वे महाराज छत्रसाल के राजगुरु एवं आध्यात्मिक जीवन के प्रेरणा-स्रोत थे। राष्ट्र भक्त एवं सन्त कवि के रूप में महामति प्राणनाथ छत्रसाल शिवा युग के एक महान प्रबुद्ध विचारक और सच्चे समाज सेवी थे। इन्होंने केवल समन्वयात्मक दर्शन की प्रतिष्ठा ही नहीं की अपितु तत्कालीन रूढ़िगत अन्ध मान्यताओं के विरुद्ध क्रान्तिकारी, कदम उठाया और युगानुरूप नवीन जीवन मूल्य को प्रस्तुत किया।

महामति प्राणनाथ की विचारधारा और और प्रणामी सम्प्रदाय ने भारत के धार्मिक इतिहास में अपनी विलक्षणता के कारण विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया धार्मिक दृष्टिकोण से महामति प्राणनाथ ने व्यक्ति के अच्छे-बुरे ~~आचार बुरे~~ आचार-विचार के प्रतिबिम्ब को ही समाज कहा है।

संत कवि गोरखनाथ, कबीर, नानक की अपेक्षा महामति प्राणनाथ में काव्य तत्व अधिक व्यापकता एवं सजीवता से चित्रित है। कीर्तन पदावली में निर्गुण कृष्णभक्ति, सूफी साधना सभी को समन्वित कर सर्वधर्म समभाव समन्वित करने की काव्यसाधना प्रतिफलित हुई है। इसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति का सम्यक परिपाक हुआ है। जागनी अभियान के माध्यम से लोक या समाज की आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ समाज की विषमताओं को भी दूर करने का प्रयास किया गया है।

महामति प्राणनाथ जी का साहित्य के क्षेत्र में प्रमुख योगदान रहा है। क्योंकि व्यक्ति साहित्य और समाज तत्कालीन भारतीयों के लिए एक विशिष्ट स्थान रखता है। सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक, साहित्यिक, राजनीतिक क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रणामी सम्प्रदाय के अनेक विद्वानों द्वारा महामति प्राणनाथ जी पर अनेक कार्य हुए हैं। इन विद्वानों ने महामति प्राणनाथ के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के साहित्य जगत में उजागर किया है। इस दिशा में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के पर्यवेक्षक डा० माता बदल जायसवाल का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्हीं की प्रेरणा से इस शोध कार्य का सम्पादन हो सका।

प्रस्तुत शोध विषय अत्यन्त नवीन है परन्तु अनेक विद्वानों की लेखनी से अनेकानेक सहायता मिली है। महामति प्राणनाथ द्वारा कृत कुलजम-स्वरूप ग्रन्थ में संकलित धर्मग्रन्थ " कीर्तन पदावली " से शोध कार्य प्रस्तुत किया है जिसका विषय

महामति प्राणनाथ प्रणीत कीर्तन पदावली का सांस्कृतिक अनुशीलन है। इस शोध प्रबन्ध की सामग्री सात अध्यायों में विभक्त है। इसमें जागनी अन्दोलन तथा प्रेम लक्षणा भक्ति नवीन शोध कार्य है।

प्रथम अध्याय :—

— जीवन वृत्त — में उनके जीवन उनके परिवार पर प्रकाश डाला गया है।

—द्वितीय अध्याय:—

— साहित्यिक कृतित्व — में कीर्तन पदावली के संदर्भ में इसमें उनकी रचनाओं के बारे में प्रकाश है।

तृतीय अध्याय :—

—दार्शनिक अनुशीलन — इसमें उनके आध्यात्मिक एवं धार्मिक दर्शन पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय :—

— जागनी अन्दोलन — यह एक नया अध्याय है इसमें उनकी सर्वांगीण जागनी लीला (आध्यात्मिक) का विवेचन है।

पंचम अध्याय :—

— धर्म — इसमें उनकी धार्मिकता तथा इष्ट का स्वरूप और उपासना का वर्णन है।

षष्ठम अध्याय :--

-- प्रेम लक्षणा भक्ति -- इसमें उनके भक्ति भावना का चरम लक्ष्य तथा अपने इष्ट के प्रति प्रेम भाव की पराकाष्टा को प्रस्तुत किया है।

सप्तम अध्याय :--

-- समाज -- समाज में होने वाले सुधार - जैसे समाज सुधार, राजनैतिक सुधार, धार्मिक सुधार या हिन्दुस्तानी आन्दोलन आदि का वर्णन है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सम्पन्न करने में मुझे जो सफलता मिली है उसका सम्पूर्ण श्रेय मेरे शोध - पर्यवेक्षक डा० मातावदल जायसवाल को है अपने व्यस्त कार्यक्रमों से समय निकाल कर उन्होंने मुझे जो मार्ग दर्शन एवं सहयोग प्रदान किया है उनके प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। मैं डा० जगदीश गुप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने समय समय पर मेरा उत्साह वर्धन किया। इसके अतिरिक्त मैं हिन्दी विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय के आचार्य डा० योगेन्द्र प्रताप सिंह के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिनका मार्ग दर्श प्रस्तुत शोध में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ।

डा० लक्ष्मी नारायण दुबे (रीडर हिन्दी विभाग सागर विश्वविद्यालय, सागर) श्रीमती विमला मेहता (नई दिल्ली) डा० रामपूर्ति त्रिपाठी (प्रोफेसर व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय उज्जैन) डा० रणवीत कुमार साहा, डा० पाण्डया आदि के नाम भी उल्लेखनीय है। जिनकी मैं आभारी हूँ जिनके

साहित्य के माध्यम से मैं सहायता पा सकी। इसके अतिरिक्त उन सभी सम्मान विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहायता प्रदान की ।

अन्तत: मैं अपने पति डा० जी०एन० गुप्ता के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने गृहकार्यों से मुझे मुक्त करके शोध करने की दिशा में प्रेरित एवं उत्साहित किया है। वस्तुत: इस दिशा में उन्हीं की प्रेरणा-शक्ति इस शोध को सम्पन्न करने में क्रियाशील रही है।

श्रीमती शकुन्तला गुप्ता
प्रयाग विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

रक्षा बन्धन
वि०सं० 2043
तदनुसार 19 अगस्त 1986 ई०

विषय-सूची

अध्याय 1

महामति प्राणनाथ--जीवन वृत्त

अध्याय 1

महामति प्राणनाथ-जीवन वृत्त

भारत के मध्यकालीन इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है मध्य-कालीन भक्ति आन्दोलन:-- मध्य युग में मध्य प्रदेश का सूबा हिन्दुस्तान कहा गया और यह प्रदेश हमेशा सांस्कृतिक हलचल का केन्द्र रहा। मध्य युग में इस प्रदेश की भाषा को मध्य देशी या हिन्दवी व हिन्दी कहा गया है। जब हम तत्कालीन इतिहास की ओर दृष्टिपात करते हैं तो विदित होता है कि मध्य युग में राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में अनेक कुप्रवृत्तियाँ और कुप्रथायें वर्तमान थीं पूरे देश के समाज में दो वर्ग प्रधान थे -- हिन्दू और मुसलमान। 17वीं शती के इतिहास में बहुसंख्यक हिन्दू जनता का अनेक विध शोषण हो रहा था एवं उनकी धार्मिक स्वतंत्रता पर भी तत्कालीन शासक समाज निर्मम प्रहार कर रहा था फल स्वरूप देश के आक्रान्त जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन था ऐसे ही कठिन समय में महामति प्राणनाथ का आविर्भाव हुआ।

मुगलबादशाह अकबर और दाराशिकोह क्रमश: दीन इलाही तथा सूफी सम्प्रदायों की धर्म दृष्टि देकर जन जीवन में एक प्रकार की धार्मिक सुधार लाने का उद्योग कर रहे थे। इस तत्त्व दृष्टि को प्राणनाथ जी ने पूर्ण रूप से भारतीय

धर्म चिंतन का अंग बनाने का उद्योग किया है। दोनों समाजों की गिरती हुई दशा को ध्यान में रख कर एक ऐसे धर्म का प्रवर्तन किया जिसे हम मानव धर्म या विश्व धर्म की संज्ञा से विभूषित कर सकते हैं। अपने मानव धर्म की संस्थापना में श्री प्राणनाथ जी को कठिन संघर्ष करना पड़ा। श्री प्राणनाथ ने तर्क शास्त्रार्थ के माध्यम से अन्य मतावलंबियों पर अपनी विजय स्थापित की। यह एक महत्व-पूर्ण घटना है। युद्ध क्षेत्र में परास्त हिन्दू राजे इस सांस्कृतिक टकराव या बिखराव की समस्या का समाधान नहीं खोज सके।

इस संसार के पारम्परिक अगुआ पंडित, पुरोहित पाढे तथा काजी, मौलवी मुल्ला ने धर्म समाज, संस्कृति को और अधिक एकांगी, रूढ़िवादी, कर्मकांडी बना दिया फलतः हिन्दू अधिक कर्मकांडी हिन्दू और मुसलमान अधिक कर्मकांडी मुसलमान बन गया इस बिखराव की खाई को पाटने के लिए सांस्कृतिकप्रयास उन अभिनायकों ने किया जिन्होंने राष्ट्रव्यापी भक्ति आन्दोलन का प्रवर्तन किया और जन-जीवन को जाग्रत किया। सन्त कवियों ने निराश जन-जीवन को आशा जल से सिंचित किया।

<u>जन्मतिथि तथा जन्म स्थान :-</u>

अनेक लेखकों ने प्राप्य सामग्री के आधार पर भिन्न भिन्न जन्म तिथि प्रमाणित करने की चेष्टा की। वैसे महामति प्राणनाथ जी के जीवन वृत्त के लिए सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत " बीतक" साहित्य है जन्म तिथि को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किये हैं। किन्तु प्रणामी साहित्य में महामति प्राणनाथ जी का जन्म वि०सं० 1675, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी, रविवार को

प्रथम प्रहर में माना जाता है परन्तु "बीतक" साहित्य में दो प्रकार के मत मिलते हैं कुछ के मतानुसार जन्म तिथि यही मानते हैं परन्तु कुछ के अनुसार "आश्विन मास के स्थान पर मास भाद्रपद दिया है।

महामति के जीवन वृत्तों से सम्बन्धित कई ग्रन्थ प्राप्य है - श्री लाल दास जी कृत "बीतक", श्री मुकुन्द दास जी बीतक, श्री वृजभूषण कृत वृतान्त मुक्तावली, लल्लू भाई जी कृत वर्तमान दीपक आदि "बीतक" प्राचीन है। आधुनिक युग में पं० कृष्ण दत्त जी शास्त्री के निजानन्द चरितामृत, डा० राजबाला सुराना प्राणनाथ और उनके साहित्य, पं० मिश्री लाल कृत श्री प्राणनाथ का जीवन और साहित्य। डा० सिहाना ने अपने शोध प्रबंध में लालदास की बीतक से जन्म तिथि विषयक पंक्तियां उद्धृत की है, उनमें आश्विन मास का उल्लेख है। और डा० पाठ्या के शोध-प्रबंध में भाद्रपद मास का उल्लेख है और दोनों में अंतर भी है। जन्म तिथि वाले उल्लेखों में सम्वत, मास, पक्ष और तिथि के साथ दिन "रविवार" का उल्लेख भी मिलता है वैसे तो जन्म तिथि की वास्तविकता का ज्ञान ज्योतिष-गणित के द्वारा भी किया जा सकता है।

प्रो० जायसवाल द्वारा लिखित प्रयास और द्वितीय प्रणाम (लाल दास कृत बीतक) से उनके जीवन का परिचय मिलता है। अतः समस्त विचारोपरान्त प्राणनाथ जी का जन्म गुजरात - जामनगर में 1675 भाद्रपद कृष्ण 14 रविवार तद्वत रविवार, 9 अगस्त सन् 1618 ई० की प्रामाणिक सिद्ध होती है। उनके गुरु निजानन्द स्वामी देव चन्द्र जी उमरकोट, मारवाड़ में 1581ई० में पैदा हुये। श्री देव चन्द्र जी को चालीस वर्ष की अवस्था में अक्षरातीत परमात्मा के दर्शन हुए। तत्पश्चात् उन्होंने ब्रह्मात्माओं, जिन्हें पुराण में ब्रह्म-मुनि,

अरशअजीम रुहे
और कुरान में मोमिन और अर्शअजीम की रूहे कहा गया, जगाने का कार्य आरम्भ किया अपने इस पुण्य कार्य में श्री देव चन्द्र जी को श्री प्राणनाथ के रूप में एक दक्ष साथी मिल गया।

पारिवारिक जीवन :—

महामति प्राणनाथ जी लोहाणा जाति के क्षत्रिय थे इनके पिता का नाम केशव ठाकुर तथा माता का नाम धनबाई था पिता जामनगर के प्रधान मन्त्री थे बचपन में इनका नाम श्री मेहेराज {मिहिर राज} ठाकुर था इनके तीन भ्राता थे {श्यामल, गोवरधन, हरवंश} और एक छोटे {उधव} भाई थे। इनके ज्येष्ठ भ्राता जी गोवरधन श्री देवचंद जी के बड़े भक्त थे। उन्हीं के साथ वि० सम्वत 1687 मार्ग शीर्ष शुक्ल 9 को {12 वर्ष 2 मास 14 दिन की आयु में} नौतनपुरी {जामनगर} में आपने सर्वप्रथम श्री देवचन्द्र जी के दर्शन किये। दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए और यह आकर्षण गुरू-शिष्य में परिवार्तित हो गया। अपनी पर्णकुटी में {जहाँ आज प्रणामियों का प्रसिद्ध खिजड़ा मन्दिर है} श्री देवचन्द्र जी ने श्री मेहेराज को "तारतम्य" की दीक्षा दी। इसी समय मेहेराज का विवाह भी हो गया और आप गृहस्थ बन गए किन्तु आपकी धर्मनिष्ठा में किसी प्रकार का व्याघात नहीं हुआ आपकी पत्नी जिन्हें लोग से बाई जी राज कहा करते थे सदैव आपके साथ रहीं। वैसे प्रणामी साहित्य से इनके परिवार के बारे में सामग्री प्राप्त नहीं होती है।

बाल्य काल :—

महामति प्राणनाथ के लौकिक जीवन के सम्बन्ध में भारतीय इतिहास तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास से बहुत ज्ञात नहीं हुआ। प्रणामी मन्दिरों

में महामति प्राणनाथ के विषय में लिखे प्रमाणित जीवन के वृत्तों को प्रतिवर्ष पढ़ने की परम्परा प्रचलित है।

महामति प्राणनाथ का "लौकिक" नाम "मेहराज ठाकुर" था तथा बचपन का नाम मिहिरराज ठाकुर था। बारह वर्ष की आयु में वि०सं० 1687 में मेहराज ने श्री निजानन्द सम्प्रदाय (जो कालान्तर में प्रणामी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ) के प्रवर्तक श्री देवचन्द्र जी से दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद ही यह अपने गुरु के परम भक्त तथा शिष्य बन गये। अतः साक्ष्यों से पता चलता है कि अपनी भाव सत्ता के विसर्जन के साथ ही, इन्द्रावती अपने गुरुदेव और उनमें स्थित अपने प्रियतम परमात्मा स्वरूप में विलीन हो गई— अपने आत्मोत्थान को, समस्त भावोत्कर्ष को महामति ने अपनी व्यष्टि अस्मिता से, समष्टि में विसर्जित कर दिया। साथ ही , अपनी सारी पहचान को, काया के समस्त उपादान, आत्म कौशल, गुण संस्कार को पुरुष- अर्धाङ्गी, स्वरूप गुरु को समर्पित कर दिया ।

<u>दीक्षा और गुरु :—</u>

प्राणनाथ जी के दीक्षा गुरु देव चन्द्रजी श्रीमतु मेहता तथा कुंवर बाई के इकलौते पुत्र थे उनका जन्म मारवाड़ के उमर कोट गाँव में हुआ था श्रीमतु मेहता उत्तम कायस्थ जाति के बड़े धर्मनिष्ठ और धनाढ्य व्यापारी थे। उमर कोट तथा भोजनगर के मध्य बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापार करते थे। और बाल्यकाल में ही देवचन्द्र अपने पिता के साथ भोजनगर (कच्छ प्रदेश) हो आये। तेरह वर्ष की उम्र में ही देवचन्द्र जी भोजनगर की ओर चल पड़े। बाल्यकाल से ही उनमें अभूतपूर्व आध्यात्मिक क्षमता विकसित हो गई थी, वैराग्य की भावना ने उन्हें एक दम विरक्त बना दिया तथा देवचन्द्र जी सच्चे गुरु के लिए अधीर

हो उठे। मत्तु मेहता अपने पुत्र के लिए उमरकोट का घर छोड़कर भोजनगर और फिर जाम नगर आकर बस गये। देवचन्द्र जी अपने उद्देश्य के लिए काफी भटकते रहे। भोजनगर में ही देवचन्द्र ने हितहरिवंश सम्प्रदाय के स्वामी हरिदास जी से $20\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में दीक्षा ली और उसी दिन उनके माता पिता ने उनका विवाह लीलाबाई नाम की लड़की से कर दिया। विक्रम सम्वत् 1678 में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने प्रगट हो कर उनको तारतम मंत्र दिया। देवचन्द्र जी तथा लीलाबाई को बिहारी जी तथा रतनबाई के रूप में दो संतान हुई। देवचन्द्रजी के माता-पिता के परलोकवास के बाद ही लीलाबाई का भी परमधाम वास हो गया। और अन्त में तारतम मंत्र की शरण ली इसके प्रकाश में उनको अक्षरातीत ब्रह्म के स्वरूप उनके अक्षर लीला रूपों में अंतर स्पष्ट हो गया। उसी समय देवचन्द्र जी निजानंद स्वामी हुए। फिर जामनगर में तारतम वाणी के अवतार महामति प्राणनाथ का जन्म हुआ। देवचन्द्र के जीवन की सबसे बड़ी बड़ी घटना प्राणनाथ जी का उनसे शिष्यत्व ग्रहण करना है। सम्वत् 1687 में 12 वर्ष, 1 मास तथा 14 दिन की आयु में प्राणनाथ जी ने सर्वप्रथम देवचन्द्र जी के दर्शन किए। उनमें ब्राह्मांगना इन्द्रावती को परखकर, देवचन्द्र जी ने प्राणनाथ जी को तारतम मंत्र दिया। महामति की वाणी तारतम वाणी है।

प्राणनाथ जी 16 वर्ष तक सद्गुरु के साथ-साथ रहे। गुरुदेव ने अपनी जीवन भर की अर्जित अध्यात्म निधि, हिन्दू-धर्मशास्त्रों के निष्कर्ष सहित उनके सुपुर्द कर दिया। सन् 1653 में प्राणनाथ जी धोल राज्य में राज्यतंत्र के कार्य में लग गए किन्तु सन् 1655 में देवचन्द्र जी अस्वस्थ हुए और उन्होंने प्राणनाथ जी को अपने पास बुला लिया। वे देवचन्द्र जी के पास 22 दिन तक रहे।

। सितम्बर 1655 ई० को देवचन्द्र जी ने धर्म प्रचार का कार्य प्राणनाथ जी को सौंपकर नश्वर शरीर का त्याग किया। गुरु और शिष्य की ऐसी तन्मयी अनन्य स्थिति अन्यत्र दुर्लभ है। प्राणनाथ नाम परमात्मा का नाम है देवचन्द्र जी में प्रियतम विराजे तो वे प्राणनाथ हो गये सद्‌गुरु जब मेहराज के हृदय में संस्थित हुए तो वे महामति प्राणनाथ कहलाये। गुरु देवचन्द्र जी ने दीक्षा मंत्र देकर अपनी श्यामाजी, आत्मा के साथ, प्राणनाथ जी के शरीर में इन्द्रावती के साथ आविर्भाव स्पष्ट किया। पुरुष और उसकी शक्ति के अन्तर्भाव या परस्पर अतः गोपन को ही इन नाम संज्ञाओं में चरितार्थ किया गया है। महामति प्राणनाथ में प्रणामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे और दीक्षा लेने के बाद से ही गुरु के परम शिष्य तथा परमभक्त बन गये थे। अपने सजग व्यक्तित्व के कारण ही महामति को देखते ही, गुरु देव चंद्र को समस्त गुण लक्षणों से सम्पन्न "इन्द्रावती" का अभिज्ञान हो गया था।

वैवाहिक जीवन :—

श्री देवचन्द्र जी ने "श्री मेहराज ठाकुर" (महामति प्राणनाथ) को "तारतम्य" की दीक्षा दी (यह दीक्षा (पर्णकुटी) प्रणामियों का प्रसिद्ध रिक्वड़ा मन्दिर में दी) उसी समय मेहराज ठाकुर का विवाह हो गया। इनकी पत्नी का नाम फूलबाई था जिन्हें लोग बाई जी राज कहा करते थे पत्नी अधिक साध्वी थी तथा किसी भी धर्मनिष्ठा में बाधक नहीं हुई वह उनके साथ सदैव रही। धर्म निष्ठा के लिए ही उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये।

वैसे कुछ विद्वान लोग कहते हैं कि इनकी पत्नी फूलबाई का शीघ्र अन्त

हो गया था कुछ वर्ष बाद उनका दूसरा विवाह हुआ वीरभाण की पुत्री तेजबाई जी से और तेजबाई ही इनके साथ जीवन पर्यन्त रही।

विदेश यात्रा :—

वि० सम्वत् 1700 {1643ई०} में ज्येष्ठ भ्राता गोवर्धन की मृत्यु हो गई। दिन प्रतिदिन श्री मेहेराज ब्रह्मचर्य और तपश्चर्या में ही अधिक रत रहने लगे। तपश्चर्या से अधिक क्षीण होता देख श्री देव चन्द्र जी ने उन्हें लौकिक कार्य में लगाया तथा सद्गुरु श्री देवचन्द्र जी की आज्ञा से कार्यवश मेहेराज ठाकुर {महामति प्राणनाथ} सम्वत 1703 में चालीस दिन की यात्रा करके अरब देश गए वहाँ उन्हें पाँच वर्ष रहना पड़ा तथा वहाँ की प्रचलित भाषा, रीति-रिवाज तथा धर्म का अच्छा परिचय प्राप्त हुआ और वहीं भी सुल्तान तत्कालीन शेख अल्ला से भी मिले। अरब के भारतीय लोगों को महामति ने धर्म का ज्ञान कराया वहाँ के मुसलमानों से धर्म की चर्चा की। विदेश से लौटने के बाद सं० 1710 से 35 वर्ष की अवस्था में आप धरोल राजा के प्रधान मन्त्री बने, वहाँ कल्ला जी नामक राजा राज्य करता था। दो वर्ष आठ माह उपरान्त सद्गुरु के आह्वान पर अपने मन्त्री पद से मुक्ति ले ली। पुन: श्री देवचन्द्र जी के परधाम गमन के पश्चात् आपने अपने पिता के स्थान पर जामनगर का प्रधान मन्त्री पद स्वीकार किया राज्य संचालन तथा धर्म प्रचार दोनों कार्य साथ-साथ करते रहे।

बन्दीगृह यात्रा :—

अपने जीवन में महामति प्राणनाथ को जेल की कठिनाइयाँ भी सहनी पड़ी, अविवेकी जामबजीर ने एक एक-मिथ्यारोपण में आपको बन्दीगृह में डाल

दिया। जामनगर के राजा कुछ लोगों की चुगलखोरी पर विश्वास करके, कि मेहराज ठाकुर (महामति प्राणनाथ) राज्य कोष का रुपया धर्म प्रचार में लगा रहे है और महामति प्राणनाथ को नजर बन्द कर दिया गया वही जेल में महामति प्राणनाथ को सद्गुरु और सुन्दर के साथ से अलग रहना पड़ा तथा निरापराध से दु:खी होकर उनकी आत्मा संसार से विरक्त होकर अर्न्तमुखी हो गई।

विरह की ज्वाला से मन निर्मल हुआ और अक्षरातीत परमात्मा तथा उनकी अर्द्धांगिनी आनन्द अंग श्यामा का स्वरूप देखा। बन्दी बहेसा में श्री मुख से "तारतम बानी" का अवतरण प्रारम्भ हो गया। "बहेसा की बीतक" में "प्रबोध पुरी" कहा गया है। सर्वप्रथम इनके छोटे भाई (उद्धव) जो उन्हीं के साथ नजरबन्द किए गये थे बानी को कोयले से दीवारों पर लिखा, इनकी जोश पूर्ण विरह और भावनाओं से पूर्ण बानी को सुन कर रानियों ने इनके लिए कागज कलम जुटा दिए। इसी समय सूबेदार कुतुब खाँ (कुतुबुद्दीन खान) ने जामनगर पर चढ़ाई की और जामवजीर श्री मेहराज को बन्दीगृह में छोड़कर अहमदाबाद चला गया। इसी कारावास की प्रणामी "प्रभोधपुरी" (प्रबोधपुरी) कहते हैं। यही दिव्य वाणी प्रस्फुटित हुई और इनकी पहली रचना रास अवतरित हुई अन्त में जामवजीर ने अपनी भूल स्वीकार करके श्री मेहराज से क्षमा मागी और उन्हें कारावास से मुक्त कर दिया।

सम्वत् 1719 (1662ई0) में कुतुब खा ने पुन: जामनगर पर चढ़ाई की इसी समय उस सूबेदार को समझाने के लिए जामवजीर के साथ श्री मेहराज भी अहमदाबाद (गुजरात) गए किन्तु वहाँ इनके साथ इस प्रकार का धोखा हुआ,

कि राजकार्य से इन्हें विरक्ति हो गई तभी से लौकिक कार्य त्याग कर पूर्णरूप से आप धर्म जागरण के कार्य में दत्तचित्त हो गए।

1712 सं0 में अपने गुरु देवचन्द्र जी के कहने के अनुसार दुनियादारी को छोड़कर निजानन्द सम्प्रदाय के ~~धर्म का~~ प्रचार में महामति प्राणनाथ लग गये/ ~~और फिर धर्म प्रचार की ओर लग गये~~।

धर्म प्रचार :--

अहमदाबाद से सं0 1722 में महामति प्राणनाथ जी मुक्त होकर प्रचार और प्रसार के लिए दीपबन्दर आये। वहाँ से पोरबन्दर, पाटण, मंडई (माँडवी) भोजनगर होते हुए ठट्ठानगर पहुंचे जहाँ कबीरपंथी "चिन्तामन" को शास्त्रार्थ में परास्त कर उसे शिष्य बनाया और यहीं पर लालदास जी संवत् 1667ई0 में दीक्षित हुए जो पत्नी सहित प्राणनाथ जी के साथ रहे ठट्ठानगर से लाठी, मस्कत(अरब) आदि नगरों में प्रचार करते हुए ठट्ठानगर लौट आये। इसी समय बिहारी जी और महामति प्राणनाथ में धर्म प्रचार में विचार न मिलने के कारण मनमुटाव एवं अलगाव हो गया और महामति प्राणनाथ जी असाढ़ बदी 14 सम्वत् 1729 में सूरत पहुंचे, सूरत में "मेहराज ठाकुर" को गद्दी पर बिठा कर उन्हें प्राणनाथ कहा गया। यहीं पर "प्राणनाथ" ने जाति पाति, स्त्री-पुरूष, राजा-रंक का भेद-भाव मिटाकर देश-देशान्तर में धर्म प्रचार का महाव्रत लिया सैकड़ों साथियों के साथ धर्म प्रचार पर निकल पड़े। महामति प्राणनाथ सत्य धर्म मार्ग के लिए अनेक कष्ट का सहन करते रहे। और वह सीदपुर (सिद्धपुर) होते हुए एक दिन प्राणनाथ जी संवत् 1721 (1664 ई0) में राजस्थान घूमते

हुए मेरता (मेड़ता) पहुँचे । वहाँ पर जैनाचार्य लाभानन्द यती को अपने शास्त्रार्थ में परास्त किया और राजा जसवन्त सिंह राठौर को अपने धर्म में दीक्षित करने के लिए गोवरधन को पत्र देकर अटक पार भेजा, किन्तु जसवन्त "जाग्रत" न हो सके। यहीं पर एक दिन राजस्थान के नगर में घूमते हुए मेरता (मेड़ता) में मुल्ला की अजान सुनी "लाइला हो इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलल्लाह" सुनकर प्राणनाथ जी को हृदय में प्रकाश हुआ तारतम्य मन्त्र में एकता का आभास मिला और धर्म समन्वय का विचार दृढ़ हो गया और धर्म के नाम पर युद्ध न हो प्राणनाथ दृढ़ता से आगे बढ़ने लगे और गोकुल, मथुरा, आगरा होते हुए औरंगजेब से मिलने के लिए सम्वत् 1735 (1678 ई०) में अपने शिष्यों के साथ दिल्ली आ पहुँचे।

औरंगजेब को बदलने का यत्न- धार्मिक सत्याग्रह :--

औरंगजेब को सत्य धर्म का परिचय कराने के लिए श्री प्राणनाथ जी दिल्ली में कई मास तक रहे। सुन्दर साथ की एक बड़ी जमात उनके साथ थी। औरंगजेब की प्रतिक्रियावादी धार्मिक नीति को मारफत पर आधारित उदारवादी धार्मिक नीति में बदलने के उद्देश्य से दिल्ली में रहकर तफसी हुसैनी के आधार पर कुरान का गहन अध्ययन किया । कुरान और भागवत पुराण में इन्हें अद्भुत साम्य के दर्शन हुए और मुस्लिम धर्म के वास्तविक रूप को समझाने के लिए वाणी सनंध के रूप में अवतरित हुई। फारसी लिपि में तैयार करवा कर पाँच पत्र औरंगजेब के बड़े राजकर्मचारियों के पास भेजे। लालदास ने "हिन्दवी" में एक पत्र औरंगजेब के नाम तैयार किया किन्तु अपने साथियों के

यह कहने पर "हिन्दवी" में लिखी पाती औरंगजेब कान से नहीं सुनेगा। "शब्द फेरके" [शब्दपरिवर्तन] पुनः पाती तैयार की गई फिर भी प्राणनाथ जी ने यह समझाकर कि परिस्थित अभी अनुकूल नहीं है हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया।

<u>हरिद्वार कुम्भ :—</u>

आज से तीन सौ वर्ष पूर्व कुम्भ के अवसर पर एक आयोजित धर्म गोष्ठी में महामति प्राणनाथ जी ने सर्व-धर्म-सद्भाव की महद् भावना से प्रेरित होकर सभी प्रचलित धर्मों में समान रूप से पाये जाने वाले घटकों को समन्वय पूर्ण दिशा एवं मर्यादा प्रदान की थी। प्रमुख प्रचलित सम्प्रदायों का समन्वय किया था। धर्म आत्मा का परमात्मा से पुनर्मिलन है— योग है परन्तु धर्म जहाँ जोड़ती है वहाँ वह विघटन और विनाश का कारण भी रहा है।

1735 ई० में श्री प्राणनाथ जी हरिद्वार कुम्भ में सम्मिलित हुए तथा वहाँ अनेक षटदर्शी एकत्र हुए सबको शास्त्रार्थ में पराजित करके निजानन्द सम्प्रदाय की श्रेष्ठता को प्राप्त हुए तथा "विज्याभिनन्द निष्कलंक बुद्ध" की उपाधि से विभूषित हुए।

सोले से लगे रे साका साल बाहन का,
संवत सत्रह से पैंतीस ।
बैठाने साका विजिया अभिनन्दन का
यों कह शास्त्र और जो तीस "

इस प्रकार से धर्म का नया सम्वत् 1735 में हरिद्वार के चबूतरे पर एक मत से विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करके "विजयाभिनंद निष्कलंक बुद्ध" अवतार स्वीकार किया। उसके बाद पुनः दिल्ली वापस आ गये वहाँ पर औरंगजेब की धर्मान्ध कट्टर नीति से अत्यधिक निराश हुए तथा मन में समस्त हिन्दू राजाओं को मिलाने की महती आकांक्षा जाग उठी।

छत्रसाल-महामति प्राणनाथ मिलन :--

16 महीने दिल्ली में रह कर प्राणनाथ ने औरंगजेब को धर्म के सच्चे स्वरूप को समझाने का यत्न किया किन्तु काजी मुल्लाओं से घिरे रहने के कारण अंधकार से प्रकाश में आ कर जागृत न हो सका अपने धर्म की पूर्ति के लिये राजाओं से प्राणनाथ जी मिले और कहा कि -- धर्म के नाम पर अत्याचार करने वाले को कभी पुण्य नहीं मिलता। औरंगाबाद का राजा भाव सिंह उनसे मिला भी और शीघ्र सहमत भी हो गया किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद आबोट होते हुए रामनगर आये। रामनगर में ही देवकरण से भेंट हुई (छत्रसाल का भतीजा देवकरण) वहाँ अनेक हिन्दू मुसलमान जागृत हुए वहाँ से गढ़ा होते हुए श्री प्राणनाथ जी सम्वत् 1736 में पन्ना पधारे। पन्ना के जंगल में छत्रसाल उन्हें मिले वह भी औरंगजेब से उसकी धर्मान्धता के कारण संघर्ष कर रहा था। श्री प्राणनाथ से मुग्ध होकर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया तथा उनको राज गुरु के पद पर आसीन किया। महामति ने आशीर्वाद रूप में उन्हें तलवार भेंट किया। पन्ना में उनकी आत्मिक शक्ति बढ़ा कर हीरा का वरदान देकर महाराजा बना दिया।

अन्तकाल :—

करीबन 76 वर्ष की आयु में महामति प्राणनाथ जी ने अपना नश्वर शरीर छोड़ा। पन्ना में ही 75 वर्ष 4 माह 20 दिन की आयु में सम्वत 1751 आषाढ़ वदी 4 को सहस्त्रों शिष्यों के समक्ष यह लीला समाप्त की और परम धाम पधारे। पन्ना में ही गुम्मट नामक मन्दिर में समाधि दी गई।

व्यक्तित्व :—

महामति प्राणनाथ जिस समय अवतीर्ण हुए थे उस समय हमारे देश में धर्म सम्प्रदाय और संस्कृतियाँ अपनी तमाम सीमाओं और विकृतियों के साथ विद्यमान थीं। उन्होंने उस युग का प्रतिनिधित्व किया तथा धर्म का सच्चा स्वरूप बताया तथा इतिहास की यह एक महत्व पूर्ण घटना है। उस युग में भयानक उत्पन्न परिस्थिति में भारत देश की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाए, सभी धर्म को मानने वाले उनकी शरण में आये और धार्मिक एकता में एक सूत्र में बाँधने का यत्न किया। अपने ज्ञान से मानवता का आध्यात्मिक मार्ग और लौकिक कार्यों से प्रभावित किया महामति प्राणनाथ ने जाति-पाँति , ऊँच-नीच, छुआ-छूत इन सबके विद्रोह के खिलाफ सामाजिक समानता लाने के लिए इनका प्रयास एक अनूठा प्रयास था उन्होंने ऐसे समाज का गठन किया जिसमें ब्राह्मण, चांडाल, ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष समान रहे।

महामति ने अपनी दिव्य दृष्टि से वैमनस्य के कारणों को खोज निकाला एवं उन्हें जड़ से निर्मूल करने का प्रयास किया, धर्म का मार्ग बता कर मानवों को तुच्छ विचारों का त्याग करने की प्रेरणा दी और आत्म ज्ञान द्वारा

माया के बन्धन से छुड़ा कर उस परमात्मा की ओर ले जाना चाहा जिधर सब धर्म और सम्प्रदाय ले जाना चाहते थे। महामति प्राणनाथ ने कहा कि परमात्मा एक है और हर धर्म एक ही मार्ग पर जाता है परमात्मा की ओर ले जाने वाला मार्ग एक ही है।

महामति प्राणनाथ एक युग पुरुष थे अनादिकाल से ऋषि-मुनि की पावन स्थली रही है तथा अनेक युग पुरुष अवतरित होते रहे है। भारत की अत्यन्त दीन हीन दशा और प्रत्येक क्षेत्र में पतनोन्मुखी हिन्दू समाज को संबल प्रदान किया। तत्कालीन विश्रृंखल समाज को उन्होंने अपनी समन्वय वादी प्रवृत्ति से शुद्ध एवं प्रेम पूर्ण बनाना चाहा उनके उदारतापूर्ण विचारों को तत्कालीन समाज ने महत्वपूर्ण समझा और उनके विचारों को ग्रहण किया समन्वयवादी विचारधारा को लोगों ने उत्साह से स्वीकृत किया इसका प्रमाण यही है कि जामनगर से सूरत या सूरत से दिल्ली - पन्ना की यात्रा में हजारों की संख्या में लोग घर बार त्याग कर उनके संग हो लिए। श्री प्राणनाथ जी का दृष्टिकोण विश्व के जन हित के लिए तथा उनका जीवन सांस्कृतिक दृष्टि से राष्ट्रीय महत्व का था। उनकी मौलिक देन हर क्षेत्र में रहा है उनका विचार समन्वयात्मक था तथा भविष्य के ज्ञाता थे। श्री प्राणनाथ विरोधी ववर्गों को छोड़कर धर्म समानता की ओर जोर देते थे समन्वयात्मकदृष्टिकोण विराट भारतीय संस्कृति के कृष्ण का वही रूप सर्वाधिक उपयुक्त जो प्राणनाथ ने श्री कृष्ण को प्रदान किया।

राजनीति से श्री प्राणनाथ का सीधा सम्बन्ध नहीं था यद्यपि वह स्वयं जामनगर राज्य के मुख्यमंत्री या दीवान थे परन्तु धर्म प्रचार के लिए ही श्री प्राणनाथ ने राज्य पद छोड़ दिया उस समय के युग में राजनीति में महामति

प्राणनाथ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उन्हें अपने हिन्दू जाति पर गर्व था तथा भारत भूमि को श्रेष्ठ राष्ट्र कहते थे। परन्तु इसके बाद भी यह (प्राणनाथ) हिन्दू संस्कृति और जाति की पुरक्षा तथा इस्लामी धर्म, संस्कृति को उसमें समाहित करते थे। राजनीति को आध्यात्मिक पुट देकर प्रभावित करना महामति की विशिष्टता थी।

सामाजिक दर्शन उस समय के भारतीयों में हिन्दुओं की वर्णाश्रम व्यवस्था मूलाधार थी अपने आरंभिक काल में निश्चय ही गुण और कर्म पर आधारित रही होगी किन्तु कालान्तर में यह व्यवस्था रूढ़िवादी हो गई उससे सैकड़ों उपजातियाँ तथा जातियों का विकास हुआ जिससे धर्म पर आधारित न होकर जन्म पर आधारित होने लगी जिससे मध्ययुग में हिन्दुओं का विकास रूक गया मध्यकाल के अधिकांश संत उठी हुई समस्या पर कुठाराघात किया है। मध्य - काल में मुसलमानों के आने से सब सामाजिक समस्या और उठ खड़ी हुई उनके खान पान, विवाह सम्बन्ध और अधिक जटिल हो गई। अतः प्राणनाथ जी हिन्दू समाज के अन्दर छुआ-छूत को दूर करके सब जातियों को सामाजिक समानता के अधिकार को हिन्दू और मुसलमान को एक ही सामाजिक जाति सम्बन्ध में रखना चाहते थे। अतः सामाजिक क्षेत्र में श्री प्राणनाथ जी की अपना मौलिक देन है।

अध्याय 2

साहित्यिक कृतित्व-कीर्तन पदावली के संदर्भ में

अध्याय 2

साहित्यिक व्यक्तित्व-कीर्तन पदावली के सन्दर्भ में

श्री प्राणनाथ जी धर्म प्रचारक, समाज सुधारक के साथ-साथ साहित्यिक भी थे। प्रणामी साहित्य में गद्य और पद्य दोनों मिलते हैं इन गद्य साहित्य 1650-1680 ई० के मध्य लगभग 1000 पृष्ठ तक विस्तृत है। तथा खड़ी बोली में है यह गद्य 19वीं शता० तक ले जाता है।

प्रणामी साहित्य (प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य) लगभग सात हजार पृष्ठों और डेढ़ लाख पंक्तियों तक विस्तृत है महामति प्राणनाथ तथा उनके दो शिष्यों लालदास और मुकुन्द दास की रचनाएँ लगभग 4500 पृष्ठों में लिखी गई अधिकांश साहित्य तत्कालीन खड़ी बोली या मध्य कालीन मानक हिन्दी में लिखा गया है। इसकी विशेषता मध्यकालीन के चारों धाराओं में से किसी से भी नहीं समाती है इसी लिए प्रणामी साहित्य किसी भी धारा में समाहित नहीं किया जा सकता इसकी अपनी एक निजी विशिष्टता है। यह और समन्वयात्मक संस्कृति का राष्ट्रीय ग्रन्थ है। महामति का चौदह ग्रंथों का "कुलजम स्वरूप" में है प्रकाश और कलश प्रथम गुजराती में स्वयं महामति ने उनका हिन्दी अनुवाद पद्य में किया दोनों भाषाओं में दो ग्रन्थ आ जाने से संकलन की संख्या

सोलह हो गई। बार ग्रन्थ गुजराती में, 1 सिन्धी में, कुछ अरबी में, शेष मध्यकालीन खड़ी बोली में उर्दू मिश्रित हिन्दी में अवतरित हुई। 18758 चौपाइयाँ है 1612 पृष्ठों का यह वृहद् ग्रन्थ है जिनका विवरण इस प्रकार है।

नाम	चौपाई संख्या	भाषा
1- रास(कंवोल)	913	गुजराती
2- प्रकाश (जंबूर)	1062	गुजराती जाटी (बन्दीगुज)
प्रकाश (हिन्दी)	1185	हिन्दी (या हिन्दुस्तानी)
3- षटरूत	230	गुजराती
4- कलस (तौरात)	506	गुजराती
कलस	771	हिन्दी (या हिन्दुस्तानी)
5- सनंध (सनद)	1691	हिन्दी (या हिन्दुस्तानी) (खड़ी) कुरान की प्रमाणों सहित व्याख्या तक हिन्दी।
6- किरंतन	2102	हिन्दी, कुछ प्रकरण गुजराती सिन्धी
7- खुलासा	1020	हिन्दी, वेद कतेब समन्वय
8- खिलवत	1074	हिन्दी आत्मा परमात्मा की एकान्त गोष्ठ
9- परिक्रमा	2481	हिन्दी परमधाम वर्णन
10- सागर	1128	हिन्दी (परमात्मा और रूहों और रूप गुण शृंगार के सागर)

नाम	चौपाई संख्या	भाषा
11- सिनगार	2211	हिन्दी- (परमात्मा का स्वरूप वर्णन)
12- सिन्धी	600	सिन्धी बानी का लिपिकरण
13- मारफत	1038	हिन्दी
14- क्यामत नामा (छोटा)	217	हिन्दी (या हिन्दुस्तानी) कतेब की बातों का स्पष्टीकरण।
15- क्यामत नामा (बड़ा)	531	हिन्दी (या हिन्दुस्तानी)

साहित्य को धार्मिक सेवा में ही लगाने के पक्षपाती थे प्राणनाथ जी अन्य सन्तों की भाँति उपयोगितावादी थे जनमानस में पहुंचाने के लिए इनकी भाषा सरल एवं सुगम थी ~~भाषा में उपदेश पहुचाते थे~~। उपर्युक्त ग्रन्थों में रास प्रकाश, षटॠतु, कलश, कीर्तन ग्रन्थ का सम्बन्ध वेद पक्ष से है सनंध, खुलासा, मारफत और कियामत नाम का सम्बन्ध कतेब से है। खिलवत परिक्रमा सागर, सिनगार, सिन्धी में आत्मा की अपरोक्षानुभूति, परमात्मा और परमधाम का सांसारिक शब्दों में वर्णन है। वेद और कतेब के गुह्यार्थ स्पष्ट करते हुए आध्यात्मिक रहनी (दिनचर्या) का सरल सुगम मार्ग सुझाया है। महामति की खड़ी बोली तत्कालीन संतों की भाषा से निकली हुई और आधुनिक हिन्दुस्तानी के अति निकट है।

रास किताब :--

तारतम वाणी कुल्जम स्वरूप(का पहला ग्रन्थ है इसमें 47 प्रकरण और 914 चौ0 है इसमें पहला प्रकरण मोहजल का है। रास ग्रन्थ की वाणी का

अवतरण बसेरा नजर बन्दी – की अवधि में वि०सं० 1715 में हुआ निरपराध जेल जाने के कारण जो महामति को दुःख हुआ तथा वहाँ सद्गुरु सुन्दरदास देवचन्द्र के वियोग ने इनके मन में उद्‌गार फूट पड़े इस रास नामक रचना में इन्होंने कहा है कि मोहजाल की माया है इसके प्रलोभन से देवी देवता भी नहीं बचे। अतः प्रभु की शरण में जाना ही श्रेयस्कर है। व्रज और रास की लीलाओं का वर्णन कर पूर्व स्मृति की जागृति एवं जगत के मोह अज्ञान में विस्मृत आत्माओं को अपने आत्म स्वरूप और आनन्द का ज्ञान का अनुभव कराना ही रास का मुख्य लक्ष्य है।

2– प्रकाश :—

मूलतः "प्रकाश" गुजराती में है इस रचना में व्रज और रासलीला के रहस्यों पर प्रकाश डाला गया है जब श्री प्राणनाथ जी सम्पूर्ण भारत को इस ब्रह्म ज्ञान का आनन्द देने निकले तो उन्होंने जनसाधारण की भाषा हिन्दुस्तानी में स्वयं ही इस ग्रन्थ का अनुवाद किया। प्रकाश गुजराती में 1064 और प्रकाश हिन्दी में 1185 चौ० है। प्रकाश ग्रन्थ में उपदेशात्मक प्रकरण बहुत है। इसमें रास खेल कर कहें परमधाम लौटीं और प्रथम बार दिव्यब्रह्म धाम से इस माया पूर्ण जगत के दुःखों को देखने आयी तभी यह तीसरा ब्रह्मांड रचा गया और तीसरी बार ब्रह्म लीला प्रकाशित हुई। लेकिन कालमाया के सामने इस समय भी ब्रह्मांगनाओं को माया की नींद ने इतना मदहोश कर दिया कि गुरु देवचन्द्र जी के बार-बार सावधान करने पर भी घोर निद्रा का प्रभाव कम नहीं हुआ। अतः गुरु प्राणनाथ के हृदय में अंतर्ध्यान होकर तारतम्यवाणी का दिव्य प्रकाश देकर आत्माओं को माया के अंधकार से ऊपर उठाकर परब्रह्म कृष्ण के

प्रति शृंगार करते हैं। कातनी का दृष्टांत, लक्ष्मी जी का दृष्टांत, शुकदेव-महिमा, बेहदवाणी, प्रगटवाणी जैसे महत्व पूर्ण प्रकरण या अंश इसी रचना के अंतर्गत आते हैं, बेहदवाणी और प्रगटवाणी - प्रकाश के महत्वपूर्ण प्रकरण हैं।

3- षट्ऋतु :--

यह ग्रन्थ भावना से ओतप्रोत है इसमें 230 चौ० है इसमें 6 ऋतुओं और बारह मास का वर्णन है इसकी वाणी भी हब्सा (जामनगर जेल) में लिखी गई इसमें परम प्रिय से बिछुड़ी हुई आत्मा का वर्णन हर ऋतु में अनुकूल पूर्वस्मृतियाँ की सुखद स्मृति के द्वारा उद्दीपित हो जाती है और प्रियतम के विरह की अग्नि में अवगुणों को जलाकर निर्मल शुद्ध हृदय से यही कहती है कि हे प्रिय, अखंड परमधाम में तो तुम्हारे मधुर मिलन के आनन्द का सदा अनुभव किया। इसमें देवचन्द्र जी का आरोप कृष्ण में करके और अपने आपको इन्द्रावती के रूप में चित्रित करके विरह व्यक्त किया है। इस प्रकार एक साथ गोपी-कृष्ण का विरह और गुरु-शिष्य का विरह चित्रित हुआ है। उद्धव-गोपी संवाद में प्रेम की ज्ञान पर विजय चरितार्थ हुई है।

4- "कलश" :--

यह भी रचना मूलतः गुजराती में है इसका अवतरण भी हब्सा (जामनगर) जेल में हुआ अनूप शहर में इसका हिन्दी या हिन्दुस्तानी रूपान्तरण हुआ गुजराती कलश की चौ० 506 है। हिन्दी रूपान्तरण करते हुये कुछ प्रकरण और जोड़ दिये गये, हिन्दी कलश में 770 चौपाइयाँ हैं इसमें ब्रह्म की खोज जगत विविध धर्म मत, वेदोक्त कर्म साधना, पुरुष प्रकृति, अवतारों की मीमांसा, श्रीकृष्ण त्रिधा लीला, आदि तत्वों का विश्लेषण किया है। जागनी का प्रकरण

इसमें विशेष महत्व रखता है। इसमें महामति कष्ट कर साधनाओं से नहीं विवेक और प्रेम से आत्मा को जगाने का उपाय बताते हैं।

इसमें यही उपदेश दिया है कि माया दुखदायी है इसे पकड़ोगे तो दुःख ही पाओगे उससे बचने का एक मात्र यही उपाय है कि अपने परमधाम के अखंड सुखों का स्मरण करो। दुःख स्वयं मिट जायेगा।

5- सनंध :--

सनंध का अर्थ सनद है अर्थात निर्णायक विवरण। इसका अवतरण अनूप शहर में हुआ और कुछ सनंधे सूरत में भी अवतरित हुई। इस रचना के माध्यम से श्री महामति प्राणनाथ ने श्री मद्भागवत के माध्यम से इस्लाम के धर्मग्रंथ "कुरान" की नवीन व्याख्या की है। कुरान के कई प्रकरणों (सूरा) की व्याख्या करते हुए शुद्ध सत्य इस्लाम का प्रतिपादन किया जो भागवत धर्म के अति निकट है उन्होंने बताया सभी धर्मों का मूलतत्व एक है, लेकिन भिन्न-भिन्न भाषा के कारण झगड़े पैदा होते हैं उन्होंने परस्पर प्रेम पूर्वक रहने का उपदेश दिया :--

"हिन्दुओं को हिन्दुओं की, मुसलिम मुसलिम की तर ।
ए समझें सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखर ।।

महामति ने अपने बारह शिष्यों को औरंगजेब को सुमार्ग पर लाने के लिए भेजा। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में उसके राज कर्मचारियों ने पैगाम पढ़वाने से इन्कार कर दिया सनंध के कुछ प्रकरणों को कुरान की पुट देकर ~~उर्दू भाषा~~ फारसी मे लिखा गया। अरबी भाषा में मुसलमानों को इमाम मेंहदी के आगमन की सूचना दी।

महामति ने अपने आप को "कुरान" द्वारा प्रमाण "इमाम मेंहदी" और शास्त्रों के अनुसार "विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध" भी घोषित किया। प्रस्तुत ग्रंथ तत्कालीन नीति का ज्वलन्त प्रतीक है। इस ग्रंथ में वर्णित विषय जहाँ दोनों धर्मों के बीच प्रचलित मिथ्या आडम्बरों का खंडन करता है वहाँ धर्म-धर्म के बीच उत्पन्न होने वाले विवाद को नेस्तनाबूद कर धार्मिक भावना के बीच आध्यात्मिक सामंजस्य के पवित्र सोपान का निर्माण करता है। सनंध किताब में महामति ने सब धर्म ग्रन्थों के प्रमाण देकर सिद्ध कर दिया कि वह शक्ति उनके रूप में प्रकट हो चुकी है। उनके ज्ञान में वह शक्ति है कि धार्मिक वैमनस्य दूर कर विश्व में शान्ति लाई जा सके। अंजील कुरान के किस्सों को लोग बीती बातें मानते हैं। उनमें भविष्य के संकेत हैं। उन सब किस्सों का [illegible] सिद्धान्त का स्पष्टीकरण सनंध में किया गया है।

"ऐते दिन हम हुकमे, जुदे जुदे खेलाय ।
अब ए हुकम इमाम का, लेत सबों मिलाय।।"

अंतिम प्रकरण में स्वामी जी ने अपने साथियों को पत्र लिखते हुए, कुरान को अपनी साक्षी बता कर प्रसन्नता व्यक्त की है।

किरंतन (कीर्तन)

जो पद परमात्मा की कीर्ति या यशोगान में गाया जाता है उसे कीर्तन कहते हैं। यह ग्रंथ कुलजम स्वरूप का छठा ग्रन्थ है। इस किरंतन ग्रन्थ में 133 प्रकरण तथा 2102 चौपाइयां है। इसे संस्कृत शब्द में कीर्तन कहते है लोक प्रचलित भाषा में इसे किरंतन कहा जाता है विभिन्न पदों के संकलन के समय महामति ने इसे "किरंतन" ही नाम दिया था। संवत् 1758 में लिखित कुलजम की प्राचीनतम प्रति में कीरतन लिखा है।

"किरंतन" के प्रणेता या रचयिता के लिए "मेहेराज" "इन्द्रावती" महामत (महामति), "प्राणनाथ" शब्दों का प्रयोग हुआ है इनमें से श्री मेहेराज (ठाकुर) तो व्यक्ति वाची नाम है जो "महामति" को माता-पिता द्वारा दिया गया था, सतगुरु देवचंद जी से दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् श्री मेहेराज की "वासना" (आत्मा) का नाम "इंद्रावती" परखा गया। किरंतन में संग्रहीत आरम्भिक जीवन में जिन पदों की रचना हुई उनमें भी मेहेराज छाप मिलती है। "मेहेराज", "इन्द्रावती", महामति" और "प्राणनाथ" एक ही व्यक्ति के नाम है। किरंतन पदावली में संग्रहीत 125, 127, 128, 129, 130, 131, 133, कुल 7 प्रकरणों में मेहेराज की छाप है अन्तिम 6 प्रकरण गुजराती 133 प्रकरण सिन्धी भाषा में है इन्द्रावती की छाप 1,43, 44, 45, 46 प्रकरणों में मिलती है। प्रकरण 72 में छत्ता, या छत्रसाल की छाप है प्रकरण 76 और 94 में प्राणनाथ, पुरुषोत्तम परमात्मा के लिए सम्बोधन है श्री देवचन्द्र में पुनः मेहेराज ठाकुर में परमात्मा के स्वरूप एवं बुद्धि अवतरण

के कारण इन्हें प्राणनाथ कहा गया है।

किरंतन पदावली में अधिकांश प्रकरणों में महामति की ही भणिता है अतएव किरंतन के प्रणेता को महामति प्राणनाथ की संज्ञा से संबोधित करना ही ठीक है। किरंतन की रचना संग्रहित पदों में एक ही समय में नहीं हुई। महामति जब अपने आध्यात्मिक आवेश में होते तभी इन पदों का अवतरण होता था। इन पदों की रचना का आरम्भ जब यह जामनगर बन्दीगृह में थे तभी से आरम्भ होता है इस लिए संवद् 1708 सन् 1651 ई0 में महामति वाणी अवतरण का आरंभ माना जाता है। "किरंतन" के पदों के अवतरण के निश्चित प्रमाण दीपबंदर संवद् 1722 सन् 1665 में मिलते है किरंतन ग्रन्थ के अनेक प्रकरणों का अवतरण यहीं हुआ। किरंतन में संवत 1722 (सन् 1665 ई0 से सं0 1751 (सन् 1694) तक अवतरित किरंतनों या पदों का संग्रह है।

किरंतन पदों की रचना भिन्न भिन्न स्थानों और नगरों में हुई। दीपबंदर (द्वयु नगर), ठट्टानगर, मसकत, अब्बासी, जामनगर, सूरत, मेड़ता, मंदसौर, दिल्ली, हरिद्वार, वृन्दावन, उदयपुर और चित्रकूट प्रमुख है। प्रत्येक पद की रचना काल, रचना स्थान कुछ विशिष्ट नगरों में प्रसिद्ध है।

वर्ण्य विषय :--

भारत की राजनीतिक आर्थिक सामाजिक धार्मिक तथा भाषा-साहित्य से संबंधित विषय समस्याओं के समाधान तथा राष्ट्रीय संस्कृति के नव निर्माण हेतु सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में जो भक्ति-आन्दोलन आरम्भ

हुआ था उसका स्वरूप महामति प्राणनाथ के जीवन वृत्त, व्यक्तित्व एवं वाणी साहित्य में स्पष्ट होकर चरम बिन्दु तक पहुंच जाता है।

प्राणनाथ के 10 लाख अनुयायी आज पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, गुजरात, आसाम, नेपाल आदि प्रदेशों में बिखरे है, प्राणनाथ कहते है कि पुरुषों में एक ही ब्रह्म तेज का स्वरूप है केवल देश, भेद या युग भेद या भाषा भेद से वह भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है।

गोरख, बाबा फरीद, रामानुज, रामानंद, वल्लभाचार्य- कबीर, नानक, तुलसी सूर, नरसी मेहता, दादू, मीरा बाई आदि संत भक्त कवियों और आचार्यों की समन्वयात्मक संस्कृति एवं भक्ति धारा में महामति प्राणनाथ के महान जागनी आन्दोलन का एक विशिष्ट स्थान है।

महामति प्राणनाथ की वाणी जहाँ एक ओर आध्यात्मिक जीवन से संबंधित मानव को व्यापक तथा उदारवादी विश्व धर्म का गंभीर दर्शन, उच्च नैतिकता तथा रस मग्न कर देने वाली प्रेम-लक्षणा भक्ति का संदेश देती है।-- वही दूसरी ओर लौकिक जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित सामाजिक विषमता - जाति-पाति- छुआछूत की भावना पर आधारित भेदभाव को दूर करके सामाजिक समानता का संदेश देती है।

वर्ण्य विषय की- दृष्टि से "किरंतन" में धर्म, दर्शन- नैतिकता, भक्ति समाज सुधार और राष्ट्रीयता से संबंधित विषयों का काव्यात्मक चित्रण है। जिनमें पुनुक्त: उपनिषद् गीता- भागवत पर आधारित व्यापक हिन्दू धर्म का विवेचन है और वाह्याडम्बर एवं कर्मकाण्ड की उपेक्षा। हिन्दू और

मुसलमान धर्म भी मूल एकता तथा मूल उपासना पद्धति का चित्रण है।

काव्य कल्पना : --

भक्ति काल में (1200 ई० - 1800 ई०) के संत भक्तों में से किसी ने भी कवि होने का दावा नहीं किया। कबीर ने "मसि कागज नहीं छुआ", फिर भी प्रेम का "ढाई अक्षर" उनके अन्त:करण में समा गया प्रेममय भक्ति से उनका अन्त:करण इतना भर गया कि उसकी छलकन मात्र से कबीर महाकवि हो गये।

तुलसी ने राम भक्ति का ऐसा चित्रण किया कि काव्य और भक्ति का अनुपम संगम हो गया। महामति प्राणनाथ कहते है कि व्याकरण एवं अलंकार आदि से मैं अनभिज्ञ नहीं हूँ - परन्तु मेरा उद्देश्य कविता करने का और कवि बनने का नहीं है, मुझे तो अपने श्री धाम धनी, अक्षरातीत श्री कृष्ण के गुणानुवाद करना है महामति प्राणनाथ के धनी, श्री कृष्ण प्रेममय, रसेश्वर है, रस सागर है। यही कारण है कि उनका चित्रण करने में महामति प्राणनाथ के वाणी साहित्य में सहज ही काव्य तत्व समाहित हो गया है। इसी से भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक जगत् के वाह्य दृश्य, आन्तरिक भाव-विचार तथा आध्यात्मिक ब्रह्म-ज्ञान और ब्रह्मानुभूति के वर्णन में उनकी कल्पना सहज ही काव्यमयी हो गयी।

महामति का कथन है पहले आप को पहचानो फिर बिना श्रम के स्थूल जगत् महल का रहस्य ज्ञात होगा। अपना स्थायी घर, परमधाम मिल जाएगा। इसका उत्तर देते हुए महामति कहते है --

" जब अन्तर में पार ब्रह्म का अनुभव करोगे तभी अपनी पहचान होगी ।"

की० 2/1-5

"किरंतन" के विभिन्न प्रकरणों में हमें अक्षरातीत कृष्ण की प्रेम लक्षणा भक्ति मधुर आकर्षण और सरस काव्य का स्वरूप सहज ही मिल जाता है अतः किरंतन ग्रन्थ की वाणी काव्य रस से परिपूर्ण है।

रस : --

प्राणनाथ की वाणी को जोश वाणी कही जाती है जब वह आध्यात्मिक मुद्रा में होते थे तभी उनकी वाणी को उनके शिष्य लोग लिख लेते थे और उस समय उनकी आत्मा माधुर्य भाव प्रेमानुभूति को व्यक्त करती थी। प्राणनाथ अपनी निजी अनुभूति को अपने प्रियतम या धामधनी के प्रति समर्पित करते हैं। उन स्थलों में भक्तिरस या शृंगार रस से काव्य आपूर्ण है। संदेश-वाणी से युक्त काव्य में शान्त रस का चित्रण है राष्ट्रभूमि से सम्बन्धित कविता में वीररस का चित्रण मिलता है इस प्रकार से भक्ति, शृंगार रस, वीर रस और शान्त रस की प्रधानता है।

भारतीय काव्य शास्त्र के आचार्यों ने काव्य में 10 रसों की परिगणना की है।

1- शृंगार रस

2- हास्य

3- करुण

4- रौद्र

5- वीर

6- भय

7- वीभत्स

8- अद्भुत

9- शान्त

10- वात्सल्य

तथा इसके विवेचन करने वाले भक्ति रसामृत सिन्धु के रचयिता रूप गोस्वामी तथा उज्ज्वल नील मणि के रचयिता जीव गोस्वामी ने भक्ति रस को ग्यारहवाँ रस माना है। महामति प्राणनाथ प्रणीत किरंतन पदावली में शान्त, वीर, अद्भुत वात्सल्य तथा भक्ति रस (श्रृंगार) का सफल चित्रण हुआ है। शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद या वैराग्य है। प्राणनाथ की वाणी आध्यात्मिक होने के कारण भक्त लोग उसी ओर उन्मुख हो जाते है।

जीव और शरीर का निकटतम सम्बन्ध है। जीव के लिए शरीर ही मोह का सांसारिक सम्बन्धों का केन्द्र बिन्दु है सांसारिक बन्धन पहले शीतल सुख का लोभ दिखाते है फिर ज्वाला में जलाते है। इसी नश्वरता का चित्रण करते हुए कहते है महामति --

" रे जीव जी, जिन करो यासों नेहड़ा"

(कि० 34/1)

सद्गुरु, अक्षरातीत परब्रह्म, प्रेम का संबंध जोड़ता है तब बन्धनों में डालने वाला शरीर ही साधना के लिए सहायक बन जाता है।

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है यह चार प्रकार का होता है:--

1) युद्धवीर (2) धर्म वीर (3) दान वीर (4) दयावीर
महामति प्राणनाथ की "किरंतन" पदावली में युद्धवीर एवं धर्मवीर का सफल चित्रण हुआ है।

भक्तिरस (श्रृंगार रस) धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर के प्रति अनुरक्ति को भक्ति की संज्ञा दी गई है श्रीमद्भागवत गीता में ज्ञान योग, कर्म योग के साथ साथ 12वें अध्याय में भक्ति योग का विवेचन है। भक्ति की 9 भूमिकाएं मानी गई है जिसे नवधा भक्ति कहते हैं।

वात्सल्य रस :--

महामति प्राणनाथ मधुर भक्ति या दाम्पत्य भाव के उपासक थे, जिसमें पति-पत्नी भाव से ही उपासना होती है इस लिए किरंतन के अधिकांश पद भक्तिरस या श्रृंगार रस मूलक हैं।

"किरंतन" में कुछ पद वात्सल्य रस से भी संबंधित हैं जिनमें कृष्ण जन्म का वर्णन है वैसे भक्तिरस की प्रधानता है।

अलंकार :--

"किरंतन" में अर्थालंकारों की ही प्रधानता है और उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, व्यतिरेक आदि अलंकारों का सफल चित्रण है। सांग रूपक के द्वारा भवजल या संसार- सागर का सजीव चित्रण किया गया है। "किरंतन" में विरोधाभास अलंकार के अनेक उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं संसार रूपी बिन्दु में परमात्मा रूपी सिंधु समाया है।

"बिंद में सिंध समाया रे साधो ।"

विभावना :—

संसार में माया की आग जल रही है और बिना रूई, बिना बाती, बिना तेल के माया का दीपक जल रहा है विभावना अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण——

" ऐ सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती-तेल ।
पृ० 7/1 किरंतन

व्यतिरेक :—

व्यतिरेक अलंकार के द्वारा महामति प्राणनाथ स्वयं को संसार के सभी पापियों से आगे बढ़ा हुआ बताते हुए कहते है:—

" पतित सिरोमन यों कहे ।"
पृ016/5 कि0

अनुप्रास :—

महामति प्राणनाथ ने भी अनुप्रास के द्वारा शब्दात्मक या ध्वन्यात्मक चमत्कार उत्पन्न किया है।

किरंतन में वही अलंकार मिलते है जो अनुभूति को अधिक प्रभावोत्पादक बना देने में समर्थ हैं।

छंद विधान :—

छंद काव्य का शरीर है वर्ण या मात्रा, तुक, यति आदि छंद के शरीर हैं इन्हीं से भाषा में लय या गति उत्पन्न की जाती है अतएव छंद की आत्मा लय या यति है।

महामति प्राणनाथ प्रणीत कुलजम स्वरूप में विविध छंदों का प्रयोग

नहीं मिलता है ग्रन्थ के 15 ग्रन्थों में अधिकांशत: चौपाई छन्द प्रयुक्त हुआ है। महामति प्राणनाथ संगीत विद्या में भी निपुण थे। "कीर्तन" में संगीत और काव्य का रसमय समन्वय हो गया है।

भाषा:--

वैज्ञानिक विवेचन करने में ज्ञात होता है इसका आधार भी वही भाषा है जिसे खड़ी बोली कहते है यही भाषा उस युग में राष्ट्रभाषा थी इसी भाषा को कबीर, दादू, नानक5 रैदास आदि संत कवियों ने लिया था। महामति की हिन्दी में खड़ी बोली के तत्व अन्य प्राचीन संत कवियों की अपेक्षा अधिक मिलते है उनकी भाषा उस युग की प्रतिनिधि राष्ट्रभाषा हिन्दी है इसका मुलाधार खड़ी बोली है जिसमें अन्य बोलियों का प्रचुर मिश्रण है और जो नागरी लिपि में लिखी जाती थी इसी लिए "कीर्तन" के पदों में ब्रजभाषा का मिश्रण भी पर्याप्त रूप से मिलता है।

शब्द कोश :--

हिन्दू धर्म के विवेचन में अधिकांशत: संस्कृत के तत्सम शब्द आए हैं किन्तु उनका उच्चारण तद्भव ही है। इस्लाम और ईसाई धर्मों के विवेचन में फारसी अरबी शब्दों का प्रचुर प्रयोग कीर्तन में भी मिलता है लेकिन यह सब प्रकार से हिन्दी या हिन्दुस्तानी या हिन्दवी है इसमें उर्दू शैली की फारसीतत्समता नहीं है।

शैली तत्व:--

महामति ने सामान्य भाषा का प्रयोग काव्य में किया है साहित्यिक स्वरूप में भाषा शैली का रूप मिलता है इनकी शैली में लक्षणा और

व्यंजना का अभाव नहीं है प्रतीकात्मक या लाक्षणिक रूप का प्रयोग है जैसे :-
घर अपरनधाम । महल= ब्रह्मांड, नींद=माया

"किरंतन" पदावली का हिन्दी काव्य जगत में स्थान :--

"किरंतन" पदावली में काव्य की दृष्टि से छन्द एवं काव्य का समन्वय समन्वय हुआ है प्राणनाथ में काव्यतत्व अधिक व्यापकता, अधिक सजीवता से विश्रित है"किरंतन" पदावली में निर्गुण, संतमत, कृष्ण भक्ति, सूफी साधना सबको समाहित कर सर्व-धर्म-समभाव या हिन्दू-और मुसलमान धर्म के समन्वय समन्वय करने की काव्य साधना प्रतिफलित है।

महामति प्राणनाथ की किरंतन पदावली में ज्ञान-कर्म-भक्ति का समन्वय संगम हुआ है। जागनी आन्दोलन के माध्यम से लोक या समाज की आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ समाज की अन्य समस्याओं या विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। प्राणनाथ के अनुयायी केवल व्यक्तिगत मोक्ष पर विश्वास नहीं करते। यह बिना "साथ" के मुक्ति भी नहीं चाहते। महामति का संदेश है कि "परमधाम" की साधना या "तारतम्य की साधना" केवल भरतखंड में ही नहीं, अपितु समूचे ब्रह्मांड में प्रसारित होनी चाहिए। वे स्वयं कहते है। मेरी एक दृष्टि धनी की ओर है तो दूजी "साथ" की ओर है। विश्व की वह समस्त मानवता को अपना "साथ" बनाने का प्रेम मय संदेश देते हैं "किरंतन" के करीब 10 प्रकरणों में "साथ" को चेतावनी दी गई है। ज्ञान भक्ति के साथ-साथ कर्मयोग का यह स्वरूप दर्शन उन्हें मध्ययुग के अन्य संतों से अधिक व्यापकता प्रदान करता है।

औरंगजेब जैसे धर्मान्ध एवं कट्टर मुसलमान सम्राट के युग में अवतरित होकर महामति उस युग की धार्मिक राजनीतिक-सामाजिक -आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है हिन्दू धर्म-मुसलमान धर्म की एकता का संदेश देश के सारे राजाओं, सारे जनमत को जगाकर उसकी अराष्ट्रीय संकीर्ण नीति का सामना करने के लिए ललकारते हैं किरंतन के अनेक प्रकरण इस महान प्रयास के उद्देश्य को लेकर अवतरित हुए हैं।

औरंगजेब का सामना करना- आग से खेलने की भाँति था। महामति प्राणनाथ उससे अधिक व्यापक राष्ट्रीयता की आग को प्रज्वलित करके उसकी संकीर्णता की आग को बुझाने का प्रयास करते हैं। इस महान राष्ट्रीय प्रयास में समस्त हिन्दी साहित्य जगत में वे अद्वितीय हैं।

काव्य- कथ्य एवं काव्य शिल्प की समग्रता की दृष्टि से प्रणामी धर्म और प्रणामी काव्य अथवा मध्यकाल की समन्वयी भक्तिधारा के प्रवर्तक आचार्य एवं कवि के रूप में महामति प्राणनाथ का स्थान हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है।

खुलासा ग्रन्थ :--

खुलासा अरबी शब्द है इसमें कुरान का स्पष्ट रूप तथा धार्मिक वैमनस्य को दूर करने का यत्न किया है इसमें 1020 चौपाइयाँ है और माया, ब्रह्म, जीव आदि का विवेचन किया है विश्व शान्ति तथा विश्व स्थापना का इसमें सरल मार्ग है। सभी धर्म हिन्दू, इस्लाम, ईसाई सभी का उद्देश्य परम प्रेमास को प्राप्त करना है ~~और को स्वामी~~ उसके चित्रण में महामति प्राणनाथ ने समन्वय का स्पष्टीकरण किया है। खुलासा में मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) परमात्मा से प्रेम करते हैं।

"मोमिन दुनी एही तफावत, ज्यों खेल और देखनहार ।
मोमिन असल हक वाहिदत, दुनियाँ असल कुफार ।।"

जिस समय प्रलय या महाप्रलय या तूफान आता है तो उस समय जो मानव धर्म से हट जाते हैं वही ईश्वरीय कोप का कारण बनते हैं और वही बचता है जो मानव धर्म से नहीं हटता। उसी रास्ते पर चलने वाले को मोमिन (ब्रह्म-सृष्टि) है उसी को नाजी फिरका कहा है इसमें परमधाम की स्मृति दिलाते हुए श्री प्राणनाथ कहते है कि वहाँ तो ज्ञान का सागर भरे हैं, ज्ञान के समान उनके प्रेम सागर है। खुलासा में मुसलमानों को उनका धर्म बताया गया है।

खिलवत ग्रन्थ :--

खिलवत का अर्थ है एकान्त। इसमें ~~स्वामी जी~~ महामति ने एकान्त मिलन बातों का वर्णन किया है इसमें संसार की असारता तथा अपने प्रियतम की महानता को

पहचान किया है इसमें परमधाम की लीला का संक्षिप्त वर्णन है खिलवत की 1074 चौ0 में परमात्मा से वार्तालाप का परिचय दिया है। खिलवत में सबसे महत्त्वपूर्ण वर्णन उसकी (परमात्मा) शक्ति तथा इसे दूर करने के उपाय तथा जीवन की व्यथा का वर्णन है। ज्ञान प्राप्त होने पर अहंकार की समाप्ति और अहंकार से मुक्त होने पर अनन्त ज्ञान पा लेना ब्रह्मज्ञान है। धर्म के रहस्य को खोलना तथा ब्रह्मज्ञान के महत्त्व को बताना महामति प्राणनाथ ने इसी खिलवत ग्रन्थ में दर्शाया है।

परिक्रमा ग्रन्थ परिचय :--

परिक्रमा अर्थात परमधाम में अक्षरातीत। इसमें परमधाम का सुन्दर वर्णन है तथा इसमें प्राणनाथ ने प्रेम को दर्शाया है प्रेम के द्वारा प्रियतम को मिलन तथा परमधाम तक पहुंचने का मार्ग प्रेम ही है। जो लोग परमधाम को नहीं समझ पाये उनके स्वरूप को निराकार ब्रह्म ही मान लिया है ऐसे लोगों की अज्ञानता को मिटाना तथा उनके संकेतों को स्पष्ट किया है ~~स्वामी जी~~ महामति ने। महामति ने परमधाम का वर्णन करते हुए इस बात की स्पष्टीकरण किया है अपार शोभा का समूह वह ज्योति पुंज मार्ग नहीं है उनकी एक शक्ति माया का विस्तार यह विश्व जब इतना सुन्दर है तो उनके धाम के सौन्दर्य का कहना ही क्या। परमधाम के महत्त्व का वर्णन रंगमहल, अक्षरधाम बाहर-भीतर आदि का वर्णन किया गया है।

सागर ग्रन्थ :--

सागर अर्थात् 8 सागर बह कर "सागर" किताब लिखी गई है इसमें परमधाम में अक्षरातीत ब्रह्म का प्रेम, स्वभाव, गुण, ज्ञान, श्रृंगार इन सब का वर्णन

तथा सम्बन्ध को बताया है। सागर में 1128 चौ० है।

इसमें प्रथम सागर

द्वितीय सागर

रूहों की एक दिली

चौथा सागर अक्षरातीत

पांचवां सागर अक्षरातीत

जुदाई इश्क-ब्रह्मज्ञान

परमात्मा और रूहों का अटूट सम्बन्ध

मेहर का सागर

इसी तरह आगे सागर में भाव और दिल को प्रेम के सूत्र में बांध दिया है

सिनगार ग्रंथ :—

सिनगार अर्थात श्रृंगार। इसमें अक्षरातीत परमात्मा के स्वरूप, शोभा और साज सज्जा का वर्णन मिलता है अक्षरातीत के स्वरूप का वर्णन इसमें महामति ने किया है और प्राणनाथ जी कहते है यह काम मैंने परमात्मा की आज्ञा से किया है, परमात्मा के शरीर को महामति ने नूरी का शरीर बताया है। माया केवल आकर्षक करती है और लोगों को भटका देती है जो कि ब्रह्मज्ञान से ही छुटकारा मिल सकता है इसमें प्रेम की आवश्यकता है और इसी से मुक्ति मिल सकती है।

सिन्धी ग्रन्थ :—

सिन्धी भाषा में लिखा होने के कारण इसका नाम सिन्धी पड़ा। महामति प्राणनाथ के माता-पिता सिन्धी और कच्छ के उस भूभाग में थे जहाँ

सिन्धी और कच्छी दोनों भाषाएं प्रचलित थी इसी लिए दोनों भाषाओं पर उनका अधिकार था। वाणी का आरम्भ गुजराती और कच्छी भाषा में हुआ। इस सिन्धी ग्रन्थ में 600 चौ० है इसमें अपने अधिकारों को पा लेने की दिल की चाह का वर्णन है उसमें जितने भी उपदेश दिए सब अपने ऊपर ले कर किया है। इसमें परनधान में जाकर तथा प्रेम के साथ प्रियतम से मिलो यही भाव इस सिन्धी ग्रन्थ में शुरु होता है इसमें महामति की आत्मा की तड़प, मन की प्यास और अपनी अधिकार पूर्ण मांग प्रतिबिम्बित हो उठी है गोपनीय रहस्य मयी वाणी है आवेश में वाणी अवतरित होती थी तो शिष्यगण उसे लिख लेते थे फिर नागरी लिपि में वर्ण और मात्राएं जोड़े बिना लिखा गया इस लिए उच्चारण में कहीं भिन्नता दिखाई देती है थोड़ा प्रयास करने पर आधुनिक सिंधी भाषा से भी इसका अच्छा स्वरुप दिखाई देने लगा। आज भी सिंधी भाषा को नागरी लिपि में लिखने के प्रयास हो रहे हैं।

मारफत सागर :--

अध्यात्म की सबसे ऊँची अवस्था का नाम है कुरान में शरीयत, तरीकत, हकीकत मारिफत मानव द्वारा पाई जा सकने वाली चार अवस्थाएं कही गई हैं। हिन्दु धर्म ग्रन्थों में वेद को कर्मकांड, उपासना, ज्ञान और पहचान हो जाने पर प्रेम का नाम दिया है। जिस प्रकार "प्रकाश" ग्रन्थ में लीला वर्णन है उसी प्रकार इसमें कुरान का वर्णन किया गया है कुरान में तीन प्रकार का वर्णन है जीव सृष्टि दूसरा ईश्वरीय सृष्टि तीसरा ब्रह्म सृष्टि । इन धर्मग्रन्थों को समझ लेने पर ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। अब तक कर्मकांड को ही धर्म माना जाता रहा लेकिन

ग्रन्थों के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति पर परमात्मा की पहचान प्रेम के द्वारा आत्मा जगा कर मिलेगा ब्रह्मात्माओं को परमधाम ले जाने के लिए प्रेम संदेश है।

क़ियामत नामा छोटा :—

इसमें चौपाई कम होने के कारण इसे छोटा क़ियामत नामा कहा गया। तारतम वाणी में क्यामतनामा दो है। क़ियाम का अर्थ उठ कर सिजदः में खड़े होना है इसकी अभिनव व्याख्या है।

इसमें यह बताया गया है कि आत्माएं ब्रह्म का अंग है जीव माया के रचे हुए है इनमें प्रकाश और अन्धकार जैसा अन्तर है। परन्तु ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म की ओर सहज आकृष्ट रहती है पैगम्बरी आचरण पर प्रकाश डाला गया है इसमें गुप्त रहस्य को खोला गया है। उपदेश वाणी को सुन कर आत्मा जाग्रत करने का वर्णन है यह शरीर यह मन, परमात्मा तक नहीं पहुंचता, नश्वर तन में ही परमधाम के अंगों सा बल मिलता है।

बड़ा क्यामत नामा :—

इसमें चौपाई छोटा क्यामत से ज्यादा होने के कारण इसे बड़ा कहा गया है इसका अर्थ चिट्ठी या संदेश होता है इस ग्रन्थ में मोमिनो के नाम परमात्मा का संदेश है। इसमें महामति ने बड़े क्यामत नामा में क़ियामत का संदेश छत्रसाल के नाम से दिया है। आडम्बरों और कर्मकाण्डों को मुक्त करके सत्य मार्ग को दिखाया है यह ग्रन्थ चित्रकूट में अवतरित हुआ। सभी धर्मों के प्रति सद्भाव एवं कुरान के रहस्यों की पहचान कराई गई है। इस ग्रन्थ में

53। चौपाइयाँ हैं। महामति प्राणनाथ ने इस ग्रन्थ के द्वारा कुरान के गूढ़ अर्थों को स्पष्ट किया है।

इस प्रकार वेद के अन्तिम ग्रन्थ "रास" से आरम्भ होकर कतेब की आखरी मंजिल कियामत पर महामति की वाणी समाप्त हुई। सभी धर्म ग्रन्थों के सत्य ज्ञान, मारिफत के संकेतों को एक करके महामति ने एक विश्व धर्म का दर्शन संसार को दिया।

अध्याय 3

दार्शनिक अनुशीलन

दार्शनिक अनुशीलन

महामति प्राणनाथ प्रमुखतः एक संत (भक्त), धर्म प्रचारक, समाज सुधारक, आदर्श राजनीतिज्ञ, व्याख्याता एवं राष्ट्र भाषा समर्थक कवि है। औपचारिक रूप से किसी विशेष दार्शनिक पद्धति को लेकर व नहीं चले। फिर भी जीवन-जगत तथा पारमार्थिक जीवन के प्रति उनका एक गम्भीर दृष्टि-कोण रहा है। सर्व-धर्म-समभाव, सर्व जाति समभाव, सर्व समाज समभाव, सर्व भाषा समभाव का संदेश देनेवाली उनकी जागनी लीला के पीछे उनका एक मौलिक दर्शन निहित है।

"कुलजम स्वरूप" का विश्लेषण करने से उनके मूल आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं भाषा सम्बंधी दार्शनिक विचारों का पता चल जाता है। प्रस्तुत अध्याय में हम कीरतन पदावली के आधार उनके मूलदर्शन का विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे। अपने युग की किसी विशेष दार्शनिक धारा से न जुड़कर वे अपने युग में प्रचलित अनेकानेक दार्शनिक धाराओं में समन्वय प्रस्तुत करते हैं। हिन्दू (वैष्णव, शैव-शाक्त, बौद्ध-जैन) दर्शन तथा इस्लाम और ईसाई सभी दार्शनिक पद्धतियों को स्पर्श करते हुए वे एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं और विश्वधर्म, विश्व संस्कृति एवं विश्व मान्यता का नया दार्शनिक संदेश देते है।

महामति प्राणनाथ का आयाम जितना व्यापक , उतना ही गम्भीर है। उनके दार्शनिक विचारों को समग्रतः से जानने के लिए "कुलजम स्वरूप" में संगृहीत सभी 15 ग्रंथों का विश्लेषण आवश्यक है। कीरतन पदावली में

उनके गेय पद संग्रहीत हैं। इसमें प्रमुखतः एक संत का हृदय की भावुकता एवं जागनी आन्दोलन का चिंतनात्मक पक्ष के दर्शन होते है। इस प्रकार इसमें मुख्यतः उनके आध्यात्मिक दर्शन का स्वरूप अधिक व्यक्त हुआ है। सामाजिक राजनीतिक पक्ष का दार्शनिक चिंतन अपेक्षाकृत कम है।

परम सत्ता या ब्रह्म

अक्षरातीत ब्रह्म से अनन्त अनेक अक्षर ब्रह्म है। सृष्टि परम सत्ता पर आधारित है। और यह कल्पना द्वारा रची गयी है जिसमें ब्रह्मादि भी नश्वर है।

अतः महामति प्राणनाथ ने आत्मिक शुद्धता पर बल दिया और कहा कि पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की ही जाति है वही एक ब्रह्म है सत्य है सम्पूर्ण सृष्टि उसी की है किसी एक विशेष का पूर्ण ब्रह्म नहीं है चाहे वह किसी जाति का हो।

क्षर ———> अक्षर ———> अक्षरातीत ———> परब्रह्म

क्षर = अर्थात् (नश्वर जगत) निर्गुण ब्रह्म ((चेतना (ब्रह्म नीचे (

अक्षरातीत= उसको ही गीता में पुरुषोत्तम कहा गया है यह क्षर तथा अक्षर मिला के बना है अर्थात् सूक्ष्म और स्थूल मिल कर सगुण और निर्गुण परब्रह्म इन्हीं को अपने-अपने मानने वाले पर ब्रह्म के नाम अलग-अलग (मानते) होते है। महामति ने इनका नाम श्रीकृष्ण दिया है। महामति प्राणनाथ के सद्गुरु

ब्रह्मानन्द है पूर्णब्रह्म परमात्मा की आनन्द अंग श्याम जी – श्री देवचन्द्र जी के रूप में हुए। और उनके अनुसार सत्, चित् और आनन्द का रूप (सच्चिदानन्द ब्रह्म) ही अनन्त और मूल सत्य है। दार्शनिक रूप से यह कहा जा सकता है कि आत्मा में परमात्मा का अंश होता है और अंग का बोध हो जाने पर, उसके रूप ज्ञात हो जाने पर परमात्मा का बोध होता है।

कोई कहे ब्रह्म आतम, कोई कहे पर आतम ।

कोई कहे सोहँ सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम ।। प्र०कि०प्र०29/

कोई कहता है आत्मा ब्रह्म है। कोई कहता है परात्म ब्रह्म स्वरूप है कोई कहता है कि सोऽहं शब्द ही ब्रह्म है। इस प्रकार अनिवार्य सत्ता होते हुए भी ब्रह्म सबके लिए अगम्य हो गया है।

कोई कहे सब ब्रह्म, रहत सबन में व्याप ।

कोई कहे ए सबे छाया, नहीं यामें आप ।।

प्र०कि०प्र० 29/4

कई विद्वानों का मत है कि सब ब्रह्म ही है। ब्रह्म सबमें व्याप्त है लेकिन कई विद्वान कहते हैं कि यह सब छाया है, ब्रह्म इसमें नहीं है।

कोई कहे ओ सदासिव, और न कोई देव ।

कोई कहे आद नारायन, करत कमला जाकी सेव ।।

प्र०कि०प्र० 29/8

कोई कहते हैं, वह सदाशिव है इसके अतिरिक्त दूसरा कोई देव ही नहीं, कोई कहते हैं वह आदि नारायण है, जिनकी सेवा में कमला उपस्थित है।

इसी तरह सब विद्वानों ने अपना-अपना मत दिया है पर महामति प्राणनाथ कहते हैं ।

> सनंधे बिना कछु पारको नाहीं, जो उदम करो कै लाख ।
> तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लगें अंदर न देवे साख ।।
>
> म०कि०ग्र० 29/16

चाहे कोई लाख उपाय क्यों न कर लें, परम तत्व की सनंधे बिना पार का कुछ नहीं मिलता। जब तक अंतरात्मा साक्षी नहीं देती, तब तक पूरा प्रेम नहीं उपजता।

> पार ब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेश्वर कहावें ।
> अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे और सब कोई सास्त्र बोलावें ।।
>
> म०कि०ग्र० 7/7

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा तो एक है। परन्तु इस माया में अनेकानेक जीव परमेश्वर कहला रहे हैं। अनेक पंथ चल पड़े हैं। अलग-अलग शब्द प्रचलित हो गए हैं, जो अपने-अपने शास्त्रों की दुहाई देते हैं। महामति कहते हैं:—

> देख देखाई तत्व पाँचों, मिल रच्यो ब्रह्माण्ड ।।
> जिनसे उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पाले पिण्ड ।।

ये ही पाँच तत्व सर्वत्र दिखाई देते हैं, जिनसे यह संसार रचा गया है। और पाँच तत्व जिससे उत्पन्न हुए, वह मूलतः कुछ नहीं, अर्थात् शून्य है इसका अपना कोई आकार नहीं है।

महामति प्राणनाथ कहते है कि ब्रह्म क्या है उसके बताते हुये कहते है कि ब्रह्म की संसार एक प्रतिछाया है।

> कोई कहे ए ब्रह्म की आभा, आभा तो आपही भासे ।
> तो ए आभा क्यों कहिए, जो होत है झूठे तमासे ।।
>
> प्र०कि०प्र० 30/4

यह संसार ब्रह्म की एक प्रतिछाया है और वह छाया तो यथार्थ जैसी दिखती है जो कुछ संसार में हो रहा है वह झूठा खेल है उसे सत्य चित्त का प्रति बिम्ब कैसे कहा जाय।

> जाको पेड़ प्रतिबिंब प्रकृति, पांच तत्वकी को आकार।
> तामें खेले निरगुन व्यापक, लिए मायामोह अहंकार ।।
>
> प्र०कि०प्र० 31/2

इस जगत का मूल, प्रकृति में पड़ने वाला, ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है। पाँच तत्वों ने इसे आकार दिया। इसमें व्याप्त होकर निर्गुण ब्रह्म मोह अहंकार को लेकर खेल रहा है।

महामति प्राणनाथ ने ब्रह्म, जगत, जीव, मुक्ति, साधना आदि क्रम से अपने दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया। उन्होंने सारी अलौकिक सत्ता और उसके प्रसार को तीन भूमियों में अन्तर्गत रखा है {1} अक्षर भूमि {2} बेहद भूमि {3} हदभूमि,अक्षर भूमि के अधिपति सच्चिदानन्द ब्रह्म है। इस सच्चिदानन्द को पूर्ण ब्रह्म भी कहा गया है- क्योंकि ये सत्,चित् और आनन्द के पूर्ण विकसित रूप है। सत् चैतन्य और आनन्द तत्व प्रत्येक जीव में है तो सही, पर आंशिक रूप में ही, पूर्ण रूप में नहीं।

"पूर्ण ब्रह्म" (अक्षर) अक्षर से परे या अतीत है। इस लिए तो इसे अक्षरातीत भी कहते है। अतः महामति प्राणनाथ कहते है कि —

> महामत होसी सब जाहेर, मिले अक्षरातीत भरतार ।
>
> बेराट होसी नेहेचल, उड़यो माया मोह अहंकार ।।

म०कि०ग्र० 31/15

जब अक्षरातीत स्वामी मिलेंगे तो सब कुछ ज्ञात हो जायेगा। माया, मोह एवं अहंकार के पर्दे तो उड़ जायेंगे, परन्तु यह ब्रह्माण्ड (जिसमें ब्रह्म सृष्टि का पदार्पण हुआ) अक्षर ब्रह्म के हृदय में सदैव के लिए अंकित हो जाने से अखंड हो जायेगा।

परमात्मा या ब्रह्म के नाम

> जीव विस्नु महा विस्नु लों, याके के विध नाम धरत ।
>
> अग्यान ग्यान ने विग्यान, यों के विध खेल खेलत ।।

म०कि०ग्र० 107/5

सांसारिक बुद्धि से उत्पन्न जीव, विष्णु और महाविष्णु तीनों कई नामों से ब्याप्त अनेक प्रकार से विस्तृत हैं। उन्हीं शब्दों का अज्ञान, ज्ञान एवं विज्ञान के रूप में विभाजित करके ज्ञानी कहलानेवाले कई प्रकार के खेल रचाये बैठे हैं।

धर्म ग्रन्थों में अलग-अलग नामों से ब्रह्म की प्रशंसा की गई है

> याही विध गिरोह के, नाम लिखे अनेक ।
>
> जुदे जुदे नामों पर लिखत, पर गिरो एक की एक।।

प०ग्र० 121/6

इसी प्रकार संसार के समस्त धर्म ग्रन्थों में मोमिन, ब्रह्मसृष्टि के नाम अनेक तरह से लिए गए है। और उनकी अलग अलग नामों से प्रशंसा की गई है। वह चाहे किसी वर्ग या सम्प्रदाय के हो समस्त ब्रह्मसृष्टि- मोमिनों का सम्प्रदाय वस्तुत: एक ही है।

गौस कुतुब पैगम्बर, औलिए अंबिए के नाम ।
ताए के लिख दे कुदरतियां, साहेब के समान ।।

म०वि०पु० 121/4

कतेब ग्रन्थों के मुताबिक करने वाले ही गौस कुतुब-विद्वान एवं पैगम्बर आये और औलिये, पीर, अंबिये आदि उपाधियों से प्रसिद्ध हो गये। इन सब लोगों ने ईश्वर जैसी ही प्रतिष्ठा दी।

सो सिफत सब महम्मद की, जो महम्मद कह्या जो स्याम ।
अवल आखर दोऊ दीन में, एही कुरान महम्मद नाम ।।

म०वि०पु० 121/5

इन सब महानुभावों को प्राप्त सारी प्रशंसा उस मुहम्मद की है, जिसे श्याम कहा गया। आदि से अन्त तक इन दोनों धर्मों में अन्तिम युग में आने वाले मुहम्मद मेंहदी — जिसको कुछ श्रेष्ठ नाम दिया गया है।

एक अनेक सब इनमें, सत साँच कुछ विस्तार।
अक्षर ब्रह्म क्यों पावही, भई आही निराकार ।।

म०कि० पु० 107/6

इनमें शब्द श्रीकृष्ण के लिए आया है जो महामति प्राणनाथ के उपास्य है और अक्षर ब्रह्म बुद्धि के प्रतीक है।

एक ईश्वर से अनेक द्वैत का सारा पसारा, सत्य और झूठ का विस्त
इसी मिथ्या संसार में है इसके वर्णन को मानने वाले अज्ञानी जन अक्षर ब्रह्म
को भी नहीं पा सके, क्योंकि उनकी राह में निराकार का विस्तार नही
रुकावट बन जाता है।

अहंकारें के चुलम करो, ना त्रास शील सन्तोष ।
गुन अंग इन्द्री के बस परे, ना देखो नजरों दोष ।।

म०कि०पु० 113/12

अहंकारी बन कर दूसरों पर अत्याचार करते हो मन में किसी भय, शील
या सन्तोष नहीं। गुण अंग इन्द्रियों के दास बने हो। अपने दोषों को जो
देखते तक नहीं।

निराकार कासें कहए, कासो कहिए निरंजन ।
क्यों व्यापक क्यों होसी फना, एता न कहया किन ।।

म०कि०पु० 22/6

निराकार किसी कहते है और निरंजन क्या है? कैसे [चेतन] सब में व्याप
है और दृश्य जगत् का नाश कैसे होगा या किसी ने नहीं बताया।

सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाही सुंन
सुध न सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन ।।

म०कि०पु० 65/3

निराकार और शून्य की भी इन्हें जानकारी नहीं होती, काल का स्वरूप
क्या है इसकी भी जानकारी नहीं होती है। और उस निराकार ब्रह्म
का ठोर क्या है।

एह अल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम ।
और महंमद की मेहेर सें, सुध कहूँ माया ब्रह्म ।।

म०कि०प्र० 65/9

श्री श्याम स्वरूप एह अल्ला- श्रीदेवचन्द्र की कृपा से मुझमें इस तारतम ज्ञान प्रकाश हुआ और परमात्मा के हुकम के स्वरूप मुहम्मद की कृपा प्राप्त कर मैं माया और ब्रह्म सत्ता का निर्णय हुआ।

परम सत्ता या ब्रह्म की प्रकृति

प्रकृति -

प्रकृति से तात्पर्य ब्रह्म की शक्ति या माया है। परमात्मा की आज्ञा मात्र से सृष्टि की रचना हुई है तथा इसके प्रलय का उल्लेख वेद शास्त्र तथा कुरान कतेब इत्यादि में परमात्मा की ओर से किया गया है।

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपंन ।
ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूँ न कही किन ।।

म०कि० प्र० 65/6

प्रकृति और उससे उत्पन्न होने वाली सभी वस्तुओं को शास्त्रों ने प्रलय के अंतर्गत नष्ट होने वाला बताया गया है किसी ने कभी भी अद्वैत ब्रह्म की सुधि नहीं ली, और न ही उसके विषय में किसी ने कुछ बताया।

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।

ए और माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की पर आतम ।।

ना०कि०ग्र० 65/10

प्रकृति इस संसार की भाँति अनेक ब्रह्माण्ड उत्पन्न करती है। त्रिगुणात्म तीनों देवों के परात्म स्वरूप और माया की उत्पत्ति का स्थान अक्षर ब्रह्म के अन्तर्गत सबलिक ब्रह्म है।

क्यों लछन है प्रकृति को, क्यों मोह क्यों सुन ।

क्यों लछन जो काल को, ए नेहेचे करी न किन ।।

ना०कि०ग्र० 22/7

प्रकृति का स्वरूप कैसा है और निरंजन क्या है? कैसे मोह उत्पन्न हुआ? शून्य क्या है? काल का स्वरूप क्या है- इस बात को निश्चय पूर्वक किसी ने नहीं बताया।

मूल प्रकृति मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन ।

सो पाँचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन ।।

ना०कि०ग्र० 22/2

मूल प्रकृति, मोह और अहंकार से तीन गुण पैदा हुए। वे सब पाँच तत्वों में विस्तृत हुए। इस प्रकार चौदह लोकों में माया के अंधकार का आवरण छा गया।

परमसत्ता या ब्रह्म का स्वरूप

स्वरूप

यह चिन्मय धाम में अंगी-अंग-अंगना के रूप में लीला करती है जहाँ नदी, सरोवर, वन उपवन, पर्वत, भवन, पशु पक्षी इत्यादि सब उसी का करते है।

महामति द्वारा क्षर अक्षर- अक्षरातीत स्वरूप का वर्णन समन्वयात्मक है यह ब्रह्माण्ड जो पाताल से लेकर चौदह लोक, शून्य निरंजन निराकार तक का लोक (नाशवान सत्ता) है।

> पाँच तत्त्व गुन तीनोंही, ए गोलक चौदे भवन ।
> निरगुन सुंन या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन ।।
>
> न० कि०पु० 107/3

पाँच तत्त्व और तीन गुणों को विस्तार गोलाकार पृथ्वी और चौदह लोकों के साथ निर्गुण, शून्य और निरंजन आदि जिस प्रकार शून्य से उत्पन्न होते है, उसी प्रकार उसी में लय हो जाते हैं।

इस प्रकार लोक की सृष्टि अक्षर ब्रह्म के संकल्प मात्र से होती है और समयावधि के अनुसार महाप्रलय में अक्षर ब्रह्म के अव्याकृत स्वरूप में लीन हो जाती है। जिसकी दो शक्तियाँ है काल माया और योग माया। योगमाया को महामति प्राणनाथ ने स्वामी जी के आनन्द को कहा है।

काल माया शक्ति परमात्मा के सच्चिदानन्दमय स्वरूप का साक्षात्कार करने में अनेक प्रकार का अवरोध पैदा करती है। इस ब्रह्म के स्वरूप को जानने के लिए कितने प्रयास हुए परन्तु उसके स्वरूप का निर्णय नहीं कर सके।

पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन ।

त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन ।।

प्र०कि०प्र० 28/7

कितने ही पंडित पोथी पढ़-पढ़ कर थक गए इसके जानने के लिए परन्तु इसके स्वरूप का निर्णय न ले सके। तीनों गुणों को धारण कर त्रिलोकी की स्वामिनी बनी, यही तीनों काल में मग्न होकर खेल रही है।

जल जिमी न तेजवाए, न कोई सब्द आकास ।

तब ए आद अनादकी, जब नहीं चेतन प्रकास ।।

प्र०कि०प्र० 28/6

जब जल, पृथ्वी अग्नि, वायु नहीं थे और न ही कोई शब्द आकाश में उच्चारित हुआ था। चेतन तत्त्व के विस्तार से भी पूर्व अनादि काल में इसका प्रभुत्व बना हुआ था।

आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख ।

अंग न इंद्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख ।।

प्र०कि०प्र० 28/5

इसका कोई आदि अन्त नहीं। न ही कोई रूप या आकार ही है। अंग इन्द्रिय तेज, ज्योति आदि से विहीन यह अदृश्य और अगोचर है।

विस्नु ब्रह्मा रुद्र जनने, हुई तीनों की नार ।

निरलेप काहू न लेवही, नारी है पर नाहीं आकार ।।

ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों को इसने जन्म दिया और फिर तीनों की नारी बन गई। फिर या किसी पर आसक्त नहीं होती। कहने को तो मोहिनी नारी है, परन्तु इसका कोई आकार नहीं है।

कोई कहे जो निरगुन न्यारा, रहत सबन से अलग ।
कोई कहे ब्रह्म जीव न दोए, ए सब एके अंग ।।

मा०कि०प्र० 29/5

कोई कहता है वह निर्गुण स्वरूप है। सबसे अलग रहता है। किसी से भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। कोई कहते ब्रह्म और जीव का पृथक अस्तित्व नहीं। यह एक ही है।

कोई कहे ए तेज पुंज, जाकी किरना सबे संसार ।
कोई कहे याको अंग न इन्द्री, निरंजन निराकार ।।

मा०कि०प्र० 29/6

कइयों की धारणा है कि वह ज्योति पुंज है, उसी की किरण यह सारा जगत् है। कोई कहते है न तो उसके अंग है न इन्द्रियां। वह निरंजन और निराकार है।

महामति प्राणनाथ द्वारा अक्षर-अक्षरातीत का स्वरूप तथा वर्णन भारतीय एवं विश्व के दार्शनिक पवित्र ग्रन्थों के अनुरूप सूक्ष्म अर्थ प्रकट करने वाला, समन्वयात्मक है यह ब्रह्मांड जो पाताल से लेकर चौदह [illegible] निराकार तक क्षर लोक (नाशवान सत्ता) है।

परमसत्ता — या ब्रह्म का धाम

परमधाम ही वह अधिष्ठान है जहाँ पूर्णब्रह्म परमात्मा की दिव्य लीलाएँ सम्पन्न होती है और साधक का परम प्राप्तव्य स्थल भी वही है।

बैकुण्ठ, गोलोक व अखण्ड वृन्दावन से आगे अक्षरधाम व उससे भी आगे अक्षरातीत का परमधाम, यही मुक्त आत्माओं की प्रतिष्ठा भूमि या धाम है। इसी लिए महामति प्राणनाथ परमधाम की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि जब पंच भौतिक शरीर सम्माजिध के अनुसार महा प्रलय में अक्षर ब्रह्म में अव्याकृत स्वरूप में लीन हो जाता है उस समय परमधाम ही तुम्हारा घर

> कौन तुम और कहाँ से आये, और कहाँ है तुम्हारा घर ।
> ए कौन भोम कहाँ श्रीकृष्णजी, पाओगे कौन पर ।।
>
> म०कि०प्र० 13/5

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि इतना तो विचार करो कि तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? तुम्हारा घर कहाँ है? यहाँ किस ठिकाने बैठे हो। श्रीकृष्णजी पुण्य-भूमि कहाँ है? उन्हें किस प्रकार पाओगे।

> कहे कतेब सारे ही साहेब की, द न सके कोई और ।
> खुदा की खुदाए बिना, बिन पाया नाहीं ठौर ।।
>
> म०कि०प्र० 65/13

तोरेत, जबूर, अंजील, कुरान आदि कतेब ग्रन्थों के अनुसार खुदा की साक्षी खुदा के बिना कोई नहीं दे सकता और न ही कोई दूसरा उस अखंड धाम को पा सकता है।

अखण्ड भूमि में दो धाम हैं- एक पूर्णब्रह्म परमात्मा का, जिसे रंग महल कहते हैं दूसरा अक्षर ब्रह्म जिसे अक्षर धाम कहते हैं। और अक्षर ब्रह्म शक्तियों के स्वामी हैं।

परमधाम में नूरमयी, चिन्मय अखंड ऐश्वर्य युक्त, अनन्त परिधि लिए, असीम एवं सुउच्च अट्टालिकाएँ, महलों के समान सुन्दर वृक्ष विभिन्न गुण, रंग स्वाद से पूर्ण सागर द्वीप, वन उपवन, पर्वत समूह का वर्णन कुलजम स्वरूप के परिकरमा ग्रंथ में है। महामति प्राणनाथ ने कहा है कि तार्किक बुद्धि को मौन करने एवं आत्मा को ध्यान के लिए आधार देने के लिए यह वर्णन किया है। परब्रह्म परमात्मा की लीला स्थली ही परमधाम है।

वास्तव में जो यथार्थ एवं कल्पना में, वास्तविक एवं प्रतिबिम्ब में अन्तर होता है वही मूल परमधाम एवं अक्षर ब्रह्म में होता है। और ब्रह्म इस नश्वर सृष्टि में है। श्री राज जी, श्री श्यामा जी की चिन्मय परमधाम उनकी क्रिडा स्थली होने के कारण शाश्वत आनन्दों एवं अनन्त प्रसाधनों से भरपूर है।

ब्रह्म — लीला

ब्रह्म जो ईश्वरीय ज्ञान की ओर प्रेरित करता है। अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म है। जो उत्पत्ति और प्रलय स्वरूप है वह क्षर है और जो ईश्वर रूप, व्यापक सर्वव्यापी होकर सबकी रक्षा करता है, सब को धारण करता है, वह अक्षर पुरुष है, जो उत्तम पुरुष है वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा नाम से प्रसिद्ध है। महामति कहते हैं कि इनको देखते हुए इसका नाम दे दिया—

> वेद अगम कहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया।
>
> खबर न परी किंहू उपज्या कहाँ थें, तायें नाम निगम धराया ।।

म०कि०पु० 3/2

वेदशास्त्र भी परब्रह्म की खोज करते हुए अगम्य पहुँच से परे जाकर उल्टे लौट पड़े, तब उन्होंने परमात्मा का "नेति-नेति" - अंत नहीं - कह कर गायन किया। यह पिन्ड विराट जहाँ से उत्पन्न हुआ, इसकी सुधि वेदों में न मिली तो ज्ञानी जन ने इन्हें "निगम"—"पहुँच नहीं पायें - नाम दे दिया।

खोजी खोजे बाहेर भीतर औ अंतर बैठा आप ।

मन सुपने को पारखे पेखे, पर सुपना न देखे साक्षात ।।

प्रा०वि०पु० 3/5

खोजने वाले बाहर, ब्रह्माण्ड में अथवा अंदर, पिंड में उसे खोजते हैं। परन्तु वह तो उनसे अलग अन्तरात्मा में विराजमान है। सत्य आत्मा संसार स्वप्न को अपने मूल घर से बैठी देख रही है, परन्तु स्वप्न के जीव सत्य को नहीं देख सकते।

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं ।

गुरु पुलाएँ अन्दर पेख्या, तो सोभा कहनी न जाई ।

प्रा०कि०पु० 3/8

बाहर भीतर— ब्रह्माण्ड और पिंड में ब्रह्म की उपस्थिति का आभास होता है। वस्तुतः वह इनमें है नहीं। जिन गुरु की कृपा से अन्तरात्मा में उसे देखा, उनकी महिमा का वर्णन नहीं हो सकता।

रे हूं नाहीं व्रत दया संध्या न अग्नि कुंड न्हाऊं जीवजगत ।

तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूं तीरथ तरपन ।।

प्रा०कि०पु० 12/2

व्रत करने में, दान-दया, संध्या-स्नान, अग्नि कुंड के होम, अथवा जीवों के नर या पशु-पक्षी में भी नहीं हूँ। तंत्र-मंत्र, भेष-पंथ, तीर्थ तर्पण में भी मैं नहीं हूँ।

मैं हूँ नाहीं करामात मत अगम निगम; अंग न करम उनमान ।
सुपन सुषोपत जाग्रत न तुरिया, जपन तपन ध्यान ।।

न०कि०प्र० 12/3

और मुझे इन करामातों में न ढूंढो। अगम-निगम कहे जाने वाले शास्त्रों में भी मैं नहीं हूँ। धर्म कर्म के काल्पनिक सिद्धान्तों में भी मैं मिलता नहीं, स्वप्न सुषुप्ति, जाग्रत और तुरीय - इन चारों अवस्थाओं में मैं नहीं हूँ। जप-तप ध्यान आदि में भी नहीं ।

चित्त में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई ।
अलख को घर याको कोई न लखे, जोर बोहोत करे चतुराई ।।

न०कि०प्र० 19/6

सब के चित्त, अन्तर्मन में चिन्मय आत्मा समायी हुई है। चाहे कोई कितनी ही चतुराई क्यों न दिखा ले, उसे अलख परमात्मा का धाम कोई देख नहीं पाता।

इसमें महामति प्राणनाथ का कहना है आत्मा सर्व व्याप्त है अलख है यह अलख परमात्मा या आत्मा है।

सतगुरु संगे मैं घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई ।
महामति कहें या विध विचार्या, तुम जिन जिको भाई ।।

न०कि०प्र० 19/7

सतगुरु के साथ से ही मैंने यह घर पाया है और मुझे परब्रह्म परमात्मा के दिखा दिया महामति प्राणनाथ कहते हैं कि मैं इस प्रकार बिगड़ गया हूँ तुम लोग कहीं बिगड़ न जाना। आगे ब्रह्माण्ड का वर्णन करते हुए कहते हैं कि –

> ऐसे कोट ब्रह्माण्ड होवें पल में, अद्वैत के हुकम ।
>
> ए कहावे ब्रह्म सृष्ट नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम ।।
>
> प्र०क०ग्र० 32/9

इसमें कहते हैं कि ब्रह्म शास्त्रियों को द्वैत-अद्वैत की परख नहीं है अद्वैत ब्रह्म की आज्ञा से करोड़ों ब्रह्माण्ड पलभर में मिट जाते हैं। इन तथा कथित ब्रह्मशास्त्रियों को न ब्रह्मधाम की सुधि है और न ही द्वैत-अद्वैत की ही परख है। ब्रह्माण्ड में ब्रह्म का वास का वर्णन करते हुए कहते हैं कि—

> काल आवत कहूं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई ।
>
> अखंड साईं जो यामें होता, तो भंग ब्रह्माण्ड न होई ।।
>
> प्र०कि०ग्र० 53/6

जिस पिण्ड या ब्रह्माण्ड में ब्रह्म का वास हो, वहाँ मृत्यु कभी आ सकती है क्या? यदि इस संसार में अखंड परमात्मा का वास होता तो ब्रह्माण्ड का लय कभी न होता।

> बाकी अंतरजामी को, कबहूं न खोली किन ।
>
> आद करके अब लों, खोज थके सब जन ।।
>
> प्र०कि०ग्र० 55/24

अंतर्यामी ब्रह्म के रहस्य को किसी ने कभी खोला नहीं। आदिकाल से अब तक सभी उसे खोजते रहे, लेकिन हारकर बैठ गये।

सगुण और निराकार ब्रह्म

सम्पूर्ण प्रकृति का सूत्रधार ब्रह्म माना गया है और सभी जीवात्मायें परमात्मा में केन्द्रित है जगत का मूलाधार परमात्मा ही है निर्गुण और सगुण ये दो रूप माने गये है पर ब्रह्म एक, अनन्त, अद्वैत रूप है। परब्रह्म निर्गुण, निराकार साकार रूपी है। अपर ब्रह्म सगुण और साकार है। पर ब्रह्म सत् चित् आनन्द स्वरूप व अपर ब्रह्म परमात्मा, जगत्पिता है। पर ब्रह्म पराविद्या का और अपर ब्रह्म अपराविद्या का विषय है।

निर्गुण और निराकार ब्रह्म द्वारा लीला सम्भव नहीं एवं भगवान में आस्था रखने वाले जिस परमात्मा के हुक्म में सृष्टि मानते थे वह भला निर्गुण और निराकार कैसे हो सकता है।

हिन्दू धर्म के अन्तर्गत भी न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा-वेदान्त आदि कई मत थे तथा इनमें भी एकेश्य नहीं था केवल वेदान्त में ही अद्वैत (शंकर), विशिष्टाद्वैत (रामानुज), द्वैताद्वैत (निम्बार्क), शुद्धाद्वैत (वल्लभाचार्य) आदि विभिन्न मत प्रवर्तक थे। निर्गुण और सगुण माननेवाले मतों में संघर्ष चलता रहा। कबीर ने निर्गुण का प्रचार किया सूर ने सगुण तथा तुलसी ने बीच बचाव किया।

युग की मांग थी यथार्थ स्वरूप का अनावृत करके दर्शन करा सके ऐसे ही समय में महामति प्राणनाथ सगुण और निर्गुण का समन्वयात्मक मत लेकर

मानव उत्थान की चेष्टा की।

साधु सुने मैं देख केते, आगम कर कर गावें ।
तेहेवे जाए करैं निराकार, या ठोर चित ठेहरावें ।।

म०कि०ग्र० 5/7

अतः महामति प्राणनाथ कहते है कि कई ऐसे भी साधु देखने सुनने में आये जो आगम, वेद शास्त्र के वचनों का गायन करते हैं। वे परमात्मा को निराकार घोषित करते हैं और फिर इसी निराकार में ध्यान केन्द्रित करने की चेष्टा करते हैं।

जिन छिन में तत्व पाँच समारे, नास करे छिन मांहि ।
ए कहाँ से उपाए कहाँ ले समाए, ए विचारत क्यों नाहिं ।

म०कि०ग्र० 5/11

जिस रचयिता ने क्षणभर में पाँच तत्वों को संवारकर सृष्टि रचना की, वह पल भर में उन्हें अलग कर नष्ट कर देता है। इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि ये सब कहाँ से उत्पन्न होते हैं और कहाँ समा जाते हैं।

महामति ने गुजराती में भी यह किरतन में लिखे है जिसमें उन्होंने कहा है।—

सुनें जोयूं, सघूं मन करी, प्यारे नाम धराव्यां निगम ।
सनंध न लाधी सुनं तणी, त्यारे कहीने वल्यां आगम ।।

म०कि०ग्र० 68/19

इसमें निराकार का वर्णन किया है। इस शून्य को देखने और पाने के लिए बहुत उद्यम किया। लेकिन जब पार न पा सके तो "पार नहीं है" कहकर यही निगम नाम से जाने गए। इस शून्य की जब किसी भी तरह थाह न पा सके तो "अगम" कहकर वापिस लौट आये।

> जहाँ आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कोई अंधार जी ।
> निराकार आकार नहीं, नर न नेहेचाए कोई नार जी ।
>
> म०वि०पु० 69/2

यहां आदि अन्त, स्थावर-जंगम, जल-अजल, प्रकाश-अन्धकार कुछ भी नहीं। यह न तो निराकार है और न ही इसका कोई आकार ही है। न यह पुरुष रूप में है और न नारी रूप में ।

> नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, परख नहीं परवान जी।
> आवन गमन नहीं अंग इंद्री, जब न कोई निरवान जी ।।
>
> म०वि०पु० 69/3

इसका नाम या ठिकाना कुछ भी नहीं। इसमें कोई गुण भी नहीं और न ही इसे निर्गुण कहा जा सकता है। इसका न तो कोई पक्ष है और न प्रमाण। आवागमन से परे या अंग इन्द्रिय रूप आधार नहीं होने के कारण इसकी पहचान नहीं हो पाती।

अतः इसका कोई रंग रूप नहीं होता है तेज और ज्योति भी नहीं होती दिन रात का भी भेद नहीं होता है। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश में पांचों तन्मात्रायें भी नहीं होती। आकाश में केवल "सोऽहं"

शब्द की गुह्यता है। अतः वहाँ का वर्णन करते हुए कहते है कि —

> यहाँ रस न धात नहीं कोई तत्व, ग्यान नहीं कछु गंध जी।
> फूल न फल नहीं मूल वृक्ष, भंग न कोई अभंग जी ।।
>
> प्र०कि०प्र० 69/5

यहाँ रस, धातु, तत्व, ज्ञान, शक्ति, गन्ध आदि कुछ भी नहीं। फूल फल, वृक्ष, मूल नश्वर, अविनश्वर जैसी कोई सत्ता नहीं।

<u>ब्रह्म लीला:-</u>

माया से ही उत्पन्न यह सारा संसार है अतः यह चौदह लोक ही माया से उत्पन्न है इन तीन गुणों का (सत्व,रज,तम) विस्तार हुआ और अहंकार से उत्पत्ति हुई इसलिए इनके विकार नहीं छूट पाते। और फिर बुद्ध जी का आविर्भाव हुआ जिसका वर्णन हम पहले ही दे चुके हैं। --

जिस परमात्मा की माया है वहीं इसे जानते है। तथा बुद्ध जी के आविर्भाव से ज्ञान की कुंजी तथा माया से परे जो अखंड घर है दिखा दियाऔर ब्रह्म सृष्टि को प्रकट किया, जब झूठ और सत्य का अन्तर स्पष्ट किया फिर ब्रह्म का परिचय प्राप्ति होने पर ब्रज, रास और जागनी के अवसर पर मनोरथ पूर्ण किया। उसी समय अनुग्रह किया तीनों खेल दिखाने का तब प्रियतम के साथ ब्रज-लीला किया।

> तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर ।
> तामे ब्रज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर ।।
>
> प्र०कि०प्र० 52/17

महामति प्राणनाथ यहाँ कहते है कि तब हमने खेल दिखाये जाने का निवेदन किया था। अनुग्रह पूर्वक वह हमें दो बार दिखा दिया गया। तब भी मोह अंधकार में हमने प्रियतम के साथ ब्रज-लीला की।

ब्रह्म लीला ढाँपी रही, अवतारों दर म्यान ।
सो आप फैर आपनी, प्रकट करी पैहेचान ।।

म०कि०प्र० 52/25

अवतारों की लीला में ब्रह्म लीला का सारा रहस्य छिप गया। बुध जी ने प्रकट होकर स्वयं संसार के लोगों को अपना परिचय दिया।

सो पैहेचान सबों पसराय के, देसी सुख बेराट ।
लौकिक नाम दोऊ मेटके, करसी न्यों हाट ।।

म०कि०प्र० 52/26

वही बुध जी ब्रह्मात्माओं की पहचान बताकर समस्त ब्रह्माण्ड को सुख देगे। द्वैत की अवधारणा अर्थात् धर्म, अर्थ कर्मकाण्ड एवं ऊँच नीच आदि प्रदत्त लौकिक संज्ञाओं को मिटाकर नया रूप-संस्कार प्रदानकर अद्वैत में प्रतिष्ठित करेगे।

ऐसे लीला का वर्णन जागनी में विस्तार से वर्णन कर चुके हैं।

जीव

नाम:-

जैन दर्शन शास्त्रियों के सिद्धान्त के अनुसार द्रव्य छह है उन्हीं में से जीव द्रव्य भी एक है। जीव अर्थात आत्मा से है। धर्म के अन्दर जीव

शब्द से चेतना शब्द का बोध होता है। और यह जीव का गुण है, जीव से ज्ञान दर्शनात्मक कहा गया है। जैन दर्शन में ज्ञान को ही आत्मा कहा गया है। जीव दो प्रकार के होते है (1) संसारी और (2) मुक्त

संसारी जीव:-

वह जीव है जो संसारिक बंधन अर्थात शरीर धारण कर के कर्म बन्धन में पड़ कर योनियों में भ्रमण करता है।

मुक्त जीव अर्थात् सभी प्रकार के कर्म बन्धन से मुक्त रहता है। इनका निवास स्थान लोकाग्र में रहता है। महामति प्राणनाथ अपनी किरंतन पदावली में इसका वर्णन करते हुए कहते है कि जीव तो इस तरह बंधन में बंधा हुआ है श्रीमद्भागवतपुराण से अब तक अनेक कष्टकर साधना हुए और जीव को तपाने के बाद भी कर्मों के खींचतान से मुक्त नहीं हो सका। संसार में बंधा जीव जल्दी से नरम नही होता।

अनेक देह दमें पंच अगनी तोहे न जले करम।
अनाद कालना जे बंध बांध्या, ते थाए नहीं जीव नरम ।।

क०कि०प्र० 126/85

कई लोग पंचाग्नि में देह को तपाते है तो भी उनके कर्म बन्धन जलते नहीं। अनादि काल से जीव बन्धनों में बंधा है इसलिए तो वह नरम नहीं होता।

तेज आकास वाए जल पृथ्वी, रवि संसि कोदे भवन ।
ए करें सरव करनना बांध्या, बीजा तो पहेली उतपंन ।।

क०कि०प्र० 126/88

अग्नि, आकाश, वायु, जल और पृथ्वी ये पाँचों तत्व, सूर्य, चन्द्रमा और चौदह लोक– ये सारे के सारे कर्मों के बन्धनों में चक्कर काट रहे हैं। अन्य समस्त स्थावर जंगम प्राणी तो इनसे ही उत्पन्न हुए हैं।

प्रगट वैराट भयो जे दाडे, पना बंध पेहेलाना बंधाणां ।
आव्या चले मांहीं ते माटे, सहूए ते जाए तणाणा ।। 89

प्र०कि०प्र०126/89

जिस दिन से यह ब्रह्माण्ड प्रकट हुआ उसी दिन से कर्म बन्धन की सृष्टि कर दी गई। इसीलिए तो ये अनादि बन्धन इस संसार में की गयी किसी भी साधना से कट नहीं पाते। सारे जीव अहर्निश उसमें खिंचते चले जा रहे हैं।

आतम नारायन बुध ब्रह्मा, निसदिन फिरे नारद मन ।
वैराट नटवा नाचत विध विधसों, अवक्त व्यास करन ।।

प्र०कि०प्र० 7/5

इस वैराट में आत्मा से नारायण, बुद्धि से ब्रह्मा और मन से नारद मुनि व्याप्त हो सर्वत्र घूम रहे हैं। व्यास मुनि द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड के बंधन में बंधे "मनुष्य"– इस वैराट के नट जीव विविध प्रकार से नाच रहे हैं।

हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार ।
अगम पार अपार पार, जहाँ है तेरा करार ।
तूं देख निज दरबार अपनो, सुरत पकी संभार ।।

प्र०त०प्र० 8/1

ओ मेरी आत्मा। तुम उस अगम के पार चल, जहाँ किसी का पहुंचना संभव नहीं। उस अगम -- बेहद भूमिका से आगे अक्षर ब्रह्म के भी पार तेरा धाम है। वहीं तुझे चैन मिलेगा। तू अपने दरबार - मूल घर को देख। अपनी सुरत को वहीं केन्द्रित कर।

आत्मा=(जीव)

अत: संसार के प्रति जीव का प्रेम देखकर महामति कहते हैं कि -

रे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों विलमाए ।

प्र0कि0प्र0 48/2

हे जीव इस क्षण भंगुर नाटक में देर क्यों कर रहा है? तेरे देखते-देखते दाव हाथ से निकला जा रहा है । प्रभु को पाकर भी क्यों भूल रहा है?

लेकिन शास्त्रों का मत है जीव सृष्टि का उद्गम बैकुण्ठ धाम से ही है और जीव में ब्रह्मसृष्टि सुरत का प्रवेश अक्षरातीत धाम से है। और महामति कहते हैं। कि उन सभी जीव को उनके धाम तक पहुंचाऊंगा।

जिन जानो शास्त्रों में नहीं, है शास्त्रों में सब कुछ ।

पर जीव सृष्टि क्यों पावही, जिनकी अक्ल है तुच्छ ।।

प्र0कि0प्र0 73/26

वैसे महामति प्राणनाथ का कहना है कि ऐसा नहीं समझना चाहिए कि शास्त्रों में कुछ नहीं है। शास्त्रों में सारे संकेत मिलते हैं। परन्तु जीव-सृष्टि अपनी तुच्छ बुद्धि के कारण उन्हें कैसे समझ सकती है। अत: जीव सृष्टि की पहचान इसी प्रकार हो सकती है।

मोह अहंगुन की इन्द्रिया, करे फैल पसु परवान ।
फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्टि पेहेचान ।।

म०कि०प्र० 79/7

मोह, अहंकार, गुण और इन्द्रियों के वशीभूत ये कभी - कभी पशुओं की तरह आचरण करती हैं और स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत तीनों अवस्थाओं में विचरण करते हुए जीना - यह जीव सृष्टि की पहचान है।

जीव की स्थिति :-

अपनी छाया सों आप विगूती, बल खोए चली हार ।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार ।।

म०कि०प्र० 23/2

अपने प्रतिबिम्ब से उलझी अपनी शक्ति एवं ऊर्जा खो रही है बिना आग के ही अपने अंगों की वासनाओं में जलकर कोयला हुई जा रही है।

पणी पेरे बंध आढ्या वज्र में, चसकावी ना सके पाए।
होस करे सुख वैकुंठ केरी, पणी सिखरे पग केम चढ़ाए।।

म०कि०प्र० 131/17

इस प्रकार के वज्र सदृश कठोर बंधनों में बंधा जीव अपना पाँव भी सरका नहीं सकता। उनके मन में वैकुण्ठ जाने की उत्कृष्ट अभिलाषा भी बनी रहती है। परन्तु ऐसे कर्मों का बोझ उठाकर ऊँचे शिखर पर चढ़ना कैसे सम्भव हो सकता है।

जे बंध बांध्या जोइए रे वरणवुं, ते बंध बांध्या लेई पपाल ।
अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे वहे जई जननी जाल ।।

प्र०कि०पृ० 131/18

अंग
जिन गुण(इन्द्रियों के द्वारा जीव को परमात्मा के चरणों से जुड़ जाना चाहिए था, उन्हीं को लेकर वह कुछ और पाखंड में पड़ गया। ये सब तो भव के फंदे में डालने वाले हैं। उनसे अखंड सुख मिलने की संभावना नहीं है। इनसे जीव को अविनाशी सुख कैसे मिले।

साथी हता जे माहेला, तेणे छोडी आप अकेल ।
जेनी जे जतन करता, तेणें बांध्या बंध विसेंब ।।

प्र०कि०पृ० 125/31

जिनको तुष्ट करने के लिए तुम सदैव प्रयत्नशील रहे, उन्हीं अंतरंग साथियों अपने ही गुण अंग इन्द्रियों ने, जब तुम्हें अकेला पाया उन्होंने ही तुम्हें विशेष बन्धनों में बांध दिया।

लाख चोरासी हत्या केसले, एवो आ जनम तमारो ।
बीजी हत्याओं पार न्थी, जो ते तमें नहीं संभारो ।।

प्र०कि०पृ० 126/67

तुम्हारा ऐसा मानव जन्म है, इसे तुमने संभाला नहीं। इससे अपेक्षित फल प्राप्त न किया तो चौरासी लाख योनियों में जन्म-ग्रहण करने का पाप तो लगेगा ही, अन्यान्य जन्मों की अपार हत्याएं भी तुम्हारे सिर मढ़ी जायेंगी।

इन्हीं कर्म का भार लादे हुए बेल रूपी जीव से कहा गया है कि -

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय ।

बाल ने वेलू रे धोरी, उवट ऊँचाणे स्वास मा खाय ।।

म०कि०पु० 130/3

रे धोरी बैल। तू तो गूंगा है। स्वयं दायित्व ले लेने के कारण बोल भी नहीं पाता । संसारी जीवों के बीच, ऊँची चढ़ाई और अवघट राह में साँस नहीं लेना। तुझे जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाना है।

धोरीड माँ मूके तारी धूंसरी ।। टेक ।।

वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा माँ मूके तारी धूंसरी ।।

धोरीडा बारे नारे के , तूंने गोधे खणे।

तूं तो नाके नथाणो, तु तो बंध बधाणो, गुण आपणे रे ।।

म०कि०पु० 130/1

ओ धोरी बैल। तू अपने जुए को छोड़ न देना । बेहद के पार आरोहण का मार्ग अति कठिन है। तेरे जीवन की गाड़ी पर समस्त ब्रह्मांड के जीवों को जाग्रत करने का भारी बोझ है। रे बैल । मेरे जीव । तू अपने जुए को मत छोड़ । तुझ पर सवार गाड़ीवान अनुचित वचनों से तुम्हारी भर्त्सना करते हुए डंडे बरसाता है। तुझे अपशब्दों से कोस-कोस कर व्यंग्य की आरी चलाता है व्यर्थ सम्बंधों की नकेल डाल दी गई है। तु स्वभवत: ही अपने दिए वचन, अपने सदाशय के कारण बंधन में बंधा पड़ा है।

इसमें धर्म के बन्धन को बताया गया है।

इस मनुष को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार ।

सब कोई देखे यामें मनुखा, या मनुखा में सब विस्तार ।।

म०कि०पु० 7/15

इसमें मन की प्रकृति दिखाई गई है सारे संसार के लोग मिलकर प्रयास करें तो भी इस मन की थाह नहीं पा सकता। सब यही देख रहे हैं कि समस्त संसार में मन व्याप्त है और इस मन में ही सारी सृष्टि का विस्तार है।

ए सब खेल करत है मनुआ, भाँति भाँति रिझावे ।
ब्रह्मवासना कोई पारखे बैठे, सो भी दृष्ट मुरझावे ।।

म०कि०पु० 7/14

बाजीगर मनुआ की भाँति वे खेल रचाकर जीव को रिझाता है। ब्रह्म-वासनाएँ (आत्माएं) परमधाम में बैठी इस लीला को देख रही है। माया की छाया से उनकी दृष्टि धुंधली पड़ जाती है।

सांसारिक जीव का वर्णन करते हुए महामति कहते हैं:-

कलियां कीक न आगे केहेनी, साभले न कांई देखे ।
सावर ए सूर धीर कहिए, जे ए दोष मे न लेखे ।।

म०कि०पु० 126/5

ऐसे लोग तो सचमुच के ही शूरवीर हैं। इनके मन में किसी का भय नहीं है। वह न तो सुनते हैं न कुछ देखते हैं। इन्हें तो सच्चा शूरवीर एवं धैर्यवान कहना चाहिए। जिन्हें न तो किसी काम में दोष दिखाई देता है, न उसे करते हुए डर लगता है।

आप न ओलखे अंध न सूझे, करन तणी जे जाणी ।
खोलतां खोलतां जे गुणम पाम्यो, तो ते नाखे अंध आणी ।।

म०कि०पु० 126/60

इसमें बाधक सांसारिक जीव के कर्मों को बताया है। अपनी आत्मा को पहचाने बिना बंधन भी प्रत्यक्ष दिखायी नहीं होते। यह तो धनों का पाश है। खोजते खोजते यदि गुरु तक पहुंचना सम्भव हो सके तो वह सत्य बोध दे, बंधनों को जलाकर समाप्त कर देता है।

जीव रे चतुर मुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्टि के बेताप ।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंचो आप ।।

प्र०कि०पु० 48/4

हे जीव! चार मुख वाले सृष्टि रचयिता ब्रह्म जी को भी काल ने न छोड़ा यह काल चारों ओर चौदह लोकों में पहुंच जाता है।

देखन को ए खेल छिन को, लिए जात लपटाए ।
महामत कहे ले तासों, उपजत जाकी इछाए ।।

प्र०कि०पु० 48/60

एक क्षण भर का खेल देखने के लिए आप और उससे लिपटे चले जा रहे हो। महामति मन में उससे रमण करती है, जिसकी इच्छा से यह सब उत्पन्न होता है।

तूं कहा देखे इन खेलमें, ए तो पड़यो सब प्रतिबिम्ब ।
प्रपंच पांचो तत्व मिल, खेलत सुरत के संग ।।

प्र०कि०पु० 8/2

तू इस खेल में क्या देख रही है? यह सत्य का प्रतिबिम्ब (आभास) मात्र है यहां ये पांचों तत्व जीव की चित्तवृत्तियों के साथ खेल रहे हैं।

जीव का स्वरूप :--

यह जो पाँच तत्व से बना शरीर जिनसे संसार रचा गया वह मूलत: शून्य है सब कुछ भुलावा देने वाले और मन का विकार है। और संसार में इनका नाटक दिखाया जा रहा है।

नहीं पिंड पोते हाथ पाँव भी नाहीं, नाटक नाच दिखावे।
मुख न जुबाँ कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे ।।

म०कि०प्र० 7/4

पिंड (आकार) हाथ-पाव और शरीर के न होते हुए भी इनका प्रत्यक्ष नाटक संसार में दिखाया जा रहा है। मुख नहीं है और जिह्वा के बिना ही अनेक प्रकार के शब्द उच्चारित हो रहे हैं और विविध प्रकार की वाणियों का गायन हो रहा है।

ए मनुए की बाजी बाजीमें मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे ।
बरना बरन खेलत सब पैसे, नए नए स्वाँग बनावे ।।

म०कि०प्र० 7/6

यह सब जो खेल रचा गया वह सब बाजीगर का खेल है जिसमें मन स्वयं ही नाना प्रकार के जीवों का रूप धारण करके उन्हें विभिन्न प्रकार के खेल खिला रहा है वर्णविरण के नाना स्वाँग रचकर स्वयं मन ही इसमें खेल रहा है।

अत: जीव के बारे में महामति प्राणनाथ कहते है कि यह तो सबको धोखा दे जाती है यह शरीर रूपी शैय्या ऐसी सवारी गई है कि इस पर लेटते ही नींद आ जाती है। शरीर को एक भी काँटा चुभने पर

जीव को कष्ट होता है फिर इसके अंजाम में अंधा जीव यम की यातनाएं कैसे सह सकता है।

> इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अग्नि ।
> पीछे लाख चौरासी देहमें, जलसी रात और दिन ।।

प्र०कि०पु० 34/16

असावधानी और दुख से भरे इस घर में बड़ी भयंकर आग लगेगी। इस देह से छूटते ही जीव चौरासी लाख योनियों में प्रवेश करके दिन-रात जलता रहेगा।

अत: जब शरीर से जीव बिछड़ने लगता है। तो बड़ी अन्तर्दाह और अग्नि के समान जलन होती है। परन्तु इस जीव ने कभी किसी से मन का सम्बन्ध नहीं जोड़ा। शरीर जब जीव से अलग हो जाता है तो वह वर्णन करता है कि —

> रे जीव जी तुमें लागी दाह मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन ।
> तुम मोही से न्यारे भए, मोहे राखी नहीं छिन छिन ।।

प्र०कि०पु० 35/1

हे जीव मुझसे बिछुड़ते हुए तुम्हें तो मात्र दाह हुई, परन्तु तुम्हारे बिना मैं तो जलकर राख ही हो गयी। तुम जैसे ही मुझसे अलग हुए, मुझे एक क्षण के लिए भी घर में न रहने दिया।

> मेरी सेवा जो करते साथीहे, फूलके बिछाय ते सेज ।
> सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज ।।

प्र०कि०पु० 35/2

वे संगी-साथी, जो मेरी सेवा करते थे, फूलों की सेज बिछाकर सुलाते थे, पंखे की शीतल वायु से तन का ताप हर लेते थे- उन्होंने ही मुझे तिल-तिल कर जला डाला ।

> एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारीमे ओरने हाथ ।
> मनुयें उतारे या विध, मेरे सोई संगी साथ ।।

मo किoपुo 35/5

मेरे तन का एक बाल भी टूटने पर भी जो सगे-सम्बन्धी दुखी होते थे, उन्होंने ही लकड़ी से कूँद-कूँदकर जला डाला। मेरे अंतरंग साथियों ने मुझे अपने मन से उतार दिया।

जीव के गुण और सीमायें:--

गुण:-

इन्द्रियों के वशीभूत होकर जीवात्मा मोह, अहंकार, गुण पशुओं की तरह आचरण करती है। इसमें कोई भी एक दूसरे जैसा नहीं मिलता है। स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत तीनों अवस्थाओं में विचरण करते हैं।

> आतम एक्यासी पख ले, सब दुनिया में खेलत ।
> मोह अहं मूल इनको, सब याही बीच फिरत ।।

मoकिoपुo 79/6

उक्त यह जीव सृष्टि इस ब्रह्मांड के इक्यासी पक्षों में ही रमण करती हैं मोह और अहंकार ही इनका मूल है। ये सब की सब चौदह लोक में ही विचरण करती हैं।

जाग्रत तरफ दुनीय की, सोवन सुपना ले ।
देखत सुपना नींद में, ए तीनों अवस्था जीव के ।।

म०कि०पु० १९/९

ये सोती है तो मिथ्या संसार ही इनके मन में रमण करता है जाग रही होती है तो भी दुनिया की तरफ आंखें रहती हैं। इस नश्वर संसार का ध्यान लेकर सोती हुई इसी दुनिया की तरफ आंखें रहती हैं। अपनी अंतर्दृष्टि से देख न पाने के कारण इन्हें स्वप्न की सृष्टि कहा गया है।

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिरलेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे ।।

म०कि०पु० ३/२

"यह मेरा है" "यह मेरा है" – ऐसा कहते हुए दुनिया के लोग व्यर्थ ही सारे ब्रह्मांड का बोझ अपने सिर पर ढोते हुए चले जा रहे हैं। इस क्षणभंगुर जीवन में, जहाँ एक पल का भरोसा नहीं, वहाँ भी सर्वसृजनहार परमात्मा के सम्मुख स्वयं को अर्पित नहीं करते।

ए बानी गरजत मांहे संसार, खोजी मिटावे अंधार ।
मूढ़ मती न जाने विचार, महामत कहे पुकार पुकार ।।

म०कि०पु० ४/९

यह वाणी संसार में हुंकार भर रही है। खोजने वाले इसकी पहचान करके अंतर का अंधकार मिटा लेते हैं। मूढ़ इसका मूल्य न जानकर विचार नहीं करते। महामति पुकार-पुकार कह रहे हैं।

सीमाएँ :--

आतमने सत परचे पाए, तो भी झूठा दुख छोड़्या न जाए ।
जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबही वण्या निकस ।।

म०कि०ग्र० 76/19

आत्मा को जब सत्य का परिचय मिल जाता है तो फिर उससे झूठे दुख का आवरण छोड़ा नहीं जाता है। जब सच्चे सुख का अनुभव होता है उसका स्वाद लग जाने पर जीव अपनी काया को त्याग कर परमसार की ओर चल पड़ा। अतः सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो जाने पर जीव शरीर के मोह का त्याग कर देता है परमात्मा से प्रेम उत्पन्न होने पर सच्चे सुख की प्राप्ति होती है तथा जीवात्मा शरीर का त्याग कर देता है। फिर उसको आत्म बोध होता है।

जब अद्भुत सुख हिरदे में आवे, अरवा तबही निकस के जावे ।
जब सत सुख धनी पाया , तब जीवरा क्योंकर पकड़े काया।।

म०कि०ग्र० 76/21

सच्चे सुख की प्राप्ति होने पर हृदय में असले, ही, आत्मा नश्वर शरीर से निकलकर प्रियतम में स्थापित हो जाती है। जब प्रियतम का सच्चा सुख मिल जाता है तो जीवात्मा शरीर में कैसे अनुरक्त रह सकती है?

जब अंतर आंखा खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई ।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रहया न पानी ।।

म०कि०ग्र० 76/22

जब अन्तदृष्टि खुल जाती है, तब बाहर की ओर देखना स्वभावत: बन्द हो जाता है। जब अन्तर में प्रियतम की लीला समा जाती है, तब अंग में लहू रहता है न पानी ही ।

जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड ।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब रहे ना रहे कछु नेम ।।

म०कि०पु० 76/24

इस अखण्ड सुख की सुधि जगते ही आत्मा पिंड या ब्रह्मांड में नहीं अटती। प्रेम की भयानक घाटी पर निकलते ही जीव का सारा नेम तो समाप्त हो ही जाता है--- सारे नियम भी टूट जाते हैं ।

जीव और ब्रह्म

व्यवहार में यह कर्ता, भोक्ता, ज्ञाता है परमार्थत: जीव एक आत्मा है। ईश्वर के समान जीव भी सांसारिक है दोनों की सत्ता व्यवहारिक दृष्टि से है पारमार्थिक दृष्टि से न जीव है न ईश्वर यह एक अद्वैत आत्मा या ब्रह्म है। वैसे तो इसमें भेद है।

तुलना

कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग ।
कोई कहे ब्रह्म जीव न दोए, ए सब एके अंग ।।

म०कि०पु० 29/5

कोई कहता है, वह निर्गुण स्वरूप है। सबसे अलग रहता है। किसी से भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। कोई कहता है कि ब्रह्म और जीव दो

पृथक अस्तित्व नहीं । यह एक ही है।

कई लोग इसको ज्योति पुंज मानते है उसी की किरण से सारा जगत है कोई कहता है न तो उसके अंग है न इन्द्रिय। वह निरजन और निराकार है ज्ञानी लोग उसको पुरुषोत्तम और संसार को सारा स्वप्न बताते हैं। कोई कहता है कि सब शून्य है। अतः महामति प्राणनाथ कहते हैं कि मैं जिज्ञासा के कारण पूछ रहा हूँ परात्म के विषय में पूछ रहा हूँ और जब तक इसका उत्तर ठीक से नहीं मिल जाता तब तक मन का बोझ नहीं हटता है।

कोई कहे ए भरम की बाजी , ज्यों खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ।।

म०कि०प्र० 30/3

कोई कहता है, यह संसार भ्रम का खेल है, इन्द्रजाल है। जीव बाजीगर के कबूतरों की तरह खेल रहे हैं। प्रश्न है कि बाजीगर के कबूतर (माया के जीव) बाजीगर (ब्रह्म) को कैसे पा सकते हैं?

कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनि आवे।
जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती, तो अधखिन रहने न पावे ।।

म०कि०प्र० 30/5

कोई कहता है, यह संसार कुछ भी नहीं, मिथ्या है। तो यह भी कैसे मान लिया जाय। यदि इस ब्रह्माण्ड में यह सत्ता न होती तो यह आधा क्षण भी टिक न पाता ।

कलि में देखया न्याम अचंभा

बातन मोहोल रचें अति सुंदर, चेजा थिमी न थंभा ।।

म0कि0पु0 32/1

कलियुग में मैंने आश्चर्यजनक थोथा ज्ञान देखा। बातों के महल तो बहुत सुन्दर बनते हैं, परन्तु उनमें छज्जे, स्तम्भ और आधार कुछ नहीं होते ।

जब माया का मादक सम्मोहन और विष-ज्वर उतर जायेगा तभी अन्धकार नष्ट होगा।

त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे से आ ठाम ।

घर पोतानां दृस्टे आवसे, त्यारे पांमसे विसराम ।।

म0कि0पु0 126/80

जब जीव अपनी पहचान कर उठेगा तो संसार की नश्वरता को त्याज्य समझकर स्वयं इसका मोह त्याग देगा। अपना अखण्ड घर, परमधाम जब दृष्टि के सम्मुखीन हो जायेगा तब उसे सच्ची शान्ति प्राप्त होगी।

चौद भवन जेमे इछे, कोई विरलाने प्राप्त होए।

ए पांमी केम खोइए, तूं तां रतन अमोलक जोए ।।

म0कि0पु0 128/50

चौदह लोक के जीव इस मानव तन को प्राप्त करने के लिए तरसते हैं। परन्तु किसी विरले को ही यह प्राप्त होता है। ऐसा अमूल्य रत्न तुम्हें मिला है। हे जीव ! तू तो उसे यों ही व्यर्थ गँवाए जा रहा है।

अहं ब्रह्म-अस्मी होय के बैठे, तत्वमसी और कहावें।

स्वामी सिक्ष न क्रिया करमी, यों महावाक्य बुढावें ।।

प०कि०पु० 32/3

स्वयं "अहं ब्रह्मास्मि" - मैं ही ब्रह्म हूं और "तत्वमसि" जो तुम हो, वही मैं हूं। का दावा करते हैं। न तो वहां गुरु एवं शिष्य की मर्यादा होती है न क्रिया-कलाप ही । परन्तु आप्त वचनों एवं महावाक्यों को स्वयं चरितार्थ करते हुए अपने ऊपर घटाते हैं।

खट प्रमाण्‍णों ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप ।

माया ईश्वर त्रिगुन हम थें, हमहीं रहे सब में व्याप ।।

प०कि०पु० 32/4

एक ओर तो षड् प्रमाणों से ब्रह्म को अलग मानते हैं, दूसरी ओर स्वयं को ही अद्वैत ब्रह्म घोषित करते हैं। इतना ही नहीं, वे लोग दावा करते हैं कि माया, ईश्वर एवं त्रिगुणस्वरूप, तीनों देवता उनसे उत्पन्न हुए हैं। वे ही सर्व व्यापक हैं।

जीव और माया

अज्ञान का आश्रय ही जीव है और ईश्वर माया का आश्रय है। यह जीव आत्मा है और जीव में शरीर और संसार से सम्बन्ध होने के कारण उत्पन्न होते हैं। अज्ञान के कारण ही असांसारिक आत्मा सांसारिक जीव प्रतीत होता है तथा माया के कारण पर (निर्गुण) ब्रह्म अपर ब्रह्म (सगुण ईश्वर) प्रतीत होता है।

किंदनें सिंध समाया रे साधो, किंदनें सिंध समाया।

त्रिगुन सरूप खोजत भए विसमए, पर अलख न जाए लखाया ।।

प्र०कि०पु० 3/1

यहाँ पर महामति प्राणनाथ आश्चर्य से कहते हुए कह रहे हैं कि बिंदु रूपी माया में सिन्धु रूप परमात्मा अधिष्ठान सत्ता से अथवा प्रतिबिम्ब रूप में व्याप्त है। तीन गुणों { सत, रज, तम } के स्वरूप देव {ब्रह्मा, विष्णु, महेश} इस माया में ही ब्रह्म को खोज -खोजकर हैरान हो रहे है, परन्तु वह अलख देखा न जा सका।

मृगजलसों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे।

अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिंदका बिंदमें समावे ।।

प्र०कि०पु० 3/7

रेत में जल के आभास से यदि मृग की प्यास बुझ जाय तो गुरु के बिना भी जीव पार पा सकता है। कोई कितने भी उपाय कर ले, बिंदु से उत्पन्न यह जीव -बिंदु, माया में ही समा जाता है।

बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम ।

अपनों कियो न देखें अंधे, पीछे रोवें दोस दे दे करम ।।

प्र०कि०पु० 5/4

माया के रहस्य को समझे बिना, बंधनों की सृष्टि करके स्वयं ही उसमें बंध जाते हैं। ऐसे अंधे, अपने कर्मों को नहीं देखते। तदुपरान्त भाग्य की दुहाई देकर रोते -चिल्लाते हैं।

दुख दसों द्वार भेदया, और दुख भेदयो रोम रोम ।
यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहां करें छल भाम ।।

प्र०कि०प्र० 18/2।

दुख शरीर में प्रवेश करके दसों द्वारों (इन्द्रियों) को भेदकर रोम-रोम को बाँध देता है। इस प्रकार नख से शिख पर्यंत व्याप्त दुख जब प्यारा लगने लगे तब सुख के प्रलोभनों में फंसाने वाली छल की सृष्टि (माया) का बल कैसे चल सकता है।

बारीक बातें दुखकी, जो कदी लगे मिठास ।
तो टूट जात है ए सुख, होत माया के नास ।।

प्र०कि०प्र० 18/23

दुख की बातें अति सूक्ष्म है। इसके द्वारा ही माया अपना विस्तार करती है कदाचित् किसी विरला को इसका रस लग जाय और दुःख मीठा लगने लगे तो सुख के आकर्षण छूट जाते हैं। माया का नाश होता है।

रे जीव सरीर मंदिर सोहामनो, चौदह भुमे रे आवास ।
इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास ।।

प्र०कि०प्र० 34/3

हे जीवात्मा! यह देह एक लुभावना महल केवल आवास -गृह के चौदह कोण (दस इन्द्रियां और चार अन्तःकरण) हैं। इनके भरोसे अन्त में निराश ही निकलते हैं।

पीठ चोरावें धनी की, करें मिनो मिने खोज ।
ए देखो बुंदर की जाहेर, देखावे अपना मोज ।।

ऐसी अंगनाएँ स्वामी से तो विमुख होती हैं लेकिन परस्पर खुलकर बाते करती हैं। मन में छुपी कपट पूर्ण बातें उनका मुख प्रकट कर देती है। इस प्रकार वे अपनी तुच्छता स्वयं सिद्ध कर देती है।

> अकर कंदी वीटियो, ढिल म ढिले कांय ।
>
> मालन मनु मुकियूं, मुंके नींह मथाय ।।

प्रा०कि०प्र० 133/11

विकारों एवं आकांक्षाओं के घने बादल घिर-घुमड़ रहे हैं। थोथे ज्ञान प्रदर्शन के प्रबल झंझावात उठ रहे हैं। परमात्मा की दिशा किसी को सूझ नहीं रही जीव रूप मल्लाह की बुद्धि भ्रमित है और ऊपर से विपदाओं की भारी वर्षा हो रही है।

> वा लगी जा विच में, सभ मेर्ड ऊंधाई ।
>
> मालन ढिल मोहाडियो, रह्यो मुंजाई ।।

प्रा०कि०प्र० 133/7

यदि बीच में ही, वायु का झोंका लगा तो सब उलट जायेगा। रे जीव, तू दोकस होकर सामने देख। माया की विकराल लहरें चतुर्दिक उमड़ी है, उन्हें देखकर तू निराश क्यों हो रहा है?

> लेहरं डुंगर जेडियूं, विच्चे ढिम थका ।
>
> हाणें हयें नींहणम नाखुदा कंदे गाल हथां ।।

प्रा०कि०प्र० 133/12

वासनाओं एवं कुवृत्तियों की अत्यन्त वेगवान लहरें पर्वत के समान उठ-गिर

रही है। वे चित्त को अस्थिर बनाकर ठेल रही हैं। अब धैर्य और संकल्प का लंगर लगा कर अपनी सुरत को सँभाल ले। नहीं तो अभी बनायी बात हाथ से निकल जायेगी।

जीव और जगत

स्वामी श्री निजानंदाचार्य देवचन्द्र जी ने प्राणीमात्र के कल्याण की कामना के लिए निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना की । उन मूल तत्वों का समावेश करके यह बताया कि जीव और जगत का क्या सम्बन्ध है। और इस नश्वर जगत में क्यों आनापड़ा। आत्मा को जगत का मोह चारों ओर से घेरे रहता है।

> कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों कहि आवे।
> जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती , तो अखण्ड रहने न पावे ।।
>
> प्र०कि०प्र० 30/5

कोई कहता है, यह संसार कुछ भी नहीं, मिथ्या है। तो यह भी कैसे नाम लिया जाय । यदि इसमें ब्रह्माण्ड की सत्ता न होती तो यह आधा क्षण भी टिक न पाता। अर्थात जीव में ब्रह्म सत्ता है।

> यामें जीव दोए भांत के, एक खेल दूजे देखनहार ।
> पेहेचान न होवे काहू को, आड़ी पड़ी माया मोह ।।
>
> प्र०कि०प्र० 31/12

इस संसार में दो प्रकार के जीव हैं, एक नाटक के पात्र हैं दूसरा द्रष्टा। इन दोनों को पारब्रह्म की पहचान नहीं, क्यों कि इनके बीच भी माया मोह एवं अहंकार का पर्दा पड़ा रहता है। यह खेल अर्थात संसार का नाटक है जिनके लिए रचा गया वह कोई अग्नी आत्मायें ही हैं। जब तक वह प्रकट नहीं होती तब तक माया , मोह, अहंकार का पर्दा हट नहीं सकता ।

तेज तिमिर यामें फिरें, रवि, ससि तारे न फिर ।

सेस नाग कर ब्रह्माण्ड, ले धरयो वाके सिर ।।

प्र०कि०प्र० 28/10

प्रकाश - अंधकार इससे होकर इसी में समा जाते हैं। सूर्य, चन्द्र, सितारे सब उसी के घुमाये घूम रहे हैं। कुछ भी स्थिर नहीं । इसी ने शेषनाग को रचकर ब्रह्मांड को उसके सिर पर धर दिया।

वैसे जगत और जीव का मार्मिक सम्बन्ध है। उपनिषदों में भी इसका उल्लेख है। मृत्यु के पश्चात् जीव का सम्बन्ध जगत और शरीर से समाप्त हो जाता है जिसको कि हम मुक्त की संज्ञा देते हैं।

जीव के मोक्ष के उपाय

जब मनुष्य शरीर के मोह का त्याग करता है तो जीव की मुक्ति होती है और वह कर्म के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति करता है। यह जीव जो शरीर में बार बार आता जाता रहता है इसी से रहित हो जाना मोक्ष है। और श्री प्राणनाथ ने मोक्ष प्राप्ति के लिए सद्गुरु, जाग्रत (जीव-आत्मा), कलियुग, भरत खण्ड मोक्ष प्राप्ति के साधन बताये हैं।

अतः महामति प्राणनाथ कहते हैं--

> वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार ।
>
> उत्तम मानखो ओ भरथनों, श्रेष्ठ कुली सिरदार ।।
>
> म०कि०प्र० 125/1

मनुष्य का उत्तम शरीर , भरत खण्ड, श्रेष्ठ कलियुग और यो त्यतम सतगुरु-इन चार पदार्थों को पाकर भी तुम व्यर्थ ही इस मनुष्य सुयोग और सम्पदा को क्यों गवां रहे हो।

अतः महामति कहते है कि--

> अशुभ करम जेम लिए निंदा , शुभ करम मामना लेई जाए ।
>
> गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोंचे थाए ।।
>
> म०कि०प्र० 131/14

अशुभ कर्म करने से जिस प्रकार निंदा होती है, उसी प्रकार शुभ कर्म करने से उसका फल प्रशंसा में मिल जाता है। ऐसे यश एवं प्रशंसा चाहने वाले वे शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं। इस लिए गुप्त साधन करो, जिससे जीव को सुख प्राप्त हो। अर्थात महामति इसमें कहते है कि जब मानव को एक ही कर्म करने से इस प्रकार प्रशंसा मिल जाती है तो अन्य प्रकार के कर्म का वर्णन में क्या कहूं।

कर्म मानव स्वभाव है और कौन से कर्म का क्या फल है इसी कर्म को विवेक पूर्ण चुनाव मानव को मोक्ष की ओर ले जाती है। महामति प्राणनाथ के अनुसार मानव अज्ञान के कारण अपने कर्मों का उपभोग करने के लिए जीव बार -बार जन्म लेता है। संसार में रह कर कर्म करना ही पड़ता है और

मोक्ष की प्राप्ति अनन्य प्रेम के द्वारा ही मिल सकती है।

> तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोए ।
>
> अहेनिस प्रीते प्रेमसुं रामिए, तीरथ एही वेरे होए ।।
>
> न०कि०प्र० 126/23

अपने चित को एकाग्र एवं एकान्त कर लिया जाना ही तीर्थ है। कर्म बन्धनों से मनको मुक्त ही रखा जाये। दिन -रात प्रियतम परमात्मा से प्रेम पूर्वक रमण किया जाये। सच्चा तीर्थ तो इसी तरह से होता है। निर्मल कर्म से मन या हृदय शुद्ध होता है।

> ज्यारे जीवनी भोरछा भागी, त्यारे उडी गयुं अगनान ।
>
> करमनी कालस केम रहे, ज्यारे मल्यो श्री भगवान ।।
>
> न०कि०प्र० 126/81

जीव की मूर्छा या संसार का भ्रम दूर हो जाने पर अज्ञान तो नष्ट हो जाता है। जिसका श्री भगवान से मिलन हो जाये, उसके मन पर कर्म की कालिमा कैसे पड़ी रह सकती है?

परमात्मा को पाने के लिए निष्काम कर्म और प्रेमभक्ति आवश्यक है इसके बिना अखण्ड सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है। और उसको बेकार समझ कर जाने नहीं देना चाहिए।

महामति प्राणनाथ ने मोक्ष और मुक्ति को पाने के लिए इस एकमात्र साधन प्रेममय भक्ति मानते हैं मुक्ति का अर्थ माया के बन्धन से मुक्त हो कर अखण्ड सुख की प्राप्ति है। अतः महामति कहते हैं कि:--

विचल गई मन वार पारकी, और अंग न कछुए सान ।

पिया रसमें यों भई मतान्त, प्रेम मगन क्यों करसी गान ।।

म०कि०पु० 26/4

उसे तो इस या उस का भी ज्ञान नहीं होता । न ही अपने शरीर के अंगों की सुधि ही । प्रियाा के प्रेमरस में इस प्रकार पगी मतवाली महामति क्या गायेगी? अतः महामति प्राणनाथ की दृष्टि में प्रतिक्षण परमात्मा के प्रेम में मग्न रहना ही, वास्तविक भक्ति अथवा मोक्ष है। सभी सहज कर्म स्वतः आराध्य को अर्पित हो जाते हैं।

जगत

इस प्रकार दार्शनिक दृष्टि से स्थूल ब्रह्माण्ड को जगत की संज्ञा दी जाती है। जगत के प्रति मानसिक या काल्पनिक जीव की जो प्रतिक्रिया है उसी को दार्शनिक दृष्टि से माया की संज्ञा दी गयी है। इस प्रकार जगत स्थूल है माया काल्पनिक है। ब्रह्म की लीला शक्ति को भी माया की संज्ञा दी जाती है। माया और संसार पर्यायवाची हैं। इस प्रकार स्थूल जगत में रहते हुए जीव जो अज्ञानता जनित काल्पनिक दृष्टिकोण अपनाता है वही संसार है, यही माया है। जगत और माया एक दूसरे के पूरक हैं। माया के द्वारा भगवान ने इस संसार की रचना की और जगत ब्रह्म की ही लीला है। महामति प्राणनाथ ने अपनी हररचना में ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष आदि पर अपने अलग-अलग विचार दिए हैं।

सुनो भाई संतो कहूं ऐ महंतो, तुम अखंड मंडल जाग पाया ।
वैस्नव बानी पूछो गुरु स्वामी, फेरा अंधेर धंधा क्यों ल्याया।।

म०कि०पु० 11/1

हे भाई संतजनों (हे महंत जनों) मैं आपको जो कहता हूं, उसे सुनिए। आप ने इसी जगत् में ब्रह्मंडल को अखंड धाम प्राप्त किया है। अपने आमी गुरुजन से पूछिए कि वैष्णव-वाणी का क्या आशय है? उसे पढ़कर भी आप अर्थ का अनर्थ करके अन्धकार क्यों फैला रहे हैं? महामति प्राणनाथ कहते हैं कि---

इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख ।
अपने माशुकसों मेहेरा, तोको देयगी बनाए के दुख ।।

म०कि०पु० 17/10

इस स्वप्नवत जगत् के दुःखों से मत डरो। इन दुखों के बदले अखंड सुखों की प्राप्ति होगी। यह दुख ही तुम्हारे मन में प्रियतम का प्रेमोन्माद उत्पन्न करेगा।

देत काल परिक्रमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए ।
गिनती सरत पोहोंचाए के, आखर सबे उड़ाए ।।

म०कि०पु० 74/9

अंधकार और प्रकाश, रात और दिन का चक्र पूरा करके काल इनके आस पास परिक्रमा करता है। समय का चक्र, श्वासों की गिनती पूरी होते ही, अन्त में यही काल सबको उड़ा देता है।

आपोपूं त्याहां आंधीमें आवे, सरवा अंगे दुख मन ।
रात दिवस सेवा करे, पण आशाओं बहु जन ।।

इन सब मोह में फंस कर स्वयं मानव इस तरह जकड़ जाता है रात-दिन सगे सम्बन्धियों में लीन हो जाता है। संसार के सारे मानव इसी तरह रागबद्ध हैं।

> पीठी आवे चले ततखिण, जाए ते करता काम ।।
> जाकी सेवा जेहनी करता, ते दिए छे हाथ अगिन ।।

म०कि०पु० 125/28

यमराज की चिट्ठी या काल-संदेश मिलते ही तत्काल निकलना पड़ता है। सब कुछ छोड़कर मनुष्य रोता कलपता निकल पड़ता है। जिसकी वह बहुत सेवा किया करता था, वे ही अपने हाथ से आग लगाकर उसे जला देते हैं।

> आप तणी सुध बीसरी, कोई ओलखाए नहीं पर ।
> तेमां सगा संबंधी थईने बेठा, कहे आ अमारं घर ।।

म०कि०पु० 125/26

संसार के झगड़ों में अर्थात माया जाल में फसकर अपनी सुधि मानव भूल जाता है अपने और पराये में अन्तर नहीं दिखाई पड़ता है या तो दूसरे सगे सम्बन्धी बन बैठते हैं और कहने लगते है कि यह हमारा घर है।

> ए इंड जो पैदा किया, ए जो विश्व चौदे भवन ।
> इनमें सुध न काहू को, ए उपजाए किन ।।

म०कि०पु० 74/10

सब यही कहते हैं कि यह विश्व, चौदह भवन उत्पन्न किया है। यह सब किसने उत्पन्न किया, किसी को भी यह सुध नहीं पड़ी ।

बाट न पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार ।
ऊपर तले माहें बाहेर, गए कर कर ग्यानी विचार ।।

प्र०कि०प्र० 74/4

इस झूठे भवसागर में किसी को भी बाट और मार्ग का पता ठिकाना नहीं पता है दिशा और द्वार का भी पता नहीं चलता है। ऊपर नीचे, अंदर-बाहर सब ओर ठोक-बजाकर देखने वाले तथा कथित ग्यानी जन भी अपने थोथे भाषण देकर चले गये।

स्वरूप :—

आतम रोग मिटावने, प सुख कहों माहें सब्द ।
बेहद के पार के पार सुख, सो मैं बताऊँ माहें हद ।।

प्र०कि०प्र० 73/18

माया के लगाव से जो भ्रम का रोग लग चुका है। उसे मिटाने के लिए परात्म के सुख को संसार के शब्दों में कहना है। बेहद के पार का सुख मैं थोड़े बहुत शब्दों में सीमित ब्रह्माण्ड, नश्वर जगत् में प्रकट कर रहा हूँ।

मेरे केहेना ब्रह्म सृष्टि को, बल मन जुबाँ माफक ।
झूठी जिमिएँ पाही सास्तरों, जाहेर कर देऊं हक ।।

प्र०कि०प्र० 73/19

इस मन और जिह्वा की सामर्थ्य अनुसार ब्रह्मसृष्टि को जाग्रत करने के लिए मुझे कुछ कहना है। मैं नश्वर जगत् के साधन और इन्हीं शास्त्रों के ज्ञान द्वारा

सत्य को प्रकट कर रहा हूँ।

> जीवें बातन अंधी करी, मिल अंत करन अंधेर ।
> गिर दवाए अंधी इन्द्रियाँ, तिन लई बातम को घेर ।।

प्र०कि०प्र० 74/5

यहाँ जीव ने अन्त:करण से मिलकर अंतरात्मा को अंधा बना दिया है। अंग-अंग को वशीभूत करने वाली अंधी इन्द्रियों ने चारों ओर से आत्मा को घेर लिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह जो पाँच तत्व है, चन्द्र, सूर्य, तारे, नक्षत्र यह सब त्रिगुण और निगुण इसी वृत में घूम रहे हैं।

> ए चौदे पलमें पैदा किए, पाँच तत्व गुन निरगुन ।
> याही पलमें फना हुए, निराकार सुंन निरंजन ।।

प्र०कि०प्र० 74/7

ये चौदह लोक और पाँच तत्व, गुण, निर्गुण, निराकार और शून्य, निरंजन सहित पल-पल पैदा होते हैं और उसी क्षण विनष्ट हो जाते हैं।

> ए चौदे चुटकी में उड़ जासी, गुन निरगुन सुंन्य तत्व ।
> निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत ।।

प्र०कि०प्र० 74/8

ये चौदह लोक चुटकी बजाते ही नष्ट हो जाते हैं। गुण, निर्गुण, शून्य, निराकार और निरंजन ये सारे असत्य की तरह ऐसे उड़ जायेंगे- मानो ये कभी थे ही नहीं।

महाविष्णु शुन्य प्रकृति, निराकार निरंजन ।
ए काल द्वैत को को है, ए भी सुध नहीं त्रिगुन ।।

म०कि०पु० 74/24

महाविष्णु शुन्य प्रकृति, निराकार और निरंजन आदि द्वैत भाव (माया) का काल, इनको समाप्त करने वाला, अद्वैत स्वरूप कौन है। इसकी सुधि त्रिगुण त्रिदेवा तक को नहीं।

पुले पैदा की सुधि नहीं, तो ए क्या जाने अक्षर ।
लोक तिनों आसमान के, इनकी याही बीच नजर ।।

म०कि०पु० 74/25

जिन्हें उत्पत्ति और लय की ही सुधि नहीं, वे अक्षर ब्रह्म के विषय में क्या जाने? इनकी दृष्टि तो आसमान और जमीन के बीच के नश्वर चौदह लोकों तक ही सीमित है। अर्थात् जो त्रिगुण के त्रिदेव हैं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) इस ब्रह्मांड के ईश हैं। इनको भी अभिज्ञान नहीं है कि हम कहाँ से आए हैं और सारे संसार एक मात्र किसकी सत्ता है?

असत मंडलमें सब कोई भूलया, पर अखंड किने न बतायया।
नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया ।।

म०कि०पु० 3/3

सब इसी असत्य नश्वर ब्रह्मांड में ही भूले हुए हैं, अखंड अविनाशी परब्रह्म का परिचय किसी ने नहीं दिया। विस्मृति की नींद में सोये हुये भ्रम का खेल खेल रहे हैं। जागते हुए इस खेल को कोई नहीं दिखा पाया।

सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे साँच ढँपाया।

असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेख न पाया ।।

न०कि०पु० 3/4

नींद में स्वप्न की भाँति सृष्टि की रचना और शून्य से विराट विश्व की उत्पत्ति हुई। असत्य के विस्तार ने सत्य को ढक लिया। माया जन्य जीव स्वयं असत है। वह सत्य को कैसे देख सकता है और फिर सत्य मार्ग का ब. भी नहीं है। मिट्टी और पत्थर से बने हुए मन्दिर और मस्जिद को ही अपना घर मान लेते हैं उन्हीं को पूज्य मानकर अपना पूजा का स्थान बना लेते हैं। और जो अपने शरीर को पूज्य मानते है अर्थात उन्हीं से उनको स. आराम मिलते हैं। महामति प्राणनाथ कहते है कि यह सब एक छलावा है।

साधो केहेर कही करामात, ए दुनियां तिन रावे ।

झूठी दृष्टि जो बांधी झूठसों, तामें दिल ना लगत सांचे ।।

न०कि०पु० 21/63

साधु जनों के चक्कर में पड़कर उनके चमत्कार में आकर साधना पथ के लिए घातक बताया है। दुनिया के लोग इसी में रचे-पचे हैं। इनकी झूठी दृष्टि झूठ प्रपंच से बंधी होने के कारण सच्चाई में मन नहीं लगता।

यह एक भ्रम की नींद है अन्धकार छाया की तरह है। इसी लिए महामति प्राणनाथ कहते है कि -

नयां अंकर देख जर, नजर न किने कोए।

फिरी सब बटावधूं, नाखत झूठ न पोष ।।

ऊपर शून्य आकाश, नीचे भौजल और चतुर्दिक भ्रम की नींद का विस्तार । प्रकाश दिखाकर राह सुझाने वाला कहीं कोई नक्षत्र भी तो दिखाई नहीं देता घटाटोप अन्धकार छाया है। ओ भोले नाही। क्या तुझे इसकी कुछ भी खबर है नहीं। यह एक स्वप्न की भांति है। जो एक विकार है।

अंत आहार सूकर कूकर को, या कौआ कीड़ा खाए ।

या तो अग्नि जलाए के, करवे खाक उड़ाए ।।

म०कि०ग्र० 106/10

मरने पर यही शरीर सूअर और कुत्ते का आहार बनता है। अन्यथा, इसे कौए या कीड़े खा जाते हैं। या फिर इसे अग्नि में झोंक कर राख बनाकर उड़ा दिया जाता है।

सीमाएँ :—

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि इसकी सीमाएँ निश्चित है क्यों नहीं इसका सदुपयोग करते हो।

छिन एक लेहु लटक भजाए

जनमतही तेरी संग छूटो, देखत ही मिट जाए ।।

म०कि०ग्र० 48/1

इस एक क्षण के अमूल्य सुयोग को भुना ले समय का सदुपयोग कर। जन्म से ही मृत्यु संग लगी हुई है। शरीर नश्वर है। देखते ही देखते मिट जायेगा। यह क्षणभंगुर संसार है यह हाथ से निकल गया तो फिर नहीं मिलने वाला है।

सृष्टि जिन-जिन स्थानों से आई है उसे अपने अपने स्थान पहुँचना है।

लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल ।
सो पाँच तत्व को छोड़ के, आगे ना सके चल ।।

प्र०कि०पु० 73/27

धरती से आकाश तक जगत् के सभी जीव स्वप्न में विचरण करते रहते हैं। पाँच तत्वों को छोड़कर वे आगे भी बात सोच सकते । उनकी दृष्टि में जड़ जगत् ही अन्तिम सत्य है।

ए लगे दोऊ सुंन को, निराकार शामिल ।
निरंजन या निरगुन, सो भी रहे इन मिल ।।

प्र०कि०पु० 107/2

चौथे ज्ञान के असत्य शब्द इस ब्रह्माण्ड में सत्य कहे जाते हैं। मिथ्या ज्ञान और नश्वर ब्रह्माण्ड अपने झूठे अस्तित्व के कारण काँच के पिंड की तरह असत्य हो जाने वाले हैं।

यह नश्वर जगत् शून्य से उत्पन्न हुआ है। और शब्द भी उसी निराकार सहित शून्य के वर्णन में लगे हैं। उनसे निकलकर उसी में समा जाते हैं। निरंजन और निराकार भी इसी में शामिल हैं। यही इनकी सीमा है।

ए प्यारे को क्यों पावहीं, वेदान्त सारी इन ।
सत सब्द ब्रह्माण्ड में आया, पर ना छोड़े कोई सुंन ।।

प्र०कि०पु० 107/4

अन्धकारमयी माया से उत्पन्न ऐसे पिण्ड अपने से सर्वथा अलग अविनाशी

पर ब्रह्म को कैसे पा सकते हैं? सत्य ज्ञान के शब्द भी इस संसार में प्रकट हुए हैं, परन्तु शून्य को कोई छोड़ना नहीं चाहता। अर्थात् अज्ञान और ज्ञानी कहलाने वाले लोग संसार में विभिन्न प्रकार के खेल रचाए बैठे। यह जगत और संसार की सीमाएं नश्वर संसार के लक्षण है जो की एक क्षणभंगुर है। अतः महामति प्राणनाथ कहते हैं कि मृत्यु निकट आ पहुंचा है अपनी आँखें अब भी नहीं खोलता।

हिलोरें जोर लेवे पियाँ, अने कुवाँ पछाड़ें खाय।
पोप तूं कहे उघीने पापी, पाणी फिरदे मथाय।।

म०कि०ग्र० 133/14

भवसागर में बाह्य रूप से संसार की अनन्त वेगवान लहरों के साथ अन्तर में उठने वाले भंवर तुझे पछाड़ रहे हैं। प्रतिक्षण तेरा प्राण काँप रहा है। हे पापी, तु फिर कब चेतेगा।

उतपन प्रेम पारब्रह्म संग, ताको सुपन हो गयो संसार।
प्रेम बिना सुख पारको नाहीं, जो तुम करो अनेक आचार।।

म०कि०ग्र० 9/6

जब अंतर में प्रियतम का प्रेम उत्पन्न हो जाय तो सारा संसार स्वप्नवत् भासता है। बाह्य शुद्धि के लिए तुम कितने ही आचार-विचार क्यों न कर लो, प्रेम के बिना पार सुख नहीं मिलता। अर्थात् परमात्मा सत्य है और सत्य ही परमात्मा से मिला सकता है महामति तो इससे भी न्यारे हैं। सत्य का संकल्प लेकर उसका पालन करो। जब तक प्राण है सत्य त्याग मत

करो चाहे कितनी भी विपदायें आएं तो भी सत्य को मत छोड़ो।

ए नायें लेसे तेने कहुं छु, बीजा मा करजा दुख ।

तमें तमारी माया मांहें, सहेजें भोगवजो सुख ।।

प्र०कि०पृ० 128/31

मैंने अब तक जो कुछ भी कहा है वह सब स्थिर मेरे वाले, विश्वासपूर्वक मानकर चलने वालों के लिए ही कहा है। अन्य लोग अन्यथा दुखी न हों। तुम अपनी माया में सहज ही सुख भोगते रहो। अर्थात विश्वास से दुख की ओर फिर मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

मायाः (माया या संसार)

माया क्या है? और इसकी उत्पत्ति कैसे हुई इसका विस्तार से वर्णन महामति ने कुलजम में दी है। और सब में भिन्न भिन्न प्रकार की उत्पत्ति की जानकारी दी है। माया का आधार एक भ्रमात्मक अज्ञान है। सारा संसार प्रतीति मात्र है।

नाम :--

माया का एक प्रकार से नाम कलमना है। ब्रह्म और जीव तथा जगत् के सम्बन्ध की परिभाषा की संज्ञा उनके दर्शन में माया है। संसार के अनेक कर्मकाण्ड माया का आवरण है।

कोई सुख न पावे याकी, ऐसी माया सरानी ।

आपे प्रभु आपे सेवक, माहि माहि दरवानी ।।

यह माया ऐसी विलक्षण बुद्धिशाली है कि कोई इसका रहस्य जान नहीं पाता यह स्वयं ही स्वामी बन बैठती है। स्वयं सेवक बन कर सेवा करती है। इस तरह लीला रचकर वह स्वामी -सेवक दोनों को एक दूसरे में उलझाये रखती है।

> माया मोह अहंकार के, ए सबे उतपन ।
>
> अहंकार मोह माया उड़ी , तब कहाँ है ब्रह्म ग्यान ।।

म०कि०पु०29/2

माया मोह अहंकार से सब कुछ उत्पन्न हुआ अहंकार, मोह और माया सभी उड़ जायेंगे तब ब्रह्म का ज्ञान कहाँ रहेगा?

> कोई न पोहोंतो इहाँ लगे, एहमों बोली मारे प्रताप जी ।
>
> आ पाँचे एहनी छाया पडी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी ।।

म०कि०पु० 69/8

शून्य तक भी हर कोई नहीं पहुँच पाता। सभी इसके प्रताप से संत्रस्त रहते हैं। ये पाँच तत्त्व भी इसी के छाया रूप हैं। शून्य मण्डल का ही सारा विस्तार है।

> चौदे भवन मन पसरी अविद्या, मुझको खेल खुदाई।
>
> प्रकट नाम व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई ।।

म०कि०पु० 6/3

चौदह लोक, पाताल से देवलोक तक के जीव इसी माया के अन्धकार में भटक रहे हैं। अविद्या का यह विस्तार ऐसा है कि इसमें सभी छटपटा रहे हैं।

व्यास मुनि ने स्पष्ट शब्दों में दुहाई दे- देकर इस प्रत्यक्ष जगत को नाशवान बताया और शुकदेव मुनि ने भी इस घोषणा की साक्षी दी। कहने का तात्पर्य कि सारे मान, अभिमान अहंकार छोड़ दो।

माया की रचना

महामति प्राणनाथ ने इस जगत में माया की रचना का वर्णन किया है कैसे इस जगत में भाँति-भाँति के खेल, स्वांग रचा कर त्यागी लोग नाच गा रहे है यह सब माया की ही रचना है।

ए भरम बाजी रची रामत , बहु विधे संसार ।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार ।।

प्र०कि०पु० 8/5

इस संसार में भाँति भाँति के खेल भ्रमपूर्ण चमत्कारी रचे गये हैं। आँखें जिन्हें देख रही है या कान जो कुछ सुन रहे है, वह सब बिना मूल के ही माया का प्रपंच विस्तार है।

यह संसार एक पहेली के समान है और श्री मद्‌भागवत् में भी इसका रहस्य छिपा हुआ है।

छल मोटे अगने अति छेतरया, थया हेया अंधारा न सेहेवाए भार ।
कहे महामती मारा धणी धामना , राखो रोतियो सुख देओ मे करार

म०कि०पु० 38/4

इस छलपूर्वक छल ने हमें बुरी तरह ठग लिया। कलेजा छलनी हो चुका है अब इसकी मार नहीं सही जाती। महामति कहते हैं, हे मेरे धाम धनी। अपनी

रोती हुई आत्माओं को शरण में लेकर सुख और शान्ति प्रदान करो।

सो रे वरसनी जटा बंधाणी, ते केम छोड़ी जाय ।

अंतकाल सुरझावा बेठा, लेई ने किसी हाथ माहें।

म०कि०पु० 126/56

अर्थात अज्ञानता का जो मोह है वही माया है। सौ -सौ वर्ष तक की बढ़ायी गयी जटायें किस प्रकार सुलझायी जा सकेगी? जीवन के अन्तिम प्रहर में कोई कंघी हाथ में लेकर उन्हें सुलझाने बैठ जाये तो सुलझायी नहीं जा सकेगी। कर्मों के बंधन बहुत कठोर हैं यह किसी भी प्रकार छूटने नहीं आते ।

वली एक वाट कही करी, ते तत्खिण कीधी लोप ।

तिहाँना हता ते चाल्या, पण रही ते मायामां गोप ।।

म०कि०पु० 128/24

इसके अलावा एक और तीसरा मार्ग बताकर, उसे तत्क्षण गुप्त कर दिया गया है। शास्त्रों ने प्रकट उसके विषय में नहीं कहा। जो वहाँ के रहने वाले थे, वे स्वयं ही उस पर चल दिए। प्रेम लक्षणा भक्ति के द्वारा परमात्मा को पाने की वह राह माया में छिपी ही रह गयी।

नाया की प्रवृत्ति

माया का कोई आकार नहीं है फिर भी संसार की रचना की, अज्ञानता से उत्पन्न संसार को जन्म दिया। यह मोह, माया और अहंकार से उत्पन्न हुआ है। और यह आत्मा जो सबमें व्याप्त है उसका सम्बन्ध परात्म से है इन दोनों के बीच माया जाल फैला हुआ है।

मात पिता बिन जननी, आपे आप पिंड ।
पुरुष अंग छुयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड ।।

न०कि०प्र० 28/4

इसके एक तो माता पिता नहीं है। दूसरे शरीर से बांझ है। पुरुष के शरीर का स्पर्श पाये बिना ही यह सारे संसार की जन्मदात्री बन गई। कहने का तात्पर्य इसका कोई आदि और अन्त नहीं है यह एक अदृश्य और अगोचर है।

गगन पाताल मेर सिखरों, अस्टकुली अनाए।
पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए ।।

न०कि०प्र० 28/9

इस माया ने आकाश से पाताल तक सुमेरु पहाड़ के शिखर और आठ पर्वतों के समूहों को रच डाला। इसी के अंतर्गत पचास कोटि योजन धरती और सात सागर समा गये।

देव दानव रिखी मुनि, ब्रह्मग्यानी बड़ी मत ।
सास्त्र बानी सब्द मात्र, ए बोली सबे सरस्वत ।।

न०कि०प्र० 28/11

देव, दानव, ऋषि और बुद्धिमान ब्रह्मज्ञानियों के मुख से इसी माया ने सरस्वती रूप होकर शब्दों के द्वारा शास्त्रों की रचना करायी। यही माया चारों वर्णों के नर-नारियों को चौदह विद्या में निपुण बना देती है। फिर मोह और नींद का आवरण डालकर उन्हें नचाती है। यह तो जड़ चेतन में अनादि काल से समायी है।

कोई कहे ए पुरुष प्रकृति, मिल रचियो ऐसा यह ।
तो सूरज दृष्टें क्यों रहे अंधेरी, ए भी बड़ा संदेह ।।

प्र०कि०पु० 30/7

कोई कहता है कि यह संसार पुरुष और प्रकृति के संयोग से बना। फिर सूर्य रूप ब्रह्म दृष्टि के सम्मुख अन्धकार रूप माया कैसे टिक पायी? यह भारी संदेह मन में रह जाता है। कुछ ज्ञानियों के अनुसार यह सब स्वप्न है। इसका स्वामी इससे न्यारा कोई और है। तब तो यह स्वप्न जब उड़ जायेगा तो इसके स्वामी कहाँ होंगे?

कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैत को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार ।।

प्र०कि०पु० 30/12

कई लोग तो कहते हैं, अद्वैत ब्रह्म की ओट में ही इस माया या द्वैत का विस्तार है। इस द्वैत को छोड़कर किसी ने अद्वैत का निश्चय नहीं किया।

जेती कुजरगी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार ।
कुफरों में कुफर कुजरगी, काम क्रोध अहंकार ।।

प्र०कि०पु० 102/4

इस संसार में मिली सारी प्रतिष्ठा, कृतघ्नता और अविश्वास में परिणत हो जाती है। यह बड़प्पन सबसे बड़ा अधर्म है और परमात्मा से विमुख करने का अचूक अस्त्र। काम, क्रोध और अहंकार इसके पिछलग्गू हैं।

इन माया में कोई कुजरगी, झूठ खुदा जो लेवे ।
सो लेहेकीक आपे अपना, पाया फल सोभी खोवे ।।

परमात्मा को छोड़कर, इस मायावी संसार में जो व्यक्ति बड़प्पन हथियाना चाहता है, वह निश्चय ही अपनी उपासना एवं सेवा से पाया हुआ लाभ भी खो देता है।

माया का स्वरूप

माया के स्वरूप को समझा नहीं जा सकता है। महामति प्राणनाथ ने जो विचार माया के सम्बन्ध में बताया है उपनिषद, वेद, गीता के आधार पर है और माया का सुन्दर विवेचन किया है। और कहा कि सत् को असत् और असत् को सत् समझ लेने का नाम ही माया है जो शरीर को, आत्मा को ब्रह्म और जगत को सत्य ने वह वास्तविक रूप है।

जो ना कछू नाम नाम ना ठाम, सो सत साईं निराकार ।
भरम को पिंड असत जो आपे, सो आप बोलत आकार ।।

म०कि०पु० 5/8

दृश्य जगत् में जिसका नाम-धाम-ठिकाना नहीं, उस सत्य परमात्मा को निराकार घोषित करने वाले भ्रम के पिंड, ये माया के पुतले, क्षण-क्षण छीजने और असत् हो जाने वाले स्वयं को आकारवान मान बैठते हैं।

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार ।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ब्यार ।।

म०कि०पु० 25/1

रे मन! तू महामति को न बिसार। संसार का व्यवहार देखकर — अपना आप संभाल ले। यह दुनिया दीवानी नहीं। यह तो माया का रचा कल्पना-जाल है।

असत्य या भ्रम उसी को कहा जाता है, जिसका नाश होता है। शुकदेव और व्यास जी भी कहते हैं कि ये चौदह लोक, समस्त ब्रह्माण्ड क्षणभंगुर हैं। चुटकी बजाने में नष्ट हो जाता है यह माया का स्वरूप है।

कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत खोजी पर पर ।
अद्वैत कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैत को विस्तार ।।

म०कि०प्र० 30/11

कोई कहता है कि अद्वैत ब्रह्म के कारण द्वैत (माया) में बार म्बार खोजा। क्योंकि यदि अद्वैत के विषय में माया से हटकर कुछ कहा जायेगा तो सिर धड़ से अलग होकर गिर पड़ेगा। इस माया या द्वैत का विस्तार अद्वैत ब्रह्म की ओट में ही है। और द्वैत को छोड़कर अद्वैत को किसी ने निश्चय नहीं किया।

कलियुग का वर्णन करते हुए महामति प्राणनाथ कहते है कि पूर्ण एवं अथाह मोहजल की ऊँचाई एवं गहराई की माप जोख नहीं हो सकती ।

अथाह थाह नहीं ऊँचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए मोह जल ।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याको कोई न पावै कल ।।

म०कि०प्र० 60/2

चतुर्दिक विस्तृत इस मोह से उत्पन्न जीव इसके चौदह लोकों में नाना प्रकार के खेल रहे है, परन्तु उसकी कला और कौशल का पार नहीं पा सकते । कलियुग ने सत्य पे पर्दा डाल रखा है।

किन माया पार न पाइया, किन कह्यो ना मूल वतन ।।
सब्द न कह्यो कोई ब्रह्म को, कहे उत चले ना मन वचन ।।

न तो किसी ने माया को पार पाया अर्थात् इसके स्वरूप को समझ नहीं सका और न ही मूल अक्षर की बात कही। ब्रह्म के अन्त:स्वरूप पर किसी ने प्रकाश नहीं डाला। सब यही कहते रहे कि वहाँ मन और वचन नहीं पहुँचते।

पिंड शरीर और ब्रह्मांड के बीच उसे कुछ भी है, शास्त्रों ने इन्हें नाशवान बताया है। अत: महामति प्राणनाथ कहते हैं कि --

विसरामनी क्यर बोलनी, तूं सुन न सुजाणी।
हीकनी कंधीअजी, तूं पसे न पाणी॥

प्र०कि०प्र० 133/16

इस मूल, माया के भव सागर का किनारा, यह मानव तन मिल गया है, ऐसा जानकर भी रे मानी! तू अकारण ही प्रसन्न हो रहा है। किनारे के निकट फिसलन भरी काई और उसके नीचे प्राणघाती गहरा जल तुझे दिखाई नहीं दे रहा है। यदि तूने विवेक से काम नहीं लिया तो इसमें भी डूब जाने की आशंका है।

गुण :-

समस्त ब्रह्मांड महाशून्य में से उठने वाले बुलबुलों की तरह है, जो उससे प्रकट होकर उसी में समा जाते हैं अर्थात जो माया से उत्पन्न होता है और माया में ही समा जाता है। यह ठगनी माया है जो चौदह लोकों को बांध लिया है। महामति प्राणनाथ माया की शक्ति बताते हुए कहते हैं कि --

रे मन मिथ्या न बूझे तेरी आकृत प्रतिबिंब पकड़यो न जाय।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाय॥

प्र०कि०प्र० 25/2

हे मन ! मृगजल से तेरी प्यास बुझ नहीं सकती। प्रतिबिम्ब को कभी पकड़ा नहीं जा सकता। जिस प्रकार जल के जीव जल बिना रह नहीं सकते— इसी प्रकार चाहे तू कितने उपाय कर ले, माया के जीव माया के बंधन में ही रहेंगे। माया में परब्रह्म की पहचान नहीं रह जाती है इस संसार में दो प्रकार के जो जीव है (पात्र और दृष्टा) इनके बीच माया, मोह, अहंकार का पर्दा पड़ा है।

लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान ।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी चारों खान ।।

म०कि०प्र० 23/13

इसने चौरासी लाख योनियों में पड़े जीव जन्तुओं को बड़ी युक्ति से काल बंधन में बांधे रखा। अण्डज, उद्भिज, स्वेदज और जरायुज चारों प्रकार से उत्पन्न चल-अचल, जड़-चेतन सृष्टि में यह अनादि-काल से समायी है। इस माया का रंग आकाश से पाताल तक चढ़ गया है।

बरन चारों विद्या चौदे, पढ़ाए भली पर ।
कर आवरन मोह नींद को, खेलावे नारी नर ।।

म०कि०प्र० 23/12

यही माया चारों वर्णों के नर-नारियों को चौदह विद्या में निपुण बना देती है फिर मोह और नींद का आवरण डाल कर उन्हें नचाती है।

मोह फांस बंध दिए दुनीयों, सब अंगों बल आने ।
राज करे सिर सबन के, बलावत ज्यों जित जाने ।।

म०कि०प्र० 60/7

इसने अपने मोह पाश में बाँधकर लोगों के सभी गुण अंग इन्द्रियों को अभिभूत कर लिया है। और सबके ऊपर शासन करके सबको अपनी इच्छानुसार नचा रहा है।

प्रथम मूल से बुध फिराई, अंधेर दियो अंधेर ।
या विध छंद रच्यो त्रैलोकी, भूलें दियो मन फेर ।।

प्र०कि०पृ० 60/8

उसने सबकी बुद्धि को मूल चैतन्य से हटाकर संसार के अन्धकारपूर्ण अंधेरा से भर दिया। इस संसार के तीनों लोक की रचना इस प्रकार हुई कि किसी के मन में मूल परम धाम का ध्यान ही नहीं आता।

महामति प्राणनाथ कहते है कि यह कलियुग का शासन है इसके प्रभाव से पृथ्वी रूप धारण कर रखे है।

वेद कतेब शास्त्र सबे मुख, जुगे लिए सब जीत ।
मंत्र धात करामात माहीं, पाक उत्तम पलीत ।।

प्र०कि०पृ० 60/13

वेद, कतेब विविध शास्त्रादि सभी इसकी इसकी जिह्वा पर धरे हैं। इसने सबको जीत लिया है। तन्त्र-मन्त्र, धातु, करामात, पवित्र, उत्तम तथा अंत्यज, सबमें यही समाया है।

मायया के गुण :-

कोई वेद विचार न करे, भाई सहू को स्वादे लागूं ।
अनल पक्षी पैरे बासे ते माटे, सार्दू ते सहे भागूं ।।

प्र०कि०पृ० 126/92

महामति प्राणनाथ कहते है- वेद-वाक्यों पर कोई विचार तो करता नहीं यहाँ हर किसी को माया का स्वाद लग गया है। कोई हवा ही ऐसी चल पड़ी है कि सत्य से सभी दूर भागते हैं।

वेद पुराण भारत सहु बांध्या, त्यारे दाझ रहे मन मनाणी ।
ततखिण आव्या गुरुजी पासें, बोल्या नारदजी वाणी ।।

म०वि०पु० 126/101

वेद, पुराण, महाभारत आदि समस्त ग्रन्थों का संकलन कर लेने पर भी व्यास जी के मन की दाह शेष रह गयी। तब वे अपने गुरु नारदजी के पास आए और अपना शाप सुनाकर उद्विग्न मन की शान्ति का उपाय पूछा ।

सीमाए :--

महामति प्राणनाथ ने मानव शरीर को श्रेष्ठ माना है। और ईश्वर प्राप्ति का साधन मानव शरीर ही है मानव शरीर माया के कारण क्षणभंगुर बना हुआ है इसी के द्वारा परमात्मा तक पहुँचा जा सकता है महामति कहते है कि मैंने भी संसार छोड़ दिया है ब्रह्म की तरह माया का भी कोई आदि अंत नहीं है। इसका सत्य मार्ग कोई ज्ञानी ही बता सकते हैं। वैसे तो माया बहुत व्यापक है आठ पदार्थ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ही माया के तत्त्व हैं। और शेष जितने भी है वह माया के रूप है।

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुण को विस्तार ।
ए मोह अहंते उपजे, ताथे छूटत नहीं विकार ।।

माया से प्रकट जो चौदह लोक हैं, इनमें सत्, रज, तम, तीन गुणों का ही विस्तार है मोह और अहंकार से इनकी उत्पत्ति हुई है, इस लिए इनके विकार नहीं छूटते।

सुन निराकार पार को, खोज खोज रहे के हार ।
चौदोतौं बहुविध ढूंढ्या, पर किया न किने निरधार ।।

म०कि०पु० 52/4

शून्य निराकार के पार क्या है? इसे खोज खोज कर साधक हार गए। अनेक जनों ने विविध उपायों से छान बीन की निश्चित मत कोई दे न पाया।

फेरे कोल्हू के ते अवला फेरा, सह फरे है फरी भांत ।
सुध बुध सबे विसरी, ए रच्यो माया प्रकटांत ।।

म०कि०पु० 129/23

यह जगत ही इन्द्रजाल है जो सत्य नहीं है जो स्वप्नवत है यह जगत् एक ऐसा कोल्हू, ऐसा इन्द्रजाल है कि सब कोई इसके उल्टे चक्कर में घूम रहे हैं। अपनी सुध बुध भूलकर सब इसमें ही उलझे हुए हैं। माया ने एक अद्भुत नाटक की रचना कर डाली है।

सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, कूड़ ल्याया नजर।
नेहचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो बर ।।

म०कि०पु० 60/3

इस कलियुग ने सत्य पर पर्दा डाल कर परमात्मा से विमुख कर दिया है। तथा असत्य अथवा स्वीकार सबके सामने खड़ा कर दिया है। इसी के इन्द्र-

जाल में लुब्ध होकर हमने स्वामी के अखण्ड सौभाग्य एवं अनन्त ऐश्वर्यों से पूर्ण मूल घर को भुला दिया।

खिन सज्जन खिन दुसमन, खिन दिवाना दाना प्रवीन ।

विध विध के फंदकार है, सब सूर किए अधीन ।।

वह क्षण में सज्जन, क्षण में शत्रु, पल में दीवाना तो दूसरे क्षण चालाक, चतुर और प्रवीण बन बैठता है इस कलियुग ने विविध प्रकार के बन्धनों को जकड़ कर सारे शूरवीरों को अपने अधीन कर रखा है।

असत तिनको भरन कहिए, होत है जिनको नास ।

ए तो चौदे चुटकी में चल जासी, यों कहत शुकजी व्यास ।।

म०कि०प्र० 25/7

असत्य या भ्रम उसी को कहा जाता है, जिसका नाश होता है। शुकदेव और व्यास जी भी कहते हैं कि ये चौदह लोक, समस्त ब्रह्माण्ड क्षणभंगुर हैं। चुटकी बजाने की देर में नष्ट हो जायेंगे।

ए बल जोजो कलवंतीनूं, एहनी कोई न काढे पार जी ।

अनेक उपाय कीधां घणे, पण कोए न पोहोंता दरबार जी ।।

म०कि०प्र० 6/7

इस कलवंती का बल ऐसा है कि कोई इसका पार नहीं पा सकता। अनेकों व्यक्तियों ने बहुत उपाय किए, परन्तु इसे उलांघकर कोई अखण्ड दरबार तक नहीं पहुँच पाया।

मोक्ष

मानव स्वभाव इस माया के भ्रम चक्र में उलझा हुआ है। महामति प्राणनाथ कहते है इसी चक्र के कारण यह जगत भ्रम बना हुआ है। और इसको गुरु के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर लेने पर अज्ञान दूर हो जाने पर स्वयं को पहचान कर इस कर्मों से मुक्त हो सकता है यही मुक्ति ही मोक्ष है जिसे साधना के द्वारा प्राप्त करता है। महामति प्राणनाथ के अनुसार "निष्काम कर्म से और निर्मल मन से प्रियतम के प्रेम को ग्रहण करता है"।

कर्म से ही फल की प्राप्ति होती है उसी से मानव मुक्त होता है और मोक्ष की प्राप्ति करता है।

मानव का स्वभाव ही कर्म है और कर्मों के चुनाव के फलस्वरूप फल का कारण बनते हैं उसी फल को अन्त में कर्म के अनुसार नाम पड़ जाते हैं। कहते हैं कि अच्छे कर्म करने वालों को मुक्ति मिल जाती है जिसे मोक्ष कहते हैं और जो इसी कर्म के चक्र में फल का उपभोग करने के लिए बार बार जन्म लेना पड़ता है। कर्मचक्र से मुक्ति ही मोक्ष है। महामति प्राणनाथ कहते है कि-

बुध तुरिया दृष्टि श्रवना, जो लों पोहोंचे मन ।
उतपन सारी आवटे, जो कछु कहिए वचन ।।

म०कि०पु० 30/10

बुध, चित्त, दृष्टि, श्रवण, मन और वचन द्वारा जिसकी अवधारणा हो जाय, वह सब उत्पन्न होकर मिट जानेवाला है। कहने का तात्पर्य कि महा प्रलय में जब ईश्वर सृष्टि रचयिता अपने मूल रूप में लौट जायेगे तब तीन गुण भी

भी नहीं रहेंगे और उनके साथ सभी लय को प्राप्त हो जायेगी।

प्रकृति :--

कर्म के विविध रूप होते हैं ये कर्म ही फल का कारण है। और ज्ञान के अनुसार फल की प्राप्ति है।

> कुवत कहूं न पाइए माहे, खेले मोहमें परे परबस मन ।
> भोमका एक न चढ़ सके, कहावें ईश्वर को महाकारन ।।

प्र.कि.प्र 32/6

ऐसे लोगों में सामर्थ्य तो कुछ है नहीं। मोह में पड़े मन के वशीभूत हुए खेल रहे हैं। किसी भी भूमिका (अध्यात्म सोपान) पर चढ़ नहीं पाते और ईश्वर के भी "महाकारण" (मूल कारण स्रष्टा) बनते फिरते है।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि स्वयं को स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन शरीर से अलग, ब्रह्म मानते हैं अगर इनसे यह पूछा जाय कि दुःख क्यों व्याप रहा है आप इस संसार में क्यों पड़े है तो उनका उत्तर होगा "हम प्रारब्ध कर्म भोग रहे हैं।

> दिस एके नहीं सूझे सागर नाहिं, भवसागर जम जाल ।
> अनेक बार तलफ्तो मरसो, तोहे नहीं सूझे काल ।।

ग0कि0प्र0126/71

अज्ञान दूर होने पर कर्मों का प्रभाव शान्त हो जाता है इस मायावी संसार के भावसागर को पार सहज नहीं है। इसमें कोई दिशा भी नहीं सूझती "

यम द्वारा फैलाए इस जाल में अनेक बार तड़प-तड़प कर तोड़ देंगे तो भी काल पीछा नहीं छोड़ेगा।

> मोटे अवतार श्री परस रामजी, तेना हजी लगे
>
> बंध न छूटे ।
>
> कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां
>
> न छूटे ।।

श्रीमद्भागवत पुराण में परशुराम जी को भी विष्णु का अवतार कहा गया है। वहाँ यह भी उल्लिखित है कि अब तक उनके बंधन छूटे नहीं। तब से लेकर आज तक पर्यन्त वे कई कष्टकर साधनाओं में जीव को लगाने के उपरान्त भी कर्मों की खींच तान से मुक्त नहीं हुए ।

> तामस राजस स्वातिक, वलें यारें गुन तीन ।
>
> ववन अनभव इसक, हुआ जाहेर आकीन ।।

प्र०कि०प्र० 85/17

इस प्रकार तीन गुण एवं वृत्तियों की आत्माएँ - सात्विकी, राजसी और तामसी, क्रमशः प्रियतम के प्रेम, अनुभव और वचनों से अपने विश्वास को दृढ़ करती हैं। इनसे ही इनकी परख होती है।

> रोए पाँच तत्व तीन गुण, निरंजन निराकार ।
>
> रोई द्वैत पुरुष प्रकृति पट उड़यो अंतर आकार ।।

प्र०कि०प्र० 75/11

पाँच तत्व, तीन गुण, निरंजन और निराकार आदि सभी रोते रहे। द्वैत रूप -पुरुष और प्रकृति भी रोयीं। इस क्रंदन से अन्तर का समस्त आवरण

नष्ट हो गया। अतः मोक्ष प्राप्त होने पर माया का आवरण नष्ट हो जाता है।

स्वरूप :--

अच्छे कर्म या बुरे कर्म करने वाले मृत्योपरान्त जो फल की प्राप्ति होती है वही मोक्ष का स्वरूप है और हिन्दू-शास्त्र अच्छे कर्म करने वालों को बैकुण्ठ धाम की प्राप्ति मानता है। उनके पूर्वज इन्हीं देवों की पूजा करते हुए जीव उन्हीं के धामों में प्रवेश करते हैं। कर्मफल भोग कर पुनः मृत्यु लोक अथवा निम्न लोकों में उतारे जाते हैं। यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक वह ब्रह्म या ईश्वरीय सृष्टि की कृपा, सम्बल या सम्पर्क प्राप्त कर अथवा उनके समान आचरण करके मुक्त नहीं हो जाते। अतः महामति प्राणनाथ कहते हैं कि--

सुख अखण्ड अक्षरातीत को, इन समय पाईयत है अत ।
कहा कहूं कुकरम तिनके, जो नाहीं रहे के चीकत ।।

म०कि०ग्र० 78/6

यहाँ हली छड़ी अक्षरातीत स्वामी के अखंड सुख मिल रहे हैं। उनके मंदभाग्य को क्या दोष दूं जो अपने कुकर्मों के कारण, उनके संग रहते हुए भी, सुख से वंचित रह जाते हैं। मोक्ष प्राप्त करने के लिए अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। जैसे कि --

अब छोड़ो रे नाम गुमान ग्याम को, पछी धाव अपनी भाई ।
एक डारी क्यों दूजी भी डारो, जलाए देवोक्षराई ।।

इस लिए अब सारे मान, अभिमान एवं ज्ञान का अहंकार छोड़ दो। सत्य की राह में ये सब बहुत गहरी खाइयाँ है। जैसे एक ने छोड़ा अर्थात् लोक-लाज मर्यादा का बंधन त्याग कर साधु बने, वैसे ही मान-बड़ाई, गुमान के बन्धन को भी तोड़ दो। सारी चतुराई तोड़ डालो।

इसमें माया से मोक्ष की ओर बतलाया है। तथा पहचान हो जाने पर माया का स्वरूप नष्ट हो जाता है।

> मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आप दगा देत बीच श्याम ।
>
> एही स्वरूप दज्जाल को, उठाए दे हमें पेहेचान ।।

म०कि०पु० 103/2

दज्जाल= अजाजील फिरिश्ते का खुदा विरोधी सांसारिक रूप ।

मैं ऐसी प्रतिष्ठा को जूते मारकर परे फेंक दूँ, जो प्रियतम के श्याम के बीच में धोखा दे जाती है। वस्तुत: यह दज्जाल या माया का स्वरूप है इसको पहचानकर इसे नष्ट कर देना है। आत्मस्वरूप को पहचान लेने पर अच्छे कर्म करेंगे तथा अखण्ड सुख की प्राप्ति होगी। अज्ञान के कारण माया के वशीभूत जीव के कर्म ही जन्म मरण के चक्र में बाँधते हैं।

> याने सतगुरु मिले तो ऐसी भाँति बेड़ा देखावें पार ।
>
> तब सकल सबदको अरथ उपजे, सब गम पड़े संसार ।।

म०कि०पु० 23/7

ऐसी स्थिति में, सतगुरु मिल जाये तो सभी संशय दूरकर पार की राह दिखा दें। तब सब ज्ञान के शब्दों का सही अर्थ समझ में आने लगेगा और संसार

महत्व

महामति प्राणनाथ मोक्ष को साधारण नहीं मानते बल्कि माया से मुक्त होने पर जो अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है वही मोक्ष का महत्व है। मोक्ष प्राप्ति कर लेने पर माया के चक्र से मुक्ति मिल जाती है और इस प्रकार जीवात्मा सीधे परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।
महामति प्राणनाथ कहते है कि —

ब्रह्म सृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्ति देसी सबन ।
कलिजुग असुराई मेटके, पार पोहोंचावसी त्रिगुन ।।

म०कि०ग्र० 73/30

वे ब्रह्म-सृष्टि को परम धाम पहुंचायेगे और समस्त संसार को मुक्ति देंगे। कलियुग की आसुरी वृत्ति का संहार करके त्रिगुण स्वरूप तीनों देवताओं को पार, अक्षर धाम में पहुंचा देगे।

तीनो वेदों ने यो कहया, वेद अथर्वन सबको सार ।
ए वेद फूली आखर, त्रिगुन को उतारे पार ।।

म०कि०ग्र० 73/32

तीनों वेदों ने यह स्वीकारा है कि अथर्वेद ही सबका सार है। यही वेद कलियुग के अन्तिम चरण में पुनः प्रकट और स्पष्ट होकर त्रिगुण स्वरूप देवताओं को उनके दायित्व से मुक्त करके पार पहुंचायेगा। वही वास्तव मोक्ष पाने की अधिकारी होते है जो माया के बन्धन में रह कर परमात्मा के ध्यान मग्न होते है।

शरीर की क्रिया सिद्धि-द्वारा मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति । जब जीवात्मा विदेह मुक्त हो जाती है और फिर वह अपने अन्तरात्मा द्वारा अखण्ड धाम को प्राप्त करती है।

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और ।

माया ब्रह्म निरवार के, सतगुरु बतावें ठौर ।।

प्र०कि०पु० 28/22

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि क्षीर-नीर विवेचन एवं ब्रह्म और माया का निर्णय सतगुरु के बिना कौन कर सकता है? माया और ब्रह्म की पहचान कराके अखण्ड घर का परिचय मात्र सद्गुरु ही दे सकते हैं।

नींद उड़ाए जब दीजोगे आपको तब जानोगे मोहोल को रानों।

तब आपे घर पावोगे अपनों, देखोगे अलख लखानो ।।

प्र०कि०पु० 2/4

मन की नींद उड़ाकर जब स्वयं को पहचान लोगे तब इस संसार रूपी महल की रचना समझ में आ जाएगा। तब अपना घर भी पा सकोगे और जब अदृश्य देखा जा सकेगा ।

पीछे ढूंढो घर आपनों, कौन ठौर ठेकानों ।

जब लग घर पावें नहीं अपनो, सो भटकत फिरत भरमानो ।।

प्र०कि०पु० 2/2

और फिर अपना मूल घर खोजो। यह जानने का प्रयास करो कि तुम्हारे घर का क्या ठिकाना है? जब तक आत्मा अपने परमधाम को नहीं पा लेती,

संसार में भटकती फिरती है। महामति प्राणनाथ मोक्ष प्राप्ति करने के लिए सच्चे गुरु को भी अधिकारी मानते हैं। वह कहते हैं कि —

जाको तुम सतगुरु कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर ।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहाँ है अपनो घर ।।

म०वि०पु० 11/3

जिसे आप सतगुरु मानते हैं, उनसे इस बात की जानकारी तो ले ही लीजिए कि जब इस संसार को त्याग कर चलेंगे तो अपना घर कहाँ होगा?

कहने का तात्पर्य जो विनाशकारी नहीं है। ऐसा कौन सा मूल घर है जिसके जरिये माया से परे अखण्ड सुख की प्राप्ति हो सके?

तब छल ना चले इन नारी को, लेप न लगे लगार ।
महामत यामें खेलत पिउ संग, लेहेवत सुख निरधार ।।

म०वि०पु० 23/8

फिर तो इस मायारूपी नारी का छल-बल नहीं चल पायेगा। वह अपने आवरण से हमें ढँक न पायेगी। इस माया में ही महामति अपने प्रियतम के संग खेलती हुई अखण्ड सुख प्राप्त करती है।

हे कूड़ी कंधी छड सिंधी, तूं वेठा कंठ न न्यार ।
रात डींह जागी जकासे, तू पांहिजो पाण संभार ।।

म०वि०पु० 133/21

ओ सिंध वासिनी इन्द्रावती! तू इस झूठे किनारे को तत्काल छोड़ दे।

उछल कर खड़ी हो जा। तुझे इस भवसागर की ओर मुख उठाकर देखना भी नहीं। कड़ी मेहनत करके तू अपने आपको सँभाल। अपनी आत्मा को भली - भाँति पहचानकर तू अपने प्रियतम से एकरस हो।

प्रेम की पराकाष्ठा द्वारा परमात्मा में एकरस हो जाने पर ही जीवात्मा को अखण्ड सुख की प्राप्ति है फिर साधक को कर्म करने की आवश्यकता नहीं रह जाती और उसके कर्म स्वयं ही आराध्य को अर्पित हो जाते है। मृत्यु के पश्चात् अच्छे कर्म करने वाले तथा निष्काम कर्म और प्रेमभक्ति से ही देहविहीन तथा जीवात्मा मुक्त होता है तभी वह मोक्ष का अधिकारी होता है।

काया बेड़ी सज्ज समर , सागर भव संसार ।
साजन जीव जगाए साथी, मेहराज पूनों पार ।।

म०कि०पु० 133/24

इस संसार को सागर अपनी काया को बेड़ा समझकर मेहराज अर्थात महामति अपनी साथी रूप जीवात्मा को जगा, अपनी संगी आत्माओं को लेकर इस नश्वर जगत् के पार, अखण्ड परमधाम में पहुँच गये।

—

अध्याय - 4

जागनी आन्दोलन (जागनी लीला)

(अध्यात्मिक जागनी)

अध्याय 4

जागनी आन्दोलन (जागनी लीला)

(आध्यात्मिक जागनी)

आत्मा को सत्य से परिचित करवाने के लिए जो प्रयास महापुरुषों द्वारा किए जाते है वह जाग्रति या जागनी है। जागना या जाग्रति क्या है? जागना भी एक सोने की तरह होता है जब मानव सोता है तो एक स्वप्न देखता है और वह स्वप्न झूठ खेल दिखलाता है जो कि जागने पर कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। और सत्य से दूर हो जाता है। जीव को उसके देह धारण करने पर सत्य से अवगत कराना ही जाग्रति है। सत्य की उपलब्धि जागनी है।

महामति प्राणनाथ की पूरी जीवन-लीला एक जागनी लीला है जो कि दिव्य संदेश इस जागनी द्वारा देती है। अपनी इस जागनी में महामति प्राणनाथ ने परमात्मा और आत्मा की एकता को पहचानने का प्रयास किया है जागनी को जीव का परम उत्कर्ष माना जा सकता है जब कि वह परमात्म स्वरूप से अपना साक्षात्कार करता है। जो अक्षर (सत्) पुरुषोत्तम (चित्)श्यामा (आनन्द)निज (आवेश) तथा सखी (नूर) के पाँच घर में विद्यमान है। रास लीला के उपरान्त श्री कृष्ण सखियों को परमधाम ले गए, परन्तु उन्हें दुःख लीला

देखने की कामना शेष रही, अतः वे पुनः जागनी लीला के ब्रह्माण्ड में अवतरित हुई। देश-देश में अवतरित आत्माओं को संगठित कर उनका उद्धार करने हेतु जागनी लीला का आयोजन हुआ और फिर महामति प्राणनाथ पधारे।

चलो चलो रे साथ, आपन जैए धाम ।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्टि स्यामाजी स्याम।।

म०कि०पु० 89/1

चलो-चलो सखियों। चलो हम सब अपने धाम चले सतगुरु स्वामी ने उस मूल वतन का ज्ञान करा दिया जहाँ श्री श्याम और श्यामा के संग ब्रह्मांगनाएं विराजमान है।

अब हम धाम चलत है, तुम हूजो सबे हुसियार ।
एक छिनकी बिलम न कीजिए, जाए करों करें करार।।

म०कि०पु० 92/1

अब हम सब अपने परमधाम चलते है और तुम सब होशियार हो जाओ, तैयार हो जाओ। अब तुम सब एक पल की भी देरी न करो। अब अपने धाम पहुंच कर ही हम चैन लेगें।

जाग्रत बुध हिरदे आई, अब रेहे ना सकें एक छिन ।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन ।।

म०कि०पु० 92/4

हृदय में बुद्धि जाग्रत हो गई है अब पल भर भी प्रियतम से विलग होकर अलग नहीं रहा जा सकता। नश्वर संसार अर्थात मृत्यु लोक से ध्यान टूटते ही हमारी सुरिता परमधाम पहुंचगई है।

अब नींद हमारी क्यों रहे, हमें खसम दिए जगाए ।

आगे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए ।।

म०कि०प्र० 92/6

जान लेने के बाद हम सब नींद में अब कैसे पड़े रह सकते है उचित अवसर पर मेरे स्वामी ने मुझे जगा दिया है और जाग जाने के बाद इस नश्वर संसार में हम लोग अब कैसे रह सकते हैं?

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन।

साथ जी मिलके चलिये, जाइए अपने वतन ।।

म०कि०प्र० 96/7

उन्होंने यह भी बताया कि मुझे प्रियतम ने प्रेमपूर्वक वापस लौट आने का संदेशा देकर आपको बुलाने को भेजा है, हे सखियों चलो हम सब मिल कर अपने परम-धाम को चलें।

कौन है तेरा माशूक, किन सों है निसबत।

देख अपना वतन, अब तूं आई कित ।।

म०कि०प्र० 111/13

महामति प्राणनाथ यहाँ कहते हैं। हृदय में खोलकर देखा। तुम्हारा प्रेमी, तुम्हारा माशूक, परम स्नेही प्रियतम कौन है? तू किस स्वामी की अर्धांगिनी है। तू अपने मूल घर परमधाम के वैभव एवं आनन्द की ओर देख। अब तू कहाँ आई है लेकिन तूने किस तिलस्म को घर मान लिया है।

और सृष्टि जो ईश्वरी, कही जागृत सृष्टि नाम ।
सुबुध अंग करनी शुभ, चले फुरमान हुकम ।।

ना०कि०प्र० 79/10

ईश्वरीय सृष्टि को जाग्रतात्मा बताया और उसमें सुबुद्धि है। शास्त्रों के अनुसार चलने वाले कर्म है तथा ईश्वरीय ग्रन्थ है।

> एही सृष्टि ईश्वरी जागृत, आई अक्षर नूर से जे ।
> नेहेरे ले नेहेकूल की, रहे तुरी अवस्था प ।।

ना०कि०प्र० 79/11

और ईश्वरीय सृष्टि की ये जाग्रतात्माएं अक्षर ब्रह्म (नूर जलाल) से अवतरित हुई हैं। प्रियतम की कृपा का अवलम्ब ग्रहण कर यह तुरीय अवस्था में रहती हैं। क्योंकि —

> ब्रह्म सृष्टि आई अरस से, जीत इन्द्री शुभ अंग ।
> छोड़ याहें बाहेर दृष्टि अंतर, पर आतम धनी संग ।।

ना०कि०प्र० 79/12

ब्रह्म-सृष्टि परमधाम से अवतरित हुई है ये शुभ आचार वाली जितेन्द्रिय होती है और उनके हृदय में प्रियतम की सुधि समायी रहती है। अंदर बाहर का ध्यान छोड़कर इनकी दृष्टि अन्तर्मन में पैठी रहती है। इनकी चिन्मय परात्मा, परमात्मा से रमण करती रहती है।

> तारतम लेई श्रीराज पधारया, क्युं ते सरवने जाण।
> सांझयों कहे अने आवीने मल्युं, मलिया ते मूल पखाण ।।

ना०कि०प्र० 124/5

वही श्रीराजश्यामा सतगुरु, तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर पधारे। वही ज्ञान सर्वत्र फैल गया। उन्होंने आश्वस्त किया था कि समस्त अंगनाएँ स्वयं ही आपको मिल जायेंगी। उनमें मूल सम्बन्ध है वे स्वयं अब स्वयं ही प्रकट हो रहे हैं।

अकराफील ने उतरया, जागृत बुध नूर ।
सो बैठ कजाए इमाम में, नगर कुसाफी सूर ।।
म०कि०पु० 61/11

बुद्धि को जाग्रत करने के लिए अक्षर का नूर लेकर इस भूमि पर इसराफील (उत्तराधिकारी इमाम मेंहदी) उतरा वह इमाम मेंहदी, महामति के अन्दर बैठकर कुरान के गूढ़ रहस्यों का जलवा दिखाने के लिए नरसिंघा फूंक रहा है।

जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित ।
करे अकीली उम्मत की, कहूं पैठ न सके कुमत ।।
म०कि०पु० 61/12

उनमें खुदा का जोश है जिबरील फरिश्ता भी वहीं पर प्रकट हुआ है जहाँ परमात्मा की अंगनाएँ (रूहें) हैं। वे अपनी तमाम रूहों की सिफारिश कर रहे हैं जिनमें कुमति (कुफ्र) का प्रवेश नहीं हो सकता। और

औलिए अंबिए गोस कुतुब, सब आए बीच उम्मत ।
रूहें पैगम्बर फिरस्ते, सब मिले आखरत ।।
म०कि०पु० 61/13

औलिए, चेतावनी देने वाले अंबिए, इन्साफ करने वाले गौस, फाजिल-महात्मा, कुतुब, विद्वान आदि इसी ब्रह्मसृष्टि में प्रकट हुए हैं। सारी रूहें, पैगम्बर और फरिश्ते इन आखिरी घड़ी में इकट्ठे हुए हैं।

है किताबें है कलमें, है जो नामें और ।

जो कोई कहावे कुदरत, सब आए मिले इन ठौर ।।

म०कि०पु० 61/16

आसमानी किताबों और कलमा को लेकर आने वाले पैगम्बरों तथा और भी पीरों के नाम जुड़े हैं उनमें साथ कई नामवर हैं जो ठीक तारीफ ना कुछ हैं।

मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फुरमान ।

यही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन ।।

म०कि०पु० 108/4

मुहम्मद साहब ने स्वयं स्वीकार किया कि खुदा ने मुझे उनका आदेश पहुँचाने के लिए पत्रवाहक बनाकर संसार में भेजा है और उन्हीं का आदेश मैं लेकर आया हूँ उनकी इस बात पर विश्वास करो, उनका यह कहना सर्वथा सत्य है।
इसके अलावा —

मैं देत हों खुसखबरी, जो रुहानी अरवाय ।

वे उतरे अरस अजीम से, जो इनसानी अदन्ददार ।।

म०कि०पु० 108/5

मैं (मुहम्मद साहब) दुनियाँ वाले को शुभ संदेश देता हूँ। परमधाम में रहने वाली अनादिकाल से ब्रह्मात्माएं ही संसार की अर्श और अजीम में अवतरित हुई हैं।

रसूल कहे मैं आखरी, मेरे पीछे न आवे कोए।

कह्या हद अल्ला की आखरी, और मेहदी इमाम सोए ।।

म०कि०पु० 108/6

रसूल ने भी कहा था कि ऐसा पैगाम देने वाले में मै अन्तिम हूं मेरे बाद दूसरा कोई रसूल नहीं आयेगा साथ ही यह भी बताया रूह-अल्लाह उतरेगी इमाम मेहदी प्रकट होगें। अत: श्री प्राणनाथ ने बताया कि उसकी गवाही तो खुदा ही दे सकता है क्योंकि वही यह सब जानता है। --

खुदा देवें साहेदी खुदाए की, और ना किन्हूं होय।
करे बयान फुरमावें हुकम, लायक पूजने के सोए ।।

म०कि०पु० 71/16

खुदा की गवाही स्वयं खुदा ही देता है क्योंकि उसे दूसरा कोई जान समझ नहीं सकता। जो उसका विस्तार से वर्णन करे उसका हुकम बताए वही पूज्य हैं।

मुल्क हुआ नबियन का, आखर हिंदुओं के दरम्यान ।
गिरो भेख फकीर में, पातसाह महंमद परवान ।।

म०कि०पु०71/12

और फिर हिन्दुओं का मुल्क ही पैगम्बर का मुल्क बना। जहाँ मोमिन फकीरी साज-सज्जा में है और आखरी मुहम्मद-इमाम मेहदी उनके बादशाह हुए।

मायने रूहु सब इनसे, तौरेत दई है जिन ।
बोल पेहेचान खुदाए की, इन गिरोंकी मौमन ।।

म०कि०पु० 71/13

तब सारे ग्रन्थ-धर्मों के अर्थ और आशय इन्हीं से खुले तौरेत किताब (मूल बातें) इनको कलश ग्रंथ के रूप में प्राप्त हुई। इन मोमिनों के सम्पर्क से ही दुनिया को खुदा की पहचान हुई।

इत हुज्जत न रही काहू की, तुम देखो एह कुरान ।

एह किताब महंमद मेहदी दे, जिन रोसन किए मोमन ।।

म०कि०प्र०71/18

इसमें किसी की भी अकल काम न आई और वाणी पर विचार करने से ज्ञात होता है कि यह बयान मुहम्मद मेहदी के पद, सम्मान एवं मोमिनों की महिमा के लिए है। जिसे उन्होंने अन्त में प्रकट किया।

तौरेत आई नूर बिलंद से, आखर उम्मत करी बेसक।

भई निस्बार महंमद मुसाफ की, जैसे पैगंबर ने का हक ।।

म०कि०प्र० 71/20

परमधाम से ही वह मूल वाणी - तौरेत "कलाम" ग्रन्थ के रूप में प्रकट हुई। जिससे कि सभी ब्रह्मसृष्टियों का निवारण हुआ। मुहम्मद और कुरान की पहचान और साक्षी इस प्रकार दी गई, जैसे की देना चाहिए था।

सब लिखी एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर।

कोई पावे न दूजा आपना, बिना महंमद फकीर ।।

म०कि०प्र० 71/21

सभी धर्म-ग्रन्थों की विशेषताए वे किसी और ऩ्कि) नहीं केवल इसी ब्रह्मसृष्टि की ही है। फर्क केवल इतना है कि अलग-अलग जकड़े हुए लिखी गई और उसके वास्तविक अर्थ में मुहम्मद इमाम मेहंदी है।
इस प्रकार से महामति प्राणनाथ ने बताया कि मुहम्मद ही किताब अर्थात् कुरान ले कर आये।

कहे रसूल खुदा मैं देख्या, और ले आया फुरमान ।
कौल किया आखर आवने, दीदार होसी सब जहान ।।
प्र०कि०ग्र० 73/34

रसूल मुहम्मद ने कहा कि मैंने ही खुदा को देखा और उनका फरमान (कुरान) स्वयं लेकर आया हूँ खुदा ने स्वयं अन्तिम समय पर आने का वचन दिया है तभी दुनिया का उद्धार होगा।

ए आदके सो अक्लौं, किन्हूं न खोले कब ।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए सौहे सब ।।
प्र०कि०ग्र० 65/8

सभी के बारे में काफी समय से अर्थात आदिकाल से ही आज तक इसका निवारण होता आया है। स्वामी श्री देवचन्द जी ने यहाँ प्रकट होकर हम सब के लिए निराकरण कर दिया।

केवल ब्रह्म अक्षरातीत, सत चित आनन्द ब्रह्म ।
ए कह्यो मोहे मेहेरे कर, इन आनन्द में हम तुम ।।
प्र०कि०ग्र० 65/12

केवल अक्षरातीत ब्रह्म ही सच्चिदानन्द परमात्मा है श्री देवचन्द्र जी ने मुझे यह निश्चित रूप से बताया कि इसी आनंद धाम में हमारी और आपकी परात्म विद्यमान है।

अतः यहाँ पर बताया गया कि जागनी लीला के अनेक संकेत है उनको व्यक्त करना सम्भव नहीं है।

जेते बचन कुरान में, सो स्याना जी दई साख ।

सो सार इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख ।।

म०कि०पु० 104/6

लेकिन कुरान में जो कुछ कहा गया है उसका साक्षी स्याना स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने भी दिया और अनेक धर्म ग्रन्थों में हजारों लाखों शब्द संकेत दिए गये हैं जो इसी जागनी लीला के विषय में है इनका वर्णन कहाँ तक किया जाय यह अनगिनत है। महामति प्राणनाथ कहते हैं कि गुरु के कार्य को पूरा करने के लिए ही यह दायित्व मुझे सौंपा गया।

तब केतीक गिरहो उधर भई, और केतीक मेरे साथ ।

दई जाहेर मसनंद तिनसिपें, दूजी बातुन मेरे हाथ ।।

म०कि०पु० 122/3

एक समूह तो मेरे साथ रह गया दूसरा उनके साथ रह गया। सतगुरु देवचन्द्र जी की जाहिरी मसनद महदी बिहारी जी को मिली। गुरु प्रदत्त ज्ञान का आशय एवं रहस्य मुझे प्राप्त हुआ तो उनके गुरुत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने का दायित्व भी मुझ पर आ गया। (दो समुदाय थी एक नासुती, दूसरा नजरी।)

छे हजार बाजू दोय बगम, जबराईल उपर स्वत ।

अग्यारे सदी गिरह खोल के, चले महंमद संग मोमन ।।

म०कि०पु० 71/15

छः हजार आत्माओं को जिबरील की पीठ पर दोनों ओर बिठाकर और ग्यारहवीं सदी की गाँठ खोलकर मुहम्मद इमाम मेहदी, मोमिनों को संग ले चले।

कलाम अल्लाकी इसारतें, खोल देयाँ असन।

महामत पर मेहेर मेहेबूबे, करी इसे के इलम ।।

म0कि0पु0 72/3

अतः कलाम-अल्लाह (कुरान) के सारे गुह्य संकेत स्वामी जी ने खोल दिए। महामति पर महबूब की बड़ी मेहरबानी है कि ईसा रूह अल्लाह श्री देवचन्द्र का समस्त ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ।

ऐसी साख देवाई कर सनंध, आतम करी जाग्रत ।

सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेकें कयामत ।।

म0कि0पु0 74/33

श्री देवचन्द्र ने अपना पूर्व सम्बन्ध घोषित करते हुए मेरी आत्मा को जगाया और मेरे स्वामी धाम से पधारे। उन्होंने कियामत का विवेक देकर इस घड़ी के प्रकटीकरण की सूचना दी।

उतरी किताबें हमें, फिरो नकली न माने कोए ।

तब आया पैगम्बर हममें, अब कह्या महंमद का होए ।।

म0कि0पु0 122/4

मेरे द्वारा ब्रह्माजी का अवतरण हुआ। बिहारी जी और उनके अनुयायी साथियों ने इसे न माना। तब हमारे अन्दर पैगम्बर मुहम्मद की शक्ति प्रगट हुई। अब तो मुहम्मद के वचन महामति के माध्यम से सत्य हुए। प्रदत्त ज्ञान बताते हुए महामति कहते हैं कि —

बरकत इन रूहन की, भिस्त देसी सबन ।

ले दे हिसाब फजर को, ले बक्सी सबै बतन ।।

म0कि0पु0 108/3

ऐसी इन सुलझी हुई आत्माओं द्वारा प्रदत्त ज्ञान का प्रकाश ही सबको मुक्ति धाम प्रदान करेगा। ज्ञान की भोर फजर के समय, जागनी की बेला में, सबका हिसाब लेकर समस्त आत्माओं, रूहों को वापस वतन लौटा ले जायेंगी।
(फजर = फज्र – सुबह उषाकाल। अज्ञान के रात्रि के बाद सत्यज्ञान का प्रातःकाल)

तब हारके धनियें विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधांग ।
फेर बैठे माहें आसन कर महामति हिरदे अंग ।।

महाकिं०प्र० 99/11

इस तरह से तब हारकर स्वामी ने ही निर्णय लिया कि मैं अपनी अर्द्धांगिनी प्रिय आत्मा इन्द्रावती को संसार में अकेली कैसे छोड़ दूं ? वे कृपा पूर्वक शुद्ध और पंगु हृदय महामति की अन्तरात्मा में विराजमान हो गये। और इस प्रकार—

पीउने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर ।
व्रज ने रास में खेले, खेले निज घर ।।

महाकिं०प्र० 83/3

स्वामी के धर्मशास्त्रों में पहले से ही स्पष्ट संकेत देकर जिस जागनी लीला की बात कही थी, उसे पूरा करने का अवसर आ गया है। व्रज से लेकर रास में जो खेल खेले गये, उनमें अपने अखंड परमधाम की अंतरंग लीला प्रकट हुई।

अखंड में याद देने, ए जो खेल बनायो ।
पीउने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर ।।

महाकिं०प्र० 83/2

अखंड परमधाम में हुई तीन लीलाओं का वर्णन –व्रज, रास और जागनी की याद

बनाए रखने के लिए यह खेल संसार में रचा गया जिसे ब्रह्मात्माओं ने खेला।

खेले मिलके रास जागनी, भोमें इहाँ से चौबीस हजार ।
करसी लीला बरस दस तोड़ी , हास विलास आनंद अपार ।।
प0कि0ग्र0 54/14

सब मिलकर जागनी रास खेल रही है। यहाँ चौबीस हजार ईश्वरी सृष्टि एकत्र होगी। दस वर्ष तक मध्यप्रदेश में आनंद-विहार की लीला चलेगी।

ब्रज लीला लीला रास माहि, हम खेले जानके जार ।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पीउसों जान दिल में करतार ।।
प0कि0ग्र0 54/15

ब्रज और रास लीला में हम श्रीकृष्ण की पहचान नहीं कर पाये थे और इसी लिए उन्हें सखा समझ कर खेल खेलती रही। जागनी लीला में जाग्रत होकर, पिया की पहचान हो जाने के बाद हम पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जानकर उनसे विहार किया।

महामति प्राणनाथ जागनी के बारे में बताते हुए कहते हैं। कि परमात्मा और आत्मा की "एकता" को जान लेना ही "जागनी" है इसी का संकेत देते हुए कहते हैं कि ----

हो साथ जी बेगे ने बेगे, बेगे न मिला रे सैयां सबे रास को ।
कारज कारन की बात अति बड़ी याको क्यों कहिए अवतार ।।
रे साथजी हुई अर्क मिल पांचो मेली कियो सो बड़ी विस्तार ।
प0कि0ग्र0 54/1

हे सुन्दर साथ। जल्दी करो। जागनी का समय आ गया है जल्दी से सब इकट्ठा हो जाओ। बहुत बड़े उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए प्रभु का अवतार हुआ है। और ब्रह्मांगनाओं को सम्बोधन करते हुए कहते हैं कि यह केवल अवतार ही नहीं है यह वह शक्तियां है— आवेश, आदेश, ज्ञान, प्रकाश और मूल अंगना का यहां मिलाप और विस्तार हुआ है।

> रोसनी पार के पार, दई साहेब नाम धारए ।
>
> भई दुनियां साफ मुसाफले, मुझसे कजा कराए ।।
>
> प्र०कि०प्र० 61/24

उसी शक्ति ने, उसी साहब ने मुझे अपना नाम प्रदान किया है। और पार के पार प्रकाश फैलाया है। संसार परमात्मा के इस न्याय से - कुरान इन्साफ से साफ हुआ। मेरे द्वारा ही सबका न्याय करवाया। इस प्रकार जागनी लीला का आविर्भाव मेरे द्वारा ही हुआ।

> सो नूर सरूप आवें नित, नूरतजल्ला के दीदार ।
>
> आस पुराई इनकी, मेरे पेहेले इन आकार ।।
>
> प्र०कि०प्र० 61/26

नूर स्वरूप अक्षरब्रह्म भी अक्षरातीत ब्रह्म (नूर तजल्ला) के दर्शनों के लिए नित्य प्रति आते हैं। उन अक्षर ब्रह्म को ब्रह्मात्माओं को प्रणय-लीला देखने की इच्छा को भी मेरे अविर्भाव द्वारा पूर्ण किया। और उन्हीं की आज्ञा से जागृत संदेश दिया —

अब हुकम धनीय है, अब विधि दई पोहोंचाए ।

चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए ।।

प०कि०पु० 86/13

स्वामीजी की आज्ञा से ही मैंने यह आत्म जाग्रत संदेश आप लोगों तक पहुंचा दिया और अगर विचार कर सको समझ सको तो चेत कर अपनी आत्मा को भी जगा लो।

इश्क आयो पीउ को, प्रेम सनेही सुख ।

विविध विलास जो देखिए, आई जागनी रुत ।।

प०कि०पु० 80/6

इस धरती पर इस संसार में मेरे स्वामी, मेरे प्रियतम के प्रेम का प्रकाश हुआ है और तभी प्रेमी की प्रेम की सुधि जगी है। उसमें भांति-भांति क्रिड़ाओं और रमण करने के लिए ही जाग्रत बुद्ध का आविर्भाव हुआ है।

सुख अखंड धाम को, सो तो अपनों अलेखे ।

निपट आयो निकट, जो आँखाँ खोल के देखे ।।

प०कि०पु० 80/8

उस परमधाम के सुख सभी लोगों के लिए हैं। अंतर्मन की खोलकर देखो, उनको पाने का समय नजदीक आ गया है।

महामत कहें मोमनियां, आओ निज वतन ।

विलास करो विध विध के, जागो अपने तन ।।

प०कि०पु० 80/15

इसमें महामति प्राणनाथ कहते हैं कि प्रियतम के संग हँसती-गाती-मुस्कराती सखियाँ सब मिलकर अपने वतन को चलो, वहाँ विभिन्न प्रकार का विलास करते हुए अपने मूल परात्म स्वरूप में जाग्रत हो जाओ।

संग समागम धनी के, हिरदें लियो सो सब विचार ।
साके सोले तोलों गुझ रहे, या दिन से किया सो प्रगट पसार ।।
म०कि०पु० 54/3

इसमें इस संग में धनी का मिलन हुआ तो जागनी लीला का विचार दृढ़ हुआ। सोलह सौ शाका तक वे छिपे रहे। आज के दिन से उनका ज्ञान प्रकट होकर विस्तृत हो चला है— हो रहा है।

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम ।
हँसना खेलना बोलना, संग स्यामा जी स्याम ।।
म०कि०पु० 93/11

सोचो, जब हम परमधाम में विद्यमान थीं और उसी गति से अपनी चाल को कायम रखो। जैसा कि परमधाम में अपना मधुर हास-परिहास का भी श्याम एवं श्यामाजी के साथ उसे भूलो नहीं।

सखी जो अपने सनमंधी, सो भी गए माहें भूल ।
तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल ।।
म०कि०पु० 52/12

जब अपनी ही संगिनी, सखी ब्रह्मात्मायें भी इस इस संसार में आकर भूल गयी जो कि जीव और माया की नींद से उत्पन्न है वे उन रहस्यों को कैसे जान पायेंगी ।

इन लीला की जो आत्मा, तो करसी सबे पेहेचान ।

आवत दौड़े अंकुरी, ए ताए मिलसी निसान ।।

म०कि०पु० 52/19

इसमें महामति प्राणनाथ परमधाम की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इन लीलाओं में जो कुछ होता है वहाँ की आत्माएँ ही इस रहस्य को समझ पायेगी क्यों कि वहीं वहाँ की अधिकारी है जिनकी उत्पत्ति ही परमधाम है जब सब समझ जायेंगे तो सभी दौड़े हुए चले आयेंगे तभी वहाँ के संकेत ठीक प्रकार से मिल पायेंगे।

इस लिए वह आत्माएँ —

खेल किया पेहेले ब्रज में, खेल दूजा वृन्दावन ।

उमेद रही तो भी मेकली, तायें यह उतपन ।।

म०कि०पु० 52/21

सबसे पहले ब्रज में लीला की । फिर उसके बाद रास लीला की जो वृन्दावन में हुई। जिससे पूरी इच्छा पूर्ण न होने के कारण जागनी लीला हुई इसी लिए यह पुन: ब्रह्मांड रचा गया।

ब्रजरास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन ।

सोई घड़ी सोई पल, वेराट होसी धंन धंन ।।

म०कि०पु० 52/22

अत: ब्रज, रास और जागनी एक ही लीला के तीन भाग हैं। इसी लिए वही प्रियतम है, वहीं दिन है, वहीं घड़ी, वहीं पल है सारा संसार और सृष्टि इससे धन्य हो जायेगा।

कहा कहूं सुख साथ को, देखे भृकुटी भौंह चढ़ाए।

सुखकारी सीतल सदा, सुख कहां केहेसी जुबाएं ।।

म०कि०पु० 93/16

मैं ऐसे इस प्रकार अपनी आत्मांगनाओं का क्या वर्णन करूं? जिनको प्रियतम अपनी भृकुटियाँ और भौंहे तानकर प्रेमपूर्वक निहारते हैं। उनकी दृष्टि परम सौम्य, सुखदायी और शीतल है यह जुबान उस सुख का वर्णन नहीं कर पायेगी।

सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप ।

जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप ।।

म०कि०पु० 93/10

परमधाम के उस स्थान में हमारा हंसना, खेलना और मिलना ही याद है? सखियों यदि किसी को भी इसमें से कुछ याद हो तो (परमधाम से इस संसार में अवतरित हुई हो) तो अपने इस मूल स्वरूप और मूल सम्बन्ध को याद करो।

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह ।

सो अर्स भूलके, क्यों रहे झूठी देह ।।

म०कि०पु० 93/12

प्रियतम के प्रेम और सुख की बात तो वही है पर उस अर्श और आनन्द को भूलकर आत्मांगनाओं उस झूठी शरीर से क्यों चिपकी हो।

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल ।

तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल ।।

म०कि०पु० 91/4

हमारी ही तरह बनने वाली आत्मगमाओं, देवी, ईश्वरीय सृष्टि के प्रतिबिम्ब या लीला स्वरूप जीव सृष्टि अर्थात् संसार के लोग भी प्रेम के लिए जब इस तरह न्योछावर हो जाते है तो ब्रह्मसृष्टि कहलाकर भी हम अपने पाँव पीछे क्यों हटायें। फिर हमारे सिर पर तो नूर जमाल, अक्षरातीत परमात्मा का साया है।

पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल ।
केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल ।।

मा०कि०प्र० 92/11

पीछे आने वाली वह सखियाँ भी वहाँ पहुंच ही जायेंगी। जो पहले आनेवाली है वह उतावली हैं। कुछ सखियों का विचार है कि हम सब साथ ही चलें।

इन विध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार ।
एक आए एक आवत हैं, एक होत है तैयार ।।

मा०कि०प्र० 92/12

इस प्रकार सभी सखियों में स्थान-स्थान पर हलचली मच गई है ऐसी धूम और पुकार मची है कि कई आगई है, कई आ रहीं है, कई आने को तैयार हो रही हैं।

रास लीला के उपरान्त श्री कृष्ण सखियों को परमधाम ले गए, परन्तु उन्हें दुःख लीला देखने की कामना शेष रही, अतएव वे पुनः जागनी लीला के ब्रह्माण्ड में अवतरित हुई। देश-देश में अवतरित आत्माओं को संगठित कर तथा उद्धार करने हेतु जागनी लीला का आयोजन हुआ। और तभी महामति प्राणनाथ पधारे ।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।

आए पोहोंचे व्रज में, याद करो निसान ।।

प्र०वि०पु० 92/2

अतः महामति प्राणनाथ अंगनाओं को सम्बोधित करते हुए कहते है कि मेरी प्रिय अंगनाओं। जागनी के इस अवसर को पहचानों। अपनी आत्मा की पहचान करो। देखो, अब हम सब व्रज धाम में आ गये हैं वहाँ के चिन्ह एवं व्रज लीला के चिन्हों को याद करो।

भागली महामति अरस कहें उनसी, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाए ।

अरस वाहेदत्त खिलवत अमन की, इज्जत निसबत लिए इत आए ।।

प्र०वि०पु० 112/4

अतः महामति प्राणनाथ कहते है कि – परमधाम की आत्माओं, तुम अपनी प्रीति दिखाओ क्यों कि प्रेम ही परमधाम पहुचाने वाला है। परमधाम की अंगनाएँ स्वामी की एकान्त मिलन-स्थली, मूल मिलावा से अपने पूर्व सम्बन्ध का मान एवं गौरव लिए यहाँ अवतरित हुई हैं।

लाडलियाँ लाहुत की, जाकी असल चौथे आसमान ।

बड़ी बड़ाई इनकी, जाकी सिफत करें सुभान ।।

प्र०वि०पु० 71/1

ब्रह्मात्माएँ परमधाम की प्यारी अंगनाएं हैं। इनका मूल चौथे आसमान पर लाहुत में है। और पूरे ब्रह्माण्ड में इन अंगनाएं की बड़ी प्रतिष्ठा है। स्वयं परमात्मा इनकी प्रशंसा करते हैं।

सो उतरी अरस अजीम से, कहे बारे हजार ।
साथ सेवक नायक, पावें दुनियाँ सब दीदार ।।

म०कि०पु० 31/2

जो सबसे ऊँचा है अर्श- परमधाम- से ये 12 हजार अंगनाएँ अपने सम्पूर्ण वैभव और सौष्ठव सहित अवतरित हुई हैं। साथ में देवदूत (फरिश्ते) भी हैं। सारे संसार के लोगों को उनका दर्शन मिला है।

अरस= अर्श ब्रह्मलोक-अक्षरधाम।

फिरस्ता-फिरिश्ते- देवता लोग । अक्षर ब्रह्म की शक्तियाँ जो सृष्टि रचना, पालन और संहार का कार्य करती हैं।

मोमन बड़े मरातबे, नूर विलंद से नाजल ।
इनों पान हाल सब नूरके, अंग इस्क के भीगल ।।

म०कि०पु० 71/4

ब्रह्मसृष्टियों (मोमन) का पद बहुत ऊँचा है। सबसे ऊँचे नूरमय अर्श, परमधाम से अवतरित हुई है। इनका पान और धान सब कुछ नूरानी है और अंग-अंग प्रेम से सरोबोर है।

नूर= सच्चिदानन्द परमात्मा के स्वरूप के तेज का प्रकाश। अक्षर ब्रह्म को

नूरजलाल और अक्षरातीत को नूर जमाल या नूर बलानूर कहा है। परमात्मा को नूर जमाल कहा गया उनके अंग से उत्पन्न आत्मायें ब्रह्म सृष्टि तेज से उत्पन्न परमधाम तजल्ला और नूर का प्रकाश अक्षर ब्रह्म नूर जलाल कहा गया। इस तरह नूर से ही फिरिश्तों की सृष्टि हुई और फिरिश्तों से समस्त ब्रह्माण्ड की रचना हुई। यह नूर ही समस्त रचना के मूल में है।

संसार की रचना में नूर है, ज्ञान विज्ञान, ब्रह्म ज्ञान सब खुदा के नूर, जोश और हुक्म की ही करामात है।

आली उम्मत जो महंमदी, आई अरस से उतर ।
ताए अपना इलम देय के, ले चलसी अपने घर ।।
म०कि०यु० 96/31

मुहम्मद ने जिसे खास उम्मत और ईसा ने चुने हुए लोग कहा, नाजी फिरके का वही विशेष समुदाय, अर्शअजीम परमधाम से उतरा है। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ अपने उन संगी ब्रह्ममुनियों को अपना ज्ञान देकर अपने साथ, अपने वतन ले चले हैं।

ऐसा समया सत हुआ, आए पोहोंचे इनमकान ।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया मन ।।
म०कि०यु० 92/13

और अब सभी अंगनाएं इस मंगलमय घड़ी में अपनी मंजिल के अतिनिकट आ पहुँची हैं। जिन्होंने जाग्रत होकर आगे कदम बढ़ाये, वही इस शुभ अवसर का लाभ उठा पायेंगी।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन ।
कोई आगे पीछे अवल, सबे हुए चेतन ।।
म०कि०यु० 92/14

सभी अंगनाओं में ऐसी सुध बुध का प्रवेश हुआ कि सब की सब अंगनाएँ अपना सुध बुध खो बैठी और उसी में ध्यान मग्न हो गई। फिर संसार से ध्यान हटकर परमधाम में जा लगा कोई आगे गई, कोई पीछे गई, कोई सबसे आगे। इसी तरह सभी सावधान हो गई।

कोई कोई पीछे रहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहीं ।
दील करी ज्यों स्वांतसियों, आप अंग पोहोंचे नाहिं ।।
प्र०कि०प्र० 92/15

और कई अंगनाएँ ऐसी भी है जो पीछे छूट गई उनकी सुरत हममें प्रविष्ट हुई है। ठीक उसी तरह, जैसे रास-मण्डल में सात्विकी [सत्वगुणवाली] गोपियाँ सशरीर नहीं पहुँच पायी थीं। मात्र उनकी कल्पित सुरिता ही वहाँ पहुँची थी।

ए आतम को मेंहेंदे भयो, सब दियो सक छोड़ ।
पर आतम मेरी धाम में, तो वही तननेह संग जोड़ ।।
प्र०कि०प्र० 82/12

परस्पर मूल संबंध का निश्चय हो जाने पर सारे संशय का निवारण हो गया मेरी परात्म जो परमधाम में है, उससे संबंध जोड़ने का मुझे आदेश मिला।

हत अक्षर आवें नित्यानें, मेरे धनी के दीदार ।
ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार ।।
प्र०कि०प्र० 82/11

अक्षर ब्रह्म भी, नित्य प्रति, मेरी स्वामी के दर्शनों के लिए आते हैं। हम ब्रह्मांगनाएं उस अक्षरातीत ब्रह्म की अर्धांगिनी स्वरूप हैं। इस संबंध का गौरव एवं सुख किन शब्दों में कहा जाय?

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नरनारी ए सुमरन ।
गाए सुने ताप होवहीं, लीला तीनों का दरसन ।।
प्र०कि०प्र०59/6

राजा,प्रजा, बाल वृद्ध, नर नारी सबके लिए यह लीला स्मरणीय बनी रह जायेगी। इसे वही याद करेगा जिसको तीनों लीलाओं के दर्शन होगा वही श्रवण भी करेगा तथा महिमा की गान गायेगा।

बाल लीला भई ब्रज में, लीला किशोर वृन्दावन ।
जगनाथ बुधजी जागनी, भई भोर लीला बुद्धापन ।।

म०कि०प्र० 59/5

बाल-लीला तो ब्रज मंडल में सम्पन्न हुई। वृन्दावन में जब श्री कृष्ण किशोर अवस्था में थे उस समय रचाई गई और फिर सम्पूर्ण जगत के स्वामी बनकर तीसरी रास लीला रचाई जो कि बुध में प्रकट होकर ज्ञान और प्रबुद्ध जागनी लीला रचाई।

इवे जेमें ए निध प्रकट कीधी, भली ते बुध प्रकासी ।
दीसंतो आकारज दीसे, पण वेहद पुरनो वासी ।।

म०कि०प्र० 124/4

ऐसे सतगुरु धन्य हैं जो बुध जी को प्रकट करके हमारी बुद्धि से ज्ञान को आलोकित किया। देखने में तो ब्रह्ममुनि मानवाकार ही होते हैं। वास्तव में वे असीम परमधाम के वासी हैं।

ऐसी बड़ाई वै सिर मेरे, दे दे नई जो दाव।
सब दुनियाँ के दिल में आमी, वे साहेबी सब किताब ।।

म०कि०प्र० 61/27

और इसी प्रकार प्रियतम परमात्मा ने अनेक प्रकार से मुझे इतनी भरपूर प्रतिष्ठा दी कि मेरी आत्मा उसके बोझ से दब गई। उन्होंने दुनिया में प्रचलित सभी धर्म ग्रंथों की साक्षी देकर समस्त संसार के लोगों को निष्कलंक बुद्ध, इमाम मेंहदी के प्रकटीकरण का विश्वास दिलाया।

> सोले से लगे रे साका साल बाहन का, संवत सत्रह से पैंतीस ।
>
> बैठाने साका विजिया अभिनन्दन का, यों कहें शास्त्र और चौतीस ।।
>
> म0कि0पु0 58/18

यह प्रणामी धर्म का नया संवत है।

साल बहन का सोलह सौ शाका (सम्वत) लगा है और विक्रमी का सम्वत का पन्द्रह सौ पैंतीसवाँ वर्ष चल रहा है। इसी समय विजयाभिनन्द का सम्वत शुरू होगा। ज्योतिष शास्त्रों में भी ऐसा ही लिखा है।

संवत 1735 वि0 में हरिद्वार में कुंभ के पर्व पर एकत्र कुछ हिन्दू धर्माचारियों ने बौध धर्म को ध्यान रख कर महामति प्राणनाथ को "निष्कलंक बुध" की उपाधि प्रदान की। और तभी से महामति प्राणनाथ को "विजयाभिनन्द बुद्ध" का अवतार कहा जाने लगा।

धनी जी ध्यान तुम्हारे रे

धनी मेरे ध्यान तुम्हारे, बैठे कुकड़ी वरस सहस्त्र चार ।

छै से साठ बीता समे, दुनिया को भयो आचार ।।

म0कि0पु0 53/1

हे स्वामी ! हम तो आपके ध्यान मग्न थे और आपके ध्यान में बुध जी अव-तरित बैठे थे। कलियुग के जब चार हजार, छः सौ साठ साल बीतने तक संसार में कर्मकाण्ड और बाह्य आचार -विचारों का ही बोल बाला रहा। अतः जब तक बुद्ध जी का अवतार नहीं हुआ था अनेक प्रकार के अत्याचारों की ज्वाला धधक रही थी।

आवती धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।
सो सब बानी सबेकी करी, अब आप करो दीदार ।।
प्र०कि०पु० 53/7

अब मेरे स्वामी आ गये हैं स्वयं अवतरी पुरुषों ने पुकार-पुकार कर ऐसी घोषणा की है। और भविष्यवाणी करने वालों ने कहा कि प्रभु आयेंगे इसी लिए सबके वचनों को सिद्ध करने प्रभु आज आये हैं। अब आकर उनके दर्शन करो।

पेहेरयो जागी के बांधी कंमर, अस्व उजले भए अस्वार ।
होसी बड़ा मेला अरस सबै, साथ होत सबे तैयार ।।
प्र०कि०पु० 53/10

बुधजी ने निष्कलंक जाग का वस्त्र पहनकर अधर्मी रूपी कलियुग को मारने के लिए कमर कस के तलवार बांध ली है और सफेद घोड़े पर सवार होकर चले हैं। जहाँ एक ही अर्श में मेला लगेगा। इस आनन्द मिलन के लिए सुन्दर साथ तैयार हो रहे हैं।

आई नूर बुध बेराट माहीं, विस्व करी सो निरविकार।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाए सो मंगलचार ।।
प्र०कि०पु० 54/5

अक्षर की बुद्धि का अवतरण जब हुआ तो उसने संसार को निर्विकार बना दिया और छोटे-बड़े नर-नारी आदि ने मिलकर मंगल चार गाया।

जोत जागृत बुध जोर हुई, सत बाणी कियो है विस्तार ।
कालिंगा कुली मारिया, सत सुख वरत्यो संसार ।।

म०कि०पु० 55*25

जो जागृत बुद्धि की उसकी ज्योति अधिक बढ़ी है। सत्यवाणी का विस्तार हुआ कलियुगी दैत्य का संहार होने लगा। संसार में सुख बटने लगा। इस प्रकार बुध जी सत्य सिंहासन पर आसीन हुए।

निष्कलंक बुध

सन मुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विश्वको बोध ।
घर घर आनंद उछव, कुली पोहोंची आद्यो सब के ओध ।।

म०कि०पु० 55/23

बुध जी ने सम्मुख आकर सब लोग एक रस हो गये। विश्व में परस्पर विरोध की कटुता मिट गयी। कलियुग के प्रभाव से जो कलुष बढ़ गया था, उसे दूर किया । घर- घर में आनन्द उत्सव होने लगे।

ए बात पोहोंची जाय बैकुंठ, कुलजो रैं उठायो उनमान ।
सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे, विस्नु लछमी नराएन ।।
न०कि०पु० 55/23

यह बात तो अब बैकुंठ तक पहुंच गयी है। कुलजी से आकर अटकल भरे ज्ञान को दूरकर सत्य ज्ञान का प्रकाश दिया। शुकदेव मुनि, शिवजी, ब्रह्मा, विष्णु लक्ष्मी- नारायण आदि देवता भी उन्हें नमन कर रहे हैं।

मुक्ति दे सब जीवों को, पावें पसु पंखी नर नार ।
होसी वैराट ए धर्नं धंन, सुख आनन्द अखंड अपार ।।
न०कि०पु० 55/24

बुध जी ने सारे ब्रह्माण्ड के जीवों को मुक्ति की। सब पशु पक्षी, नर-नारी सभी को मुक्त सुख यह विराट जिसमें कि जागनी-लीला हुई वह सब धन्य हो जायेगा सबको अखंडानंद एवं अपार सुख मिलेगा।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया।
देत दीदार सबनको सांई, जिनहुं जैसा चाह्या ।।
न०कि०पु० 59/7

सबके स्वामी (सुर असुर) यही बुध जी हैं। उनके दृष्टि में किसी के लिए कोई भेद भाव नहीं है सबको मनचाहे रूप में दर्शन देकर सबकी कामनायें पूर्ण करते हैं। अत: सबको सम्बोधन करते हुए महामति कहते हैं कि --

साधो वेदवानियों, ए वानी समझा फकर ।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर ।।

ऐ मेरे साथी अंगनाओं। समय को पहचानो यह सब नये युग के आगमन का उद्घोष है अपनी अंतर्दृष्टि खोलकर देखो। यह वाणी आपके लिए ही अवतरित हुई है।

सुरता तीनों ठौर की, सत आई देह धर ।
ए तीनों रोशन नासूत में, किया जाहेर जमाने आखर ।।

म०कि०पु० 79/3

तीनों विभिन्न स्थान जहाँ बैकुंठ अक्षर धाम, परमधाम की आत्माओं ने मृत्यु लोक में आकर शरीर को धारण किया। यह तीनों मृत्युलोक में आकर मानव तन लेकर एक साथ प्रकट हुई। इमाम मेहदी (निष्कलंक बुद्ध) ने अन्त में, तीनों को अलग करके दिखा दिया।

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम ।
अव्वल आखर दोऊ दीन में, एही बुजरक महंमद नाम ।।

म०कि०पु० 121/5

इन सब महान लोगों को जो प्रशंसा प्राप्त है वह सब उस मुहंमद की है जिसे श्याम नाम दिया गया। आदि से अन्त तक और सभी धर्मों में तथा अन्तिम समय में आने वाले मुहंमद मेंहदी (निष्कलंक बुद्ध) को ही श्रेष्ठ नाम दिया गया।

प्रत्येक युग में धार्मिक ज्ञान के वक्ता होते हैं परन्तु वह सब एक ही ईश्वर के अवतार होते हैं जैसे परशुराम, राम, कृष्ण और बुद्ध ब्रह्म के अंश हैं यह सब भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इसी प्रकार मूसा, ईसा और मुहम्मद बुद्ध ब्रह्म की शक्ति के अवतार माने गये हैं महामति प्राणनाथ कहते हैं कि

जो ब्रज में कृष्ण हुवा वही अरब में मुहम्मद हुआ और वही गुजरात में महामति हुए।

महामति अपने गुरु श्री देवचन्द्र जी में श्यामा जी का और स्वयं में इन्द्रावती का आवेश मानते हैं और अक्षरातीत परमात्मा का आवेश, श्यामाजी की आत्मा, नूर, हुक्म और परमधाम का बोध — इन पाँच शक्तियों के समावेश से इन्द्रावती "महामति" हुई तो उसने तारतम ज्ञान के प्रकाश से जगत को ज्योति दी जो आगे तारतम के बारे में कहा जायेगा।

वही ईसाई के जीसस है, मुसलमानों के मुहम्मद या इमाम मेंहदी हैं और हिन्दुओं के "बुद्ध निष्कलंक" है जो कि जागनी के लिए अवतरित हुए।

> नुह नबी को वारसी, आदम बई पोहोंचाए ।
> आए ईसा नुह नबी इमाम में, सो आदम सफी अल्लाह ।
> मा०कि०प्र० 61/18

आदम ने नुह पेगम्बर को उत्तराधिकारी चुना आखिरकार इस इमाम मेंहदी में ईसा, नुह, सफी अल्लाह, आदम का नूर- उनके द्वारा दिए गए आश्वासन को पूरा करने के लिए प्रकट हुआ।

आदम= आदि मानव । कतेब के अनुसार "आदम" पहला मानव था जिसे खुदा ने स्वयं बनाया था महामति प्राणनाथ ने श्री देवचन्द्र को ही आदम कहा है फिर दूसरे जामा के रूप में प्राणनाथ के रूप में भेजा।

रूहों को भी आदम कहा

सफी= जो खुदा के मित्र है हजरत आदम को यह उपाधि मिली। कियामत के समय सफी अल्लाह श्री देवचन्द्र हैं। वे खुदा के अंश स्वयं श्यामा जी के अवतार

नूह= नूह तोफान- महा प्रलय के समय बचा लिए जाने वाले पैगम्बर खुदा के आदेश से इन्होंने एक किश्ती बना कर अच्छे लोगों के साथ संसार के प्रत्येक जीव, पशु-पक्षी के जोड़े और वनस्पति के बीज को बचा लिया। शास्त्रों में इसी कथानक को मनु की कथा के रूप में लिखा है।

भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार ।
दुनियां उठाइ पाक कर, न जरा रह्या विकार ।।

म०कि०पु० 61/21

सारे संसार में निष्कलंक बुद्ध, श्यामा मेंहदी के अपार गुणों की बड़ी महिमा गायी गयी है। समस्त संसार के जीवों को पवित्र करके ऊँचा उठाया । तनिक भी विकार शेष नहीं रह गया।

महामत कहे कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर ।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे बतनी नूर ।।

म०कि०पु० 122/8

महामति प्राणनाथ कहते हैं जो अपना हृदय समर्पित कर इस वर्ण में होंगे जो कि इसे देखेंगे और सुनेंगे, उन आत्माओं पर परमधाम से अवतरित इमाम मेंहदी, निष्कलंक बुद्ध का नूर बरसेगा। वहीं उनके कृपा प्राप्त करेंगे। प्रत्येक धर्म में और प्रत्येक ग्रन्थ में मूलतः धार्मिक ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है जो यह एक प्रकार से सुरक्षित है मानव को ज्ञान ईश्वर के साक्षात से ही मिलता है वह किसी गुरु से मिलता है जो कि परमात्मा द्वारा प्राप्त सच्चा दृष्टा कहा जाता है। और सत् धन चिद् घन एवं आनन्दमय, ये तीन शक्तियां

भोक्ता एवं द्रष्टा पूर्णब्रह्म परमात्मा है जिसे सच्चिदानन्द कहते हैं। सत्धन मूर्तिमान और उसे अक्षर ब्रह्म कहा गया है, आनन्दधन मूर्तिमान और उसे श्यामाकहा गया है। उसे अर्द्धांगिनी भी कहा गया है। जिसमें 12000 अंगनायें हैं और यही अंगनायें अर्द्धांगनी इस ब्रह्माण्ड में तीन बार अवतरित हुई। पहला अवतरण ब्रज-गोकुल में राधा और गोपियों के रूप में हुआ। दूसरा योगमाया की देह में रास मंडल में हुआ तथा तीसरा-- श्री श्यामा श्री देवचन्द्र जी और दूसरे रूप में महामति प्राणनाथ के रूप में अन्य अंगनायें देहधारी हुई।

अतः सत्य श्री कृष्ण है और सतगुरु श्री श्यामाजी महामति प्राणनाथ हैं।

> साथ अंग हिरदार को, मोमन मन मरम ।
> मिलावे और अर्श की, दोऊ इनके बीच मरम ।।
>
> म०कि०प्र० 95/9

सभी ब्रह्मांगनायें, अर्थात सखी श्री श्यामा की अंगस्वरूपा हैं और श्यामा स्वामी की अंगना है अर्थात अंगना स्वामी और ब्रह्मात्मायें दोनों के बीच मधुर सम्बन्ध है जो कि कभी भंग नहीं होगी।

> जो सैयां इस धाम की , सो जानें सब को तोल ।
> स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयोंके मोल ।।
>
> म०कि०प्र० 95/6

और यह जो धाम की आत्मायें हैं परमधाम की सम्पदा की महत्ता को जानती है और श्री श्यामा और श्याम की अभिन्न अंगनाओं की महिमा का इन्हें बोध है।

हम भी आए इन खेल में, बुध न कछुए सुध ।
धनी आए अक्षरातीत, मोहे जगाई के विध ।।

म०कि०पु० 74/11

हम सब भी इस खेल में आ गये माया से ग्रसित हमारी बुद्धि को भी इसकी सुधि नहीं थी। धाम से अक्षरातीत स्वामी आये। उन्होंने ही कई प्रकार से हमें मोह से जगाया।

पहेले तोले बुध जाग्रत, पीछे तोले धनी आवेस ।
और तोले इसक तारतम, तब पलटे अपनो भेष ।।

म०कि०पु० 95/3

जो आत्मा में बुद्धि जागेगी सबसे पहले उसी की महत्ता होगी फिर धनी का आवेश का बल देखेगी। उसके प्रेम और तारतम की परख करेगी तभी बाहरी भेष समाप्त होगा जो ये धारणाएँ ग्रसित हैं तभी उनको दूर कर सकेगी।

कुरान पुरान रे वेद कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार ।
टाली उरझन लोक चौदेकी, मूल काढ्यो मोह अहंकार ।।

म०कि०पु० 53/8

सभी लोग अपनी बुद्धि द्वारा कुरान, पुराण, वेद, कतेब सबके मनमाने काल्पनिक अर्थ कर रहे थे। बुध जी ने ही सबके अर्थ को स्पष्ट निर्धारित किए। चौदह लोक के समस्त जीवों की उलझने मिटाईं और अनादिकाल में उनके मन में व्याप्त मोह और अहंकार को दूर किया।

महामति का बुध के प्रति आह्वान हुआ।

प्रकटे निसान रे धुमरकेत अंध मास, पर बुध न करे क्यूं कोई हत ।
वेगेसे पधारो रे बुध जी या समे, पुकार करें महामत ।।
प्र०कि०प्र० 58/21।

धूमकेतु नक्षत्र का उदय, वर्ष में एक महीने का क्षय आदि कलियुग के अन्त के समस्त लक्षण अब प्रकट हो चुके है औरयह कोई नहीं चेतता कि महामति पुकार उठते है कि हे बुध जी ऐसे संकट के घड़ी में आप जल्दी पधारिए।

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कहीं कुली की सब गम ।
चले जुध जान ब्रह्मसृष्टि के ,मिले नूर बुध हुकम ।।
प्र०कि०प्र० 60/22

फरिश्ते असराफील द्वारा परमधाम में हमारी पुकार पहुंची और स्वामी ने कलियुग के द्वारा किए उत्पात के बारे में सुना। ब्रह्म सृष्टि मे यह सब जानकर समस्त मंडली दुखी हो रही है। परमात्मा का नूर अक्षर की बुद्धि और हुकम (तेज ज्ञान, आदेश) असराफील के संग बुध जी में तदाकार हो गये ।

जाहेर हुई सबन की, आखर निरो आकल ।
अन्दर की उदे हुई, समे पायने फल ।।
प्र०कि०प्र० 79/25

जब अन्तिम कियामत की घड़ी आई तब बुद्धिमानों का वर्ग भी प्रकट हो गया। अंतर्मन का आवेग उपयुक्त अवसर जानकर फलीभूत हुआ मन की बात भी सामने आ गई।

के रूप में मानव को प्राप्त हुआ- जो कि शिव के लिए एक बन्धन सूत्र था।
और सनातनी और परंपराश्रित हिन्दू धर्म से सम्बन्धित धर्म को शास्त्रार्थ
में पराजित करने के बाद महामति प्राणनाथ को "विजयाभिनन्द बुध"
निष्कलंक की उपाधि प्राप्त हुई थी और फिर बुध जी के रूप में उनके
कुंजी तारतम ज्ञान को प्राप्त किया और यह भी कृष्ण के ही रूपों में कार्य
किया। कियामत के सात निशानों का महामति ने अपने ग्रन्थ मारिफत सागर
और खुलासा मारिफत में बड़ा सुन्दर ब्योरा दिया है और महामति प्राणनाथ
ने उन निशानों की तर्कसम्मत (लॉजिकल) व्याख्या दी है कई निशानियाँ बताई
हैं परन्तु मुख्य रूप से उन्होंने सात बताई है। और सात निशान के अन्तर्गत
महामति की कालयजी भूमिका प्रतीकित करता है इसको अर्थों को "जाहिरी
और बातिनी" अर्थों को कुरान और बाइबिल से भी ग्रहण किया गया है।
कुरान में कियामत का समय (महामति के अनुसार फर्द रोज बारहवीं सदी (
हिजरी) के पहले तीस वर्ष है) दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं सदी
(मुहम्मद साहब के बाद) मुकर्रर किया गया। जब जीव में चेतना दीप्त है,
तब वह किसी भी बन्धन को स्वीकार नहीं करती है। फलस्वरूप शरीर के
नष्ट हो जाने पर इस जीव के ज्योति या चेतन भाव शरीर पुनः अपने कर्म-
फल के अनुसार अस्तित्व ग्रहण करता है। और दूसरी तरफ इस नश्वर शरीर
रूपी कब्र में मृतक के समान पड़ी आत्मा का जाग जाना ही कियामत है।
यही वास्तविक आध्यात्मिक जागनी है।

खास उम्मतों कहियो जाई, उठो मोमनो क्यामत आई ।
हैहेतीहीं नामक कुरान, तुमारे आग्रा करों बयान ।।

म०कि०ग्र० /।

यह पद बड़ा क्यामत नामा का है जिसमें प्राणनाथ ने कहा है कि हे महाराज छत्रसाल जो ब्रह्म सृष्टि है उनसे जाकर कहो कि हे मोमिनों। उठो कियामत आ गई। कुरान में जैसा वृत्तान्त आया है तुम्हारे आगे मैं वैसा ही वर्णन करती हूँ।

साथ जी जागिए सुनके सबद आखर ।
सकल आउध अंग साज है, दौड़ मिलिए धनी निज घर ।।

म०कि०ग्र० 86/।

इसमें महामति प्राणनाथ कहते है कि कियामत की घड़ी में जो प्रकट हुआ है उसके वचन सुनकर जाग्रत हो जाओ। गुण, अंग इन्द्रियों के योग्य समस्त अस्त्र, अंग-प्रत्यंग में सजाये प्रियतम से अपने परम घर में मिलने को दौड़ पड़ो। बड़ा कियामत में जो कुरान के संकेत किया है उसमें महामति प्राणनाथ ने होशियार होने के लिए कहा है। वसीयत नामें जो दिल्ली में (मक्का से) आए उनमें लिखा है कि ग्यारहवीं सदी म० में सबकी बेवाकी होगी। बेवाकी का अर्थ है कि ग्यारहवीं सदी में जब दस वर्ष बाकी रहे तब इमाम साहिब ने स्वामी श्री प्राणनाथ जी के रूप में आकर सबका हिसाब बेबाक कर दिया। अर्थात जिसकी जैसी बन्दगी पहचान थी उन्हें उसी प्रकार का फल देकर अखंड कर दिया। इसी समय वि०सं० 1735 में दुनिया की उमर पूरी हो चुकी और बुद्ध निष्कलंक का आना जो लिखा था उन सब भविष्य वाणियों को सत्य सिद्ध

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो ऐनाखिर ।

धनिएँ बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्योंकर।

म०कि०प्र० 86/4

अपने मुख से उच्चारित बान के शब्दों को जीवन में उतार लेने एवं तदनुसार चलने का समय आ गया है मुझे भी स्वामी के यथानुदेश द्वारा चरितार्थ करना है। अब मैं भी पीछे कैसे हट सकता हूँ। हजरत मुहम्मद रसूल ने खुदा को दावा पेश किया अर्थात् विनती की कि मेरे हाथों कियामत का भेद खुले तब कुरआन और हदीसों में यह करार बाँधा है कि जब ग्यारहवीं सदी पूरी होगी तब कियामतहोगी। इसके विषय में इशारा इस तरह है कि एक लड़की ने धोखे से मुहम्मद के बाल ले लिए- उसकी रस्सी बना कर मुहम्मद का नाम लेकर उसमें ग्यारह गांठ लगा दी।

बड़ा क्यामत प्र०16/2

लिखा है कि मोहब्बती दरिया से आखिरी मुहम्मद रूपी मोती निकाला गया। इसीलिए आखरी स्वरूप को अमोलक मोती कहा गया। इस लिए यहाँ ऐसा कहा गया। हैवान जो काफिर है उनको "खारा आब" की उपमा दी गई। दो जमायतें अर्थात मोमिन फरिश्ते दो दरियाव अर्थात परआतम, धाम से उतरी हैं।

बड़ा०क०प्र० 16/18

हदीसों में लिखा है कि इसी रोज इसराफील इमाम मेंहदी के अन्दर बैठकर सूर फूंकेगा। सो इसराफील ने आकर कुरआन को जाहिर करने वाली वाणी गायन की। एक सूर फूंकने से सब का गुमान अहंकार उड़ाकर गरीबी नम्रता से भर दिया। दूसरे सूर में निजनाम का मन्त्र फूंक कर सब को अखंड बहिश्तों

में कायम करें दिया।

क0म0पु0 16/21

चालीस वर्ष की उम्र में दस वर्ष मोमिनों की जागनी हुई। इस दस वर्षों में हरिद्वार से पन्ना तक दुनिया की हर जाति के लोगों की नजर स्वामी जी की ओर रही। ग्यारहवीं सदी पूर्ण हुई। तीस वर्ष जब बारहवीं सदी के व्यतीत हुए तो दुनियाँ के बीच आखिरत और कियामत का काम जाहिर हो गया जब सब की जागनी हुई। दस और दो कुरों का बयान बारहवी सदी में कियामत की ओर संकेत है। तेरहवी सदी में ब्रह्म सृष्टि की तरफ रुख लेकर देवी देवताओं की रूह जागनी है। तेरहवी सदी के बाद समस्त संसार नूर (अक्षर ब्रह्म) की नजरों तले आठों बहिश्तों में अखण्ड हो जायेगा।

क0म0पु0 22/46,47,48

ब्रज, रास के कृष्ण, कुरान लाने वाले मुहम्मद, तारतम लाने वाले श्री देवचन्द्र जी और जागनी के मालिक पाँच स्वरूपों को पहचान कर जो पाक दिल से इनकी बन्दगी करेंगे सो बहिश्त अर्थात परमधाम के रहने वाले परमात्मा के हुकुम से पीछे नहीं हटते । झूठे धाम, बदफैल करने वाले दोजखी लोग आग में पड़ेंगे।

न तो कोई परमधाम की राह जानता है न कियामत का दिन। इस समय हकी सूरत ने आकर कियामत के भेद जाहिर किए और बेतन कर दिए। जिस दिन खुदा के तख्त पर बैठ कर न्याय करेगा उस दिन नेक कामों का बड़ा भारी बदला मिलेगा। अपने हाथों सजा देकर सीधा करेगा।

जिन मोमिनों ने कियामत का समय पहचान धर्म की राह पकड़ी वे फज़ के नूर वक्त में परमधाम में उठे। फज़ के उपरान्त जब दिन हुआ, सबका भ्रम टूटा तो हकी स्वरूप की पहचान कर सबने तोबा-तोबा की।

हुकुम के एक सूर में सब को उड़ाकर फना कर दिया दूसरे हुकुम से तेरहवीं में सब को अखण्ड बहिश्त में खड़ा किया। इस तरह कियामत और अखिरत का दिन सबमें जाहिर हुआ। आखिरी मुहम्मद हकी स्वरूप ने मोमिनों के लिए सब भेद खोल कर उन्हें रोशन किया।

म०कि०प्र० 24/4,6

इस प्रकार तेरहवीं सदी में कयामत का दिन प्रकाश में आया और कयामत के समय सामूहिक जागनी एवं मुक्ति का पथ-प्रशस्त करती है। इसके बाद कुलजम स्वरूप का रूप ले लेती है।

महामत कहे मेरे साथ जी, जीजो आखर के बचन ।
हुकम सरत पोहोंची दया, बहु अंग अपने करो रोसन ।।

म०कि०प्र० 86/20

महामति कहते हैं कि हे मेरी सभी आत्माओं अन्तिम युग कियामत की बेला में कहे गये इन वचनों पर ध्यान दो परमात्मा के आदेश उनके वचन की पूर्ति और उनकी दया की घड़ी निकट आ गई है। इस ज्ञान प्रकाश के समय अपने में ज्ञान का प्रकाश भर लो।

धनी में अरधांग धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार।
हुकम महंमद नूर ईसा मेला कजा बनाम मेहदी सिर मुद्दार ।।

म०कि०प्र० 54/2

है स्वामी मैं आप की अर्धांगिनी हूँ अक्षर-ब्रह्म की बुद्धि ने मुझमें प्रवेश किया है और उसको अपने कई रूपों से वाणी द्वारा प्रस्तुत किया है परमात्मा के आदेश पर ही मुहम्मद और रूह अल्लाह ईसा के पुनरागमन के द्योतक-देवचन्द्र जी द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान ने मिलकर इमाम मेंहदी के लिए "अन्तिम दिन के न्याय" (क्यामत) का दायित्व सौंपा है।

इस प्रकार 17वीं शती ई0 में औरंगजेब के काल में अवतरित होकर महामति प्राणनाथ ने समस्त विश्व की सोती आत्माओं को देश-भेद, जाति-भेद, रंग-भेद, लिंग -भेद तथा अन्य सभी प्रकार के भेदों को मिटाकर सब की आत्मा को परमपद, "परमधाम" "परमगति" तक पहुँचाने के लिए, निज स्वरूप को पहचानने के लिए आध्यात्मिक जागनी का संदेश दिया। इस आध्यात्मिक जागनी के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्हें विश्व के सारे के धर्मों, जातियों, भाषाओं की एकता का संदेश देना पड़ा। इस प्रकार महामति प्राणनाथ की जागनी मात्र आध्यात्मिक जागनी न होकर एक सर्वांगीन जागनी बन गयी। यह जागनी सार्वभौमिक चेतना जगाने के कारण एक आन्दोलन के रूप में धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक जागनी के सह उद्देश्य को लेकर 17वीं शती में ही सार्वभौमिक सुधार आन्दोलन का बीज बनकर प्रकट हुई।

धार्मिक जागनी

महामति प्राणनाथ ऐसे समय आये थे जिस समय भारतीय समाज पतन के कगार पर खड़ा था। हिन्दू मुसलमानों में घोर अंधकार छा चुका था। ऐसे गिरती हुई दशा को ध्यान में रखते हुए ही मानव धर्म की संस्थापना की तथा संघर्ष किया। और समाज को टूटने से बचाया। अपने धर्म क्रान्ति तथा मानव उत्थान के लिए एकता की समस्या पर दृष्टिपात किया। श्री देवचन्द्र जी द्वारा प्रणामी पंथ जो कि एक मूल आधार पर स्थापित है जिसका मार्ग सत्य, प्रेम, सेवा , शुद्धता, त्याग, समर्पण है जो की एक धार्मिक जागनी की ही श्रृंखला है धाम तक पहुँचने के लिए अपने परिणाम को सामाजिक , राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक को रखा। महामति प्राणनाथ के इसी आह्वान से ही भक्ति आन्दोलन को धार्मिक जागनी कहा। महामति प्राणनाथ युग में हिन्दू मुस्लिम धर्म की एकता में झगड़ रहे है एक दूसरे में गहरी खाई बन गई थी उस समय औरंगजेब को जो धर्मकट्टर था उसको सत्य धर्म का पैगाम पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे थे। मानव धर्म स्थापित करने में महामति प्राणनाथ को कठिन संघर्ष करना पड़ा। और तर्कशास्त्र के माध्यम से हरिद्वार में सामाजिक , धार्मिक विजय स्थापित किया और एक धर्म सूत्र में बाँधने का आह्वान किया।

पातसाहों पड़ी जानियां, मोती जवेर सिर ताज ।

इनका एही किबला, वाहें ज्यादा अपना राज ।।

म०कि०प्र० 108/26

इसमें दुनिया के बादशाहों की आलोचना करते हुए महामति कहते हैं कि मोती जवाहर, चमकीले रत्न सर्वश्रेष्ठ निधि नहीं है उनके लिए पत्थर ही परम पूज्य है। ये बादशाह लोग (औरंगजेब की ओर संकेत) अपने ही राज्य को अधिक बढ़ाना चाहते हैं और उसी को सर्वोत्तम निधि समझते हैं।

जिस समय महामति प्राणनाथ का आविर्भाव हुआ संसारी लोग युद्ध के लिए ठान रखा था अतः कहते हैं कि —

> धन ने धारी रे धन हत ले वढंया, कोई उपज्यो असुर अर अंत ।
>
> जुधने करने उठया अरससों, सब देखे खड़े राजवंस ।।
>
> म०कि०पु० 58/5

जितने भी आसुरी लोग बने है उनको नाश करने का दृढ संकल्प किया है अब आसुरी गृह में ऐसी ही शक्ति का जन्म हो गया है जो लोग धर्म का नाम लेकर सर्व संसारी युद्ध की ठान ली है और जितने राजवंशी हिन्दू है खड़े होकर देख रहे है।

> भरत खंड रे हिंदू धरम जानके, मांगि विस्नु संग्राम करथ।
>
> फिरत आप रे ढढेरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ ।।
>
> म०कि०पु० 58/6

भारतवर्ष में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत किसी अवतारी निष्कलंक बुद्ध (इमाम मेंहदी) का आविर्भाव हो चुका है और यह सब जानकर भी वह बादशाह देवता विष्णु की शक्ति को चुनौती देकर धर्मयुद्ध करना चाह रहे है और यह कहा जा रहा है कि कोई समर्थ देवता हो तो मेरा सामना करें।

त्रैलोकी में उत्तम भरतखंड, तामें उत्तम हिन्दू धरन ।
ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही बल सरन ।।

म०कि०प्र० 58/4

इसमें भारत के हिन्दुओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि - भारतवर्ष में हिन्दू धर्म श्रेष्ठ है। तीनों लोक में भारत वर्ष श्रेष्ठ है। ऐसे (पाताल, मृत्यु लोक, स्वर्ग) ऐसे कुछ और देश के स्वामीयों, नरेशों का सिर लज्जा से झुके हुए हैं।

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वेस्नव भेष दरसन ।
धरन उछेदे रे असुरे सबन के, पीछे परखा देखोगे किस दिन ।।

म०कि०प्र० 58/10

हे सिद्ध, साधु, संत, महंत एवं वैष्णव विभिन्न पंथियों एवं दर्शनाचार्यों। असुरों ने सबके धर्म को समूल नष्ट कर दिया है। अब बाद में, किस दिन अपनी शक्ति को परखने का अवसर पा सकते। यह सब उस समय का वर्णन है जब औरंगजेब का राज्य था देश में अत्याचार हो रहे थे। धर्म के लिए एक दूसरे से झगड़ रहे थे।

बरद्वार ढहाए उदाए तपसी तीरथ, गोवध कैयों विध्न ।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कमर न बांधी रे किन ।।

म०कि०प्र० 58/13

हिन्दू देवताओं के मन्दिर गिरा दिए। जो साधनाकर रहे थे उनकी भूमि को एवं तीर्थों को भ्रष्ट किया। तपस्वियों को तीर्थों से खदेड़ दिया

गया। गोवध हो रहा था पूजा के अनुष्ठानों में विघ्न पड़ रहा था । संसार का इतना अत्याचार हो रहा था त्राहि-त्राहि मची हुई थी- धर्म की रक्षा के लिए किसी सूरमा ने कमर नहीं कसी।

> प्रभु प्रतिमा रे गज पाउ बांध के, घसीट के खंडित कराए ।।
> फरस बंदी ताको करके, तापर खलक चलाए ।।
>
> म०कि०पु ० 58/15

जो आततायी प्रभु की प्रतिमाओं को हाथी के पांव में बांधकर घसीटते हुए ऐसे तुड़वा रहे हैं, या उनके टुकड़े के फर्श पर जड़वाकर इसके ऊपर से लोगों को चलने पर विवश करते हैं।
इतना होने पर भी धर्म के गूढ़ रहस्य के अर्थ को समझना मुश्किल है।

> कलियुगे जेहेन रे अंतके सब किए , लोक बतावें अबु दूर अंत ।।
> अर्थ अन्दर का कोई न पावे बारे बरस बाहेर के ले कूकत ।।
>
> म०कि०पु० 58/19

इसमें महामति प्राणनाथ कहते है ये तो कलियुग है इसका अन्त अन्तिम और शीघ्र है पर इसको जानकर भी लोग कहते हैं कि इसका अन्त अभी दूर है और इसके रहस्य को समझे बिना ही व्यर्थ के झगड़े में पड़े हुए हैं।

> शास्त्रे अवरदा कही कलियुग की वार लाख बत्तीस हजार।
> काटे दिन पावें किसया नाहिं शास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार ।।
>
> म०कि०पु० 58/17

शास्त्रों में कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हजार बताई गई है। और उसमें यह भी लिखा है कि पाप बढ़ जाने के कारण कलियुग की आयु घट जाएगी और गुरु से विचार करने पर ही इसके अर्थ स्पष्ट होते हैं।

असुर लगे रे धरम जुध मागही, सुर के हेमाए जो न दीजे ।
पुछो ने पंडितों जुध दिए बिना, धरम राज कैसे कहीजे ।।
प्र०कि०प्र० 58/7

धर्म युद्ध के बिना धर्मराज कैसे कहलाएंगे, पंडित पुरोहित सभी यही बात कहते हैं जो धर्मराज अर्थात अक्षर कहलाने वाले लोग भी सामना नहीं करेंगे तो वह लोक परलोक में लज्जा के पात्र बनेंगे। यदि असुर म्लेच्छ को हिन्दुओं को "काफिर" कहकर धर्मयुद्ध (जिहाद) को ललकार कर ही सामना कर सकते हैं।

राजकुली रे रहन रजवट, जो न आया इन अवसर ।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर ।।
प्र०कि०प्र० 58/8

और इसी राजकुल की मर्यादा पालने के लिए इस अवसर पर जो प्रस्तुत नहीं हुआ तथा धर्म की हानि के लिए जो समय पर न्योछावर नहीं हुआ, उसे सुर (हिन्दू) कैसे कहा जा सकता है।

असुरे लगाया रे हिन्दुओं पर जेजिया ताको नहीं सरम पान ।
जो गरीब न दे सके जेजिया, ताए मार करें मुसलमान ।।
प्र०कि०प्र० 58/16

मुग़ल बादशाह {अर्थात् औरंगजेब} ने उन हिन्दुओं पर भी "जजिया" लगाया है, जिन्हें खाने पीने को कुछ भी नसीब नहीं। जो निर्धन बिचारे जजिया नहीं दे सकते, उन्हें मार-मार कर मुसलमान बना लेते हैं।

इस प्रकार धार्मिक जागनी के संदेश के रूप में महामति प्राणनाथ ने हिन्दुओं, में स्व धर्म चेतना जगाने का संदेश दिया। लेकिन हिन्दुओं में धार्मिक चेतना जगाने का अर्थ इस्लाम, ईसाई, बौद्ध धर्म के प्रति एकता के भाव को नष्ट करना नहीं था। सर्व-धर्म-सम भाव महामति प्राणनाथ की धार्मिक जागनी का मूलमंत्र है।

अध्याय 5

अर्थ

अध्याय 5

धर्म

धर्म शब्द की उत्पत्ति "धृ" धातु से हुई जिसका अर्थ है— धारण करना । संभाले रखना । धर्म शब्द के अन्तर्गत सारे मंगलमय कार्य आते हैं। जिस बात से लोक और परलोक में मानव को व्यापक अनुभूति की प्राप्ति हो- "वही धर्म है" सर्व मंगलमय कार्य वह है जिसके द्वारा लौकिक अभ्युदय और पारमार्थिक निःश्रेयस की उपलब्धि होती है। "अभ्युदय " का तात्पर्य है जीवन में भौतिक उपलब्धियाँ। सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक तथा अन्य क्षेत्रों में प्रगति पर ले जाने वाला मंगलमय कार्य ही धर्म की संज्ञा पाता है। इस प्रकार जितने भी नैतिक कतर्व्य है चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, राजनैतिक हो, तथा अन्य कर्त्तव्यों से सम्बन्धित हो उन सभी नैतिक कर्त्तव्यों की गणना धर्म के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत मानी जाती है इस प्रकार अपने व्यापक अर्थ में धर्म जीवन के समस्त नैतिक कार्य कलाप को संगृहीत करता है। एकात्मकता।

जो शक्ति मानव को तथा आत्मीयता के प्रेम सूत्र में बाँधती है वह शक्ति धर्म है जो एकम भाव तथा आत्मीयता को तोड़ती है वह माया है। निःश्रेयस का पूर्ण तात्पर्य है कल्याण या अध्यात्मिक जीवन की उपलब्धि है निःश्रेयस जिसका तात्पर्य लोक से परे या लौकिक जीवन से परे। अभ्युदय इसी

इसी जीवन का पाथेय है किन्तु निःश्रेयस इस लौकिक जीवन से परे अनन्य जीवन का मंगलमय कार्य है। इसी लिए निःश्रेयस मार्ग वह मार्ग है जिससे परमार्थ की प्राप्ति होती है भारतीय जीवन के चार परमार्थ माने गये है- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

धर्म शब्द का अर्थ है नैतिक कर्त्तव्य और अर्थ का अर्थ है जो नैतिक कर्त्तव्य करके धन उत्पन्न होता है। काम का अर्थ है जीवन का सारा भोग, शरीर का भोग, इन्द्रिय भोग या मानसिक तृप्ति या भोग, इस प्रकार अर्थ सब प्रकार के लौकिक भोग का पर्यायवाची शब्द है । ये सभी प्रकार के भोग सुखात्मक या दुखात्मक है। इसी लिए ये अनित्य है शाश्वत है नश्वर है। प्रमुखतः ये मानसिक स्थिति और लोक और वातावरण की प्रक्रिया से उत्पन्न है।

इन समस्त लौकिक नश्वर भोगों से अतिरिक्त सुखः दुख से परे, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से परे परमानन्द की प्राप्ति है जो अखंड है शाश्वत है, आध्यात्मिक है, उसे मोक्ष की संज्ञा दी जाती है इसी आध्यात्मिक आत्यन्तिक आनन्द को मोक्ष की संज्ञा दी गई है। मोक्ष की स्थिति परमसत्य, परम शिव, परमानन्द की उपलब्धि है क्रमशः धर्म का उद्देश्य या तात्पर्य इस लौकिक उद्देश्य न होकर इसी परिमार्जित आनन्द से होता है इस पारमार्थिक शाश्वत आनन्द की प्राप्ति के लिए भिन्न भिन्न कालों, भिन्न भिन्न देशों में मानव जाति ने अनेक साधन निकाले। इस परमानन्द स्वरूप और उपलब्धि के साधनों में भी भिन्न भिन्न देश

काल परिस्थितियों में भिन्न भिन्न मार्गों की अवतारणा की गई। ये भिन्न भिन्न मार्ग ही भिन्न भिन्न धर्म है। इस लिए देश काल, परिस्थिति के भिन्नता के कारण संसार के अनेक धर्मों का उदय और विकास हुआ।

जब से इस सृष्टि में मानव जीवन का विकास हुआ तब से लेकर आज तक देश काल परिस्थिति के कारण धर्म की परिभाषा धर्म की प्रकृति स्वभाव उसके लक्ष्य और धर्म के साधनों के सम्बन्धों में अन्तर मिलता है धर्म की आवश्यकता व्यक्ति और समाज के संदर्भ में क्या है और कितनी है इसे परिरेखित करने का प्रयास तब भी था और आज भी है।

जो शक्ति मानव को एकात्मभाव तथा आत्मीयता को तोड़ती है वही माया है। मध्यकाल से ही प्रयास जारी रहा है उस समय भी धर्म की आवश्यकता थी और आज भी है यह बात अलग है कि धर्म की आवश्यकता व्यक्ति और समाज के संदर्भ में कितनी है। मध्यकाल में व्यक्ति और समाज की चेतना का स्वरूप धर्म ही था मानव धर्म का सच्चा सिद्धान्त सभी धर्मों में एक सा है मानव धर्म के जीवन के तीन लक्ष्य है। —

1- संसार के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक भेद-भाव को मिटा देना।

2- समस्त विश्व को एक करना।

3- समस्त धर्म ग्रन्थों को समन्वित करना।

विश्व में प्रमुख धर्म है हिन्दू, बुद्ध, इस्लाम और ईसाई। यह जो धर्म के चार मूल तत्व है मध्यकाल में व्यक्ति और समाज की युग चेतना का माध्यम धर्म ही था मानव के व्यवहारपूर्ण सम्बन्धों की खोजी गई

मर्यादाओं को बदलने की तैयारी थी।

मध्यकाल में भारतीय समाज अनेक कुप्रथाओं से घिरा हुआ था पूरे देश में दो समाज हो गये थे हिन्दू और मुसलमान धर्म। दोनों समाज की गिरती हुई दशा को देखकर महामति प्राणनाथ ने मानव धर्म का पुनर्दर्शन किया और समाज को टूटने से बचाया धर्म को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। यही जीवन में उनका लक्ष्य रहा।

महामति ने यही नहीं भागवत धर्म (वैष्णव धर्म) की परम्परा में ही इस्लाम के सिद्धान्तों को मिलाने का प्रयास किया। उनके पास जिस धर्म को मानने वाला उसी धर्म ग्रन्थ से उसके धर्म का सत्य स्वरूप दिया। कुरान को सामने रख कर मुसलमानों को दीन इस्लाम की राह बताई। कतेब, किताबों का सार कुरान है। इसी तरह हिन्दू धर्म ग्रन्थों गीता और भागवतादि के प्रमाण देकर हिन्दुओं को सत्य धर्म स्थित होने का आग्रह किया वास्तव में सभी ग्रन्थ एक ही धर्म की ओर राह दिखाते है। वही मोमिन, ब्रह्मसृष्टि और निर्गुण है। मानव को एक सत्य सनातन धर्म, हकीकी दीन, इस्लाम, निजानन्द में प्रतिष्ठित कराना ही महामति का लक्ष्य था।

धार्मिक जीवन और सांसारिक जीवन:-

धार्मिक जीवन और सांसारिक जीवन

धर्म मध्यकालीन जीवन का आदर्श रहा है उस समय भी धर्म की आवश्यकता थी और आज भी है यह बात अलग है कि धर्म की आवश्यकता व्यक्ति और समाज के संदर्भ में कितनी है। मध्यकाल में व्यक्ति और समाज की चेतना का स्वरूप धर्म ही था। मानव धर्म का सच्चा सिद्धान्त सभी धर्मों में एक सा है। तथा उसका वर्णन हर ग्रन्थ में मूलत: एक सा है सभी धर्म ग्रन्थ मानने वाले यह कहते है कि हमारा धर्म सच्चा है। धर्म के नाम पर जब अधर्म बढ़ा तो अवतारी पुरुषों और पैगम्बरों का अवतार हुआ अत: धर्म एक है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए महामति अवतरित हुए। मानव को ऊँचा उठाया, धर्म में सहायक बने। उन्होंने सनंध में कहा है कि—

मुसलिम को मुसलिम की, हिन्दुओं हिन्दुओं की सर ।
ए सबके सब अपनी मिले, जब आए इमाम आखर ।।

सनंध 33/80

महामति ने कहा मुहम्मद साहब ने जिस धर्म की ओर संकेत किया वह हकीकी दीन इस्लाम है उसे स्वयं को मानने वाले भी नहीं अपना सके। कुरान को पढ़ने और उसका गूढ़ अर्थ को समझने का अनोखा दृष्टिकोण और उसके रहस्यों की कुंजी महामति ने दी। अपने गुरु देवचन्द्रजी की इच्छा पूरी करने के लिए व्यवहार में "कुरान शरीफ" को हिन्दू धर्म ग्रन्थों की तरह मान्यता दी और संघर्ष और संकट के समय हिन्दुओं की संस्कृति रक्षा की। महामति हिन्दू संत होते हुए भी सभी धर्मों की एकता को

स्थापित किया। वैसे भी बुनियादी सिद्धान्त और मूल तत्व एक है और सभी सन्त धर्म के मूल तत्व को एक माना है और उस एकता को ही सच्चा धर्म माना है महामति धर्म प्रचार के लिए अनेक भारत के भागों में घूमें।

धर्म के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा संसारिकता की होती है संसार के वे सामान्य लोग जो अपने शरीर मन, बुद्धि तक सीमित रह कर इन्हीं की सन्तुष्टि में ही परमार्थ मानते है जो कि लौकिक वैभव को ही परम सत्य मे मानते है वही लोग संसारिक है वही माया में फसे भोग है। महामति प्राणनाथ ऐसे संसारिक जीवों को ही "प्रवाही जीवों" की संज्ञा दी है।

प्रवाही जीव संसार रूपी नदी के प्रवाह में कूभी के तरह बहते हुए दिखायी देते हैं। ये संसारी जीव ही महामति के दृष्टि में माया में फंसे जीव है कलयुग, शैतान, दज्जाल इनके अन्तःकरण में शासन करता है ऐसे संसारिक जीवों की महामति ने अपने किरंतन पदावली में भर्त्सना की है।

प्राणनाथ ने अपने किरंतन के 133 प्रकरणों में प्रायः सर्वत्र ब्रह्म, माया, जीव आत्मा-परमात्मा, संसार, साधना, गुरु, धर्म, धर्माचार्यों आदि के बारे में विस्तार से वर्णन किया है।

> भरम की रही विस्तारी, भरम सौं भरम भरमाया।
> साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना ।।
> किर० 3/6

इसमें ऐसे साधु की खोज करने के लिये कहा है जो सत्य को खोज सके। जो माया जन्य जीव स्वयं असत्य को ढक लिया है और इस असत्य आवरण को हटाने के लिये सतगुरु ही कर सकते हैं।

> मृगतृस्नों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे।
> अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिरका बिरमें समावे ।।
>
> बि0 3/7

अत: गुरु के बिना सत्य को खोजा नहीं जा सकता माया से उत्पन्न जीव बिना सतगुरु के माया में ही समा जाता है। जैसे रेत में जल के अभाव से मृग प्यासे रह जाते हैं।

> उदर कारन बेचें हरी, झूठों यही पायो रूजगार ।
> मारते मुख उपर, वाकों ले जासी जमद्वार ।।
>
> बि0 पृ0 27/5

इसमें महामति ने कहा है कि झूठे साधु भगवान को भी बेच देते है झूठों का यही रोजगार है ऐसे मनुष्यों और साधुओं को धिक्कार है जो भगवान को भी बेचते हैं।

> जो सुख मायें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूँ जाए।
> पात्र होय पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए।।
>
> बि0पृ0 35/31

सतगुरु के द्वारा इस प्रकार शरीर में जो सुख की प्राप्ति होती है वह पूर्णतः प्रेम करने वाले में ही समाहित हो जाते है।

महामति प्राणनाथ ने कहा है कि यदि अज्ञान के अंधकार को दूर करना चाहते हैं तो तारतमवाणी का सहारा लो। क्योंकि --

बाचको पृथीपति कहावे, ऐसे कैसे गए कहाए ।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए ।
किर0प्र0 48/3

चाहे व पृथ्वी के सम्राट कहलाने वाले हो चाहे वह झूठे साधु बाजे-गाजे के साथ चले गए लेकिन इन्द्रपुरी के राजा इन्द्र को भी काल नहीं छोड़ता।

इसी लिए महामति प्राणनाथ ने कहा:--

छिन एक लेहु भंजाए
जनमतही तेरो अंग छूटो, देखत हीं मिट जाए ।।
किर0प्र0 48/1

ये मानव शरीर जो मनुष्य है सार्थक करलो क्यों कि जन्म के साथ मृत्यु भी है देखते देखते ही सब समाप्त हो जायेगा।

पूर्व वैदिक काल - {1800 ई0 पूर्व - 1200 ई0 पूर्व}

महामति प्राणनाथ की धार्मिक साधना के स्वरूप तथा उसके मूल्यांकन के लिए भारत में धार्मिक साधना के इतिहास पर दृष्टिपात करना उचित होगा। भारत के हिन्दी प्रदेश का प्राचीनतम धार्मिक इतिहास प्रायः अन्धकार में है आर्य जाति से पूर्व इस प्रदेश में किन लागों का निवास था और उनकी क्या दशा थी यह ज्ञात नहीं है। फिर वेदों

अनुशीलन से ज्ञात होता है कि प्राचीन मध्यदेश, वर्तमान हिन्दी प्रदेश में बसे हुए आर्य जनों (कबीलों) में विभक्त थे ज्यों-ज्यों आर्य लोग भारत में फैलते गए त्यों-त्यों धर्म का विकास होता गया।

भारतीय संस्कृति सर्वदा धर्मप्रधान रही है। पुरुषार्थ के विभिन्न अवयवों धर्म, अर्थ, काम मोक्ष में धर्म का स्थान प्रमुख माना गया है। भारतीय संस्कृति जिनमें सर्वदा समान रही है उसमें निश्चय ही धार्मिक तत्व प्रधान था।

वैदिक काल में धर्म शब्द का प्रयोग अपने व्यापक अर्थ में ही होता था पूर्व वैदिक काल में आर्यों का ध्यान संसार से परे जो जीवन था उसकी ओर कम था अपने लौकिक जीवन को ही सब प्रकार से स्वस्थ दृष्टिकोण रखते हुए धर्म, अर्थ, काम से परिपूर्ण करना ही जीवन का लक्ष्य था जीवन के जितने नैतिक कर्त्तव्य थे वही धर्म की संज्ञा पाते थे और ये धर्म व्यक्ति धर्म, परिवारिक धर्म, राजनीतिक धर्म, आर्थिक धर्म प्रत्येक क्षेत्र में धर्म कल्याण का पर्यायवाची था इस प्रकार पूर्व वैदिक काल का स्वरूप लौकिक जीवन का प्रतीक था इस धर्म की एक ओर जहाँ जीवन की नैतिकता, संयम, मर्यादा सुख समृद्धि का अभाव था वही दूसरी ओर जीवन के सब प्रकार लौकिक सुखों की प्राप्ति।

पूर्व वैदिक काल का धर्म मुख्यता ऋग्वेद पर आधारित है पूर्व-वैदिक धर्म व्यक्ति सापेक्ष था इसमें आडम्बर विहीन सादगी थी। यज्ञों का अब अधिक विकास नहीं हुआ था यज्ञों के अविकसित होने के कारण

ऋग्वेद कालीन धर्म में पुरोहितों की अत्यधिक महत्ता स्थापित न हो सकी थी।

उत्तर वैदिक काल- या उपनिषद्काल -{1200ई०पूर्व से 600 ई०पूर्व तक}

पूर्व वैदिक धर्म की भांति उत्तर वैदिक धर्म भी बहुदेववाद परक था इस दृष्टि से दोनों धर्मों में समानता दिखाई देती है पर यदि विभिन्न देवताओं के स्वरूप और स्थिति को देखा जाय तो दोनों कालों की धार्मिक स्थिति में पर्याप्त भिन्नता है।

यज्ञ सोद्देश्य हुआ करते थे इनका संपादन भौतिक ऐश्वर्य तथा स्वर्ग की प्राप्ति की भावना से किया जाता था। उत्तर वैदिक काल में यज्ञ ही प्रधान थी देवताओं का स्थान गौण हो गया था वे यज्ञों के द्वारा वशीभूत किए जाते थे। वैदिक आर्यों के तत्व-चिन्तन की गंभीरता और सूक्ष्मता उपनिषदों में प्राप्त होती है इनमें भारतीय विचारधारा के सूक्ष्म तत्व विद्यमान है। उपनिषदिक विचारकों ने मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष माना है यही इनका एक मात्र तथा चरम आदर्श है इसकी प्राप्ति ज्ञानमार्ग से हो सकती है ज्ञानमार्ग का स्थान कर्ममार्ग से ऊपर है ज्ञानमार्ग का मूल तात्पर्य है ब्रह्म और आत्मा में एकत्व की स्थापना। ब्रह्म उस सत्य को माना गया है जो समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है ब्रह्म ही जगत् की उत्पत्ति का कारण है।

आवागमन का यह चक्र उस समय तक चलता रहता है जब तक कि

मनुष्य का अन्तर ज्ञान के आलोक से प्रकाशित नहीं हो जाता सैद्धान्तिक दृष्टि से भी उपनिषदों का अतुल महत्व है।

पूर्व वैदिक काल में धर्म प्रवृत्ति मूलक था, निवृत्ति मूलक नहीं। संसार में त्याग वैराग्य पर बल नहीं था उत्तर वैदिक काल तक आते-आते धर्म अधिकांशतः निवृत्ति मूलक हो गया अर्थात् यह समझा जाने लगा कि संसार के सुखों को त्यागने में ही आनन्द है। संसारिक जीवन में संसारिक माया का बन्धन मानकर इसे छोड़ने की बात कही गई है। यद्यपि इस युग में भी जीवन के चार लक्ष्यों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में धर्म, अर्थ, काम की गणना होती थी किन्तु धर्म, अर्थ, काम हेय माने जाने लगे। और मोक्ष ही जीवन का परमार्थिक लक्ष्य बन गया और मोक्ष का परम साधन त्याग और वैराग्य, सन्यास, संसारिक जीवन को त्याग था। यद्यपि इस युग में वर्णाश्रम व्यवस्था बन रही थी समाज चार वर्णों में बटा था ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और प्रत्येक व्यक्ति का जीवन चार आश्रम में बटा था।

1- ब्रह्मचर्य आश्रम — 25 वर्ष तक

2- गृहस्थ आश्रम — 25 वर्ष से 50 वर्ष तक

3- वानप्रस्थ आश्रम — 50 वर्ष से 75 वर्ष तक

4- सन्यास आश्रम — 75 वर्ष से 100 वर्ष या इसके बाद

इन्हीं चारों आश्रमों का पालन करते हुए व्यक्ति धार्मिक कहलाता था और मोक्ष का अधिकारी। लेकिन इस विचार धारा का

मूलाधार निवृत्ति है। उपनिषदों में जिस निवृत्ति मार्ग पर बल दिया आगे चलकर उसका सम्यक् विकास हुआ इन्हीं काल में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रमों की पृष्ठभूमि तैयार हुई यद्यपि गृहस्थ-आश्रम में मनुष्य का धर्म प्रवृत्तिमूलक था तथापि अन्तिम दोनों आश्रमों को निवृत्ति-मार्ग से प्रेरणा मिली थी। इनका उद्देश्य था जन्म तथा पुनर्जन्म से छुटकारा पाकर मोक्ष की प्राप्ति। पूर्व वैदिक काल में जीवन को सुख समृद्धि बनाना ही जीवन का परम लक्ष्य था।

पूर्व वैदिक काल के आर्य भिन्न भिन्न देवी देवताओं की उपासना करते थे, उपासना लौकिक जीवन को सुखी और समृद्धिशाली बनाने की ध्येय दृष्टि से देखा जाने लगा उपनिषदों में परमसत्ता को ब्रह्म की संज्ञा दी गई या ब्रह्म आत्मा या परमात्मा या परमानन्द का प्रतीक बन गया और इनकी प्राप्ति ब्रह्म की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य बन गया यद्यपि इस युग में भिन्न भिन्न धर्मों का विकास नहीं हुआ इस लिए इसे आर्यधर्म, वैदिक धर्म की संज्ञा दी जाती थी।

<u>बौद्ध काल — 600 ई0पूर्व से 1 ई0तक</u>

600 ई0 पूर्व में अपने देश में धार्मिक आन्दोलन विकसित था। इस धार्मिक आन्दोलन के मूल आधार बौद्ध तथा जैन और भागवत धर्म थे, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतमबुद्ध नाम सिद्धार्थ था इनका जन्म 563 ईसा पूर्व में नेपाल की तलहटी में स्थित लुम्बनी में हुआ था। इनके पिता शुद्धोदन शाक्य राजवंश के शासक थे, जिनकी राजधानी कपिलवस्तु थी।

मानव जीवन की अस्थिरता तथा निरर्थकता ने इन्हें विरक्त जीवन की ओर आकृष्ट किया। उत्तरकालीन ग्रन्थों के अनुसार इनमें वैराग्य की भावना का उदय वृद्ध, रुग्ण सन्यासी तथा शव को देखने के उपरान्त हुआ। गृह, परिवार त्याग करने के उपरान्त ज्ञान पिपासा की शान्ति के लिए अनेक स्थानों का भ्रमण किया भिन्न भिन्न आचार्यों के सत्संग में ज्ञान की खोज के लिए इन्होंने साधना की, पर कठोर तपस्या के उपरान्त भी ज्ञान की प्राप्ति इन्हें न हो सकी। एक बार जब वे एक पीपल वृक्ष के नीचे आसीन थे, उन्हें चिरवाछित सत्य के दर्शन हुए इस प्रकार इन्हें संबोधि की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध हो गए।

बुद्ध जी ने जिस सत्य का दर्शन किया वह नितान्त सूक्ष्म था बुद्ध जी ने जिस नवीन धर्म का उपदेश दिया उसमें मुख्यत: चार सिद्धान्त थे इन्हें चार "आर्यसत्य" की संज्ञा दी गई। बुद्ध के उपदेशों में आध्यात्मिक चिन्तन अधिक नहीं है कर्म के सिद्धान्त पर अधिक बल दिया है मनुष्य जिन कर्मों को करता है उसका निष्फल व्यर्थ नहीं होते हैं।

बौद्ध धर्म के विकास में मुख्यत: भिक्षु संघ का महत्वपूर्ण योगदान था भिक्षु संघ के सदस्य अनुशासन पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे बुद्ध के उपदेशों को जनता में प्रचार इनका परम आवश्यक कार्य था।

कालान्तर में बौद्ध धर्म की एकता भंग हो गई तथा वह हीनयान और महायान नामक दो शाखाओं में विभक्त हो गया आगे चलकर बौद्ध धर्म के नवीन मतानुयायियों ने एक अभिनव शाखा को जन्म दिया जो

बौद्ध धर्म के इतिहास में महायान शाखा के नाम से प्रसिद्ध है। जिन लोगों ने प्राचीन बौद्ध धर्म को ही अधिक महत्ता प्रदान की उनकी शाखा को हीनयान नाम दिया गया। आगे चलकर वज्र यान, सिद्ध यान, सहजयान तथा नाथ सम्प्रदाय के रूप में परिवर्तित बौद्ध धर्म 12वीं शती तक चलता रहा।

वैष्णव सम्प्रदाय :—

हिन्दी साहित्य में वैष्णव धर्म नाना सम्प्रदायों के ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, वैष्णव धर्म में नारायण ही भक्ति-ज्ञान के मूल स्रोत माने जाते हैं नारायण से ही भक्ति और ज्ञान की धाराएँ आरम्भ हो कर जगत्भाग्य के लिए प्रवृत्त होती हैं। भगवान् ही अद्वैत दर्शन के समान वैष्णव दर्शनों के भी उद्गम स्थान है भक्ति सम्प्रदाय के अनुसार वैष्णव के चार सम्प्रदाय हुए है तथा चार प्रवर्तक हुए है-

1- श्री वैष्णव सम्प्रदाय

2- ब्रह्मा (ब्रह्मा सम्प्रदाय)

3- रूद्र (रूद्र सम्प्रदाय)

4- सनत्कुमार (सनक सम्प्रदाय)

और लोक में प्रचारित तथा प्रसारित करने का श्रेय चार आचार्यों को है।

1- श्री वैष्णव सम्प्रदाय का प्रचार आचार्य रामानुज ने "विशिष्टता द्वैत" दर्शन में किया,

2- ब्रह्म सम्प्रदाय का आचार्य आनन्दतीर्थ (मध्व) ने "द्वैत" मत में,

3- रुद्र सम्प्रदाय का विष्णुस्वामी तथा तत्पश्चात् वल्लभाचार्य ने "शुद्धाद्वैत" मत में,

4- सनक सम्प्रदाय का आचार्य निम्बार्क ने द्वैताद्वैत में किया।

पुराणों में विष्णु पुराण रामानुज को तथा मध्व को मान्य है, श्रीमद्-भागवत पुराण वल्लभ तथा चैतन्य सम्प्रदाय के सर्वस्व है। मायावाद का खण्डन-5 शंकराचार्य के द्वारा किया गया है माया वाद का सिद्धान्त वैष्णव मत को मान्य नहीं है।

भक्ति की उपादेयता- मोक्ष के साधन में ज्ञान की अपेक्षा भक्ति की ही सर्वाधिक उपादेयता है। ज्ञान की अग्नि तो सब कर्मों को भस्म कर देती है इस लिए ज्ञान के साथ कर्म का सामंजस्य नहीं होता। परन्तु भक्ति के साथ कर्म का सामंजस्य सर्वथा निष्पन्न होता है।

भगवान की साकारता — परम तत्व भगवान् का सगुण, साकार तथा सविशेष रूप ही सर्वथा मान्य है भगवान् समस्त कल्याण और गुणों के निकेतन है, समस्त प्राकृत गुणों से हीन है और इस लिए उपनिषदों में वे निर्गुण शब्द के द्वारा भी अभिहित किए जाते हैं। जीव का अणुत्व- वैष्णव मतों में जीव सर्वथा ही अणुरूप है।

विदेह मुक्ति की सत्यता— वैष्णव मत में जीवन मुक्ति मान्य नहीं है केवल "विदेह मुक्ति" की सत्यता सिद्ध होती है। मुक्ती की दैहिक स्थिति— मुक्त आत्माओं के जीवन का परम लक्ष्य होता है भजन और इस भजन के लिए उन्हें देह की प्राप्ति होती है।

जैन धर्म

छठी शताब्दी ईसा पूर्व की धार्मिक क्रान्ति में बौद्ध धर्म की भाँति जैन धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान था जैन धर्म के प्रवर्तक का वर्द्धमान महावीर था, उनको 12 वर्ष कठोर तपस्या के पश्चात् ज्ञान का दर्शन हुआ सुख-दुःख पर विजय प्राप्त करके ये "जिन" अर्थात् जितने वाले कहलाये "जिन" शब्द से ही जैन शब्द की उत्पत्ति हुई।

बौद्ध और जैन धर्मों में कुछकुछ समानतायें हैं। बुद्ध की भाँति महावीर भी अपने युग की विभूति थे जैन धर्म के मूल सिद्धान्त अत्यन्त सरल और व्यावहारिक है इनके चार उपदेश थे— अहिंसा, सत्य भाषण, अस्तेय तथा अनासक्ति। जैन परम्पराओं से ज्ञात होता है कि मौर्य वंश के संस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म में दीक्षा ली थी अपने शासन के अवकाश काल में उसने जैन भिक्षु बन कर राज्य परित्याग किया था।

जैन धर्म के मूल सिद्धान्त अत्यन्त सरल और व्यावहारिक था गोसाल ने तपस्या के जिस स्वरूप का प्रतिपादन किया था वह अपेक्षाकृत अधिक कठोर था अतएव जैन संघ के उत्तरकालीन विभाजन के मूल पहले से ही विद्यमान थे।

जैन धर्म के विभाजन का प्रभाव उनके धर्मग्रन्थों पर भी पड़ा जैन धर्म का भी विकासोन्मुखी बहुत दिनों तक बना न रह सकी। किन्तु धर्म के आचार्यों ने स्यादवादी दृष्टिकोण अपनाया। इस अर्थ रूप में

हिन्दू धर्म के पुनरूत्थान तथा राजसंरक्षण के अभाव के कारण जैन धर्म का अतीत गौरव तिरोहित हो गया तथा शैव एवं वैष्णव धर्म के सामने इसकी स्थिति गौण हो गई।

भागवतधर्म-वैष्णव धर्म--

पौराणिक काल । ई0 से 600 ई0 पूर्व तक वैदिक धर्म के ह्रास के उपरान्त जिन धर्मों का उत्थान हुआ उसमें वैष्णव धर्म भी था। और इसे भागवत धर्म की संज्ञा दी गई है वैष्णव धर्म वैदिक धर्म का सुधारवादी रूप था। इसके आराध्य देव विष्णु थे दूसरे नाम इनके हरि, वासुदेव तथा नारायण आदि नाम दिए। ऋग्वैदिक देवताओं में विष्णु का विशिष्ट स्थान था लेकिन वेदों काल में इतने प्रसिद्ध नहीं थे वैष्णव धर्म का धीरे-धीरे प्रचार-प्रसार हुआ वैष्णव धर्म में जो आराधना अथवा भक्ति का विकास हुआ वह इसकी परम विशेषता थी। इसका प्रारम्भ मथुरा में हुआ था इसके प्रथम अनुयायी सात्वत नामक जाति के लोग थे वे सात्वत यादव जाति के थे। जो मथुरा में रहते थे इसकी व्यापकता का कारण विष्णु के व्यक्तित्व का विस्तार था वैष्णव मत के अनुयायियों ने विष्णु को देवाधिदेव तो माना ही, इसके साथ ऋग्वेद में निरूपित इनकी विशेषताओं को पुनः प्रकाशित भी किया। ऋग्वेद में विष्णु को तीन पदों में समस्त विश्व धारण करने वाला माना गया है सात्वतों के आराध्य उनकी जाति के वीर वासुदेव अथवा कृष्ण थे। भागवद्गीता के अनुसार अनेक जन्मों के उपरान्त जब मनुष्य ज्ञान युक्त होता है। विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु सर्वज्ञ हैं,

उनमें समस्त जगत का निवास है।

वैष्णव धर्म के संरक्षक शक्ति शाली नरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त तथा स्कन्द गुप्त थे। इनकी मुद्राओं पर "परम भागवत" शब्द मिलते हैं।

विष्णु के इन परम्परागत रूपों के उद्घाटन के साथ-साथ उनके स्वरूप में नवीन संयोजन किये गये अत्यन्त महत्व पूर्ण संयोजन था विष्णु तथा वासुदेव कृष्ण की एकता इस परम्परा कुषाणत्र महाभारत तथा पुराणों के काल में हुआ। संभवतः कुषाण काल के अन्तिम चरण में इसे राज संरक्षण का भी सुअवसर प्राप्त हुआ था। मंगलेश नामक नरेश वैष्णव धर्म का महान संरक्षक था और एक गुफा का निर्माण कराया जिसमें विष्णु की प्रतिमा स्थापित कराई थी।

इतिहास का संक्षिप्त विवेचन करने से ज्ञात होता है कि भारतीय इतिहास में मध्ययुग अवतारणा के पूर्व वैष्णव धर्म का विकास हो चुका था वैष्णव धर्म उन अवयवों से गुजर रहा था जिनकी आधारशिला मध्ययुग के कतिपय महत्वपूर्ण तत्व रामानुज, निम्बार्क, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी तथा वल्लभ, चैतन्य आदि आचार्यों से विकसित हुए ।

मध्ययुग की धार्मिकता:—

मध्ययुग के भारत का इतिहास अपना एक विशिष्ट स्थान है भारतवर्ष में तीन सम्प्रदाय थे वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म। इनका विकास मध्ययुग से पहले हो चुका था। इतना होते हुए भी इस युग में

के बहुमुखी विस्तार तथा प्रसार का युग था गुप्त युग समाप्त होते होते परमभागवत गुप्त सम्राटों की छत्रछाया में वैदिक धर्म का पुनरुत्थान होने लगा था पुराणों की रचना भी नवीन संस्करण में हो चुकी थी गुप्तयुग तथा वर्धन युग की इस पारस्परिक आक्रमण के कारण वैदिक और बौद्ध जैन तत्वज्ञानियों का संघर्ष युग का इसी युग में नागार्जुन, वसुबन्धु, दिङ्नाग और धर्मकीर्ति जैसे बौद्धपण्डितों ने बौद्धन्याय को जन्म देकर बौद्ध धर्म को प्रबल युक्तियों से पुष्ट किया था। वैदिक धर्म ने अपनी युक्ति युक्तता सिद्ध की। धार्मिक इतिहास में नवयुग के प्रवर्तक दो महापुरुष आचार्य कुमारिल तथा आचार्य शंकर थे और वैदिक धर्म जो नवीन शक्ति आई इन्हीं दो महापुरुषों के कारण आई कुमारिल(700 विक्रमी) उत्तर भारत के निवासी थे और शंकर (आठवीं शा०वि०) दक्षिण भारत के केरल प्रान्त के कुमारिल मिथिला निवासी मैथिली ब्राह्मण थे और वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा की कुमारिल ने नालन्दा विहार में छद्म-वेश में रहकर बौद्धधर्म मूल सिद्धान्त ज्ञान के लिए भी स्वीकार किया।

कुमारिल ने वैदिक धर्म के महत्व को स्थापित करने के लिए वैदिक कर्मकाण्ड के प्रामाण्य को सिद्ध करने का जो कार्य किया वही शंकराचार्य ने वैदिक ज्ञानकाण्ड अर्थात उपनिषदों के सिद्धान्त को पुष्ट प्रमाणित तथा सिद्ध करने के लिए देश में अपनी असाधारण प्रतिभा द्वारा किया। आ० शंकर का अत्यन्त सरल व्यक्तित्व, व्यापक तथा प्रतिभा-शाली था वे केवल 32 वर्ष तक जीवित रहे, परन्तु वैदिक साहित्य पर

तीन ग्रन्थ- प्रस्थानत्रयी अर्थात् उपनिषद, गीता और ब्रह्मसूत्र - पर विद्वतापूर्ण भाष्य लिखकर अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त प्रसार को बढ़ा किया। जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, उन्हीं का पालन किया अद्वैत वस्तुत: व्यवहारिक धर्म है लोक व्यवहार के निमित्त जगत् बिल्कुल सत्य है इसके बारे में विस्तार से मालूम करने के लिए " शंकराचार्य" द्वारा रचित (हिन्दुस्तानी एकेडेमी,प्रयाग) में मिलती है

तन्त्रकाल :-

मध्ययुग के आरम्भ काल में भारतीय सभ्यता के दो आधार वेद और तन्त्र मिलते है। तीनों समुदाय से तन्त्र धर्म का उदय हुआ।

तन्त्र शब्द का अर्थ है — शास्त्र या सिद्धान्त अत: वेद-तन्त्र की दूसरी संज्ञा निगम और आगम है। आगम वह शास्त्र है जो मुक्ति के उपाय बुद्धि में लाते हैं। निगम- का अर्थ है कि कर्म-उपासना और ज्ञान के स्वरूप का विवेचन करना।

पांचरात्र — वैष्णव - वैष्णव धर्म के दो भेद है पांचरात्र के भिन्न भिन्न नाम है रात्र का अर्थ है ज्ञान। और परतत्त्व, मुक्ति, भुक्ति, योग तथा संसार इन पांचों के प्रतिपादक होने से इस आगम का नाम पांचरात्र पड़ा। दूसरा नाम सात्वत या भागवत है सात्वत यादव क्षत्रियों का नाम है यह सिद्धान्त प्राचीन है।

वैष्णव तन्त्र के वैष्णव आगम का प्रभाव दक्षिण भारत के वैष्णव

पद्धति को ही अपनाया और सब मन्दिरों में उसी का प्रसार किया, फलतः वैखानस आगम का ह्रास हो गया। फिर भी तिरुपति के विष्णु मन्दिर में इसी आगम की पद्धति से आज भी भगवान की अर्चा सम्पन्न होती है पांचरात्रों के साथ इनका विरोध किया तथा अर्चा के विशिष्ट विधान में ही है। "भारतीय दर्शन" में इसका पूर्ण विस्तार मिलता है।

<u>शैव तन्त्र :-</u>

मध्ययुग में, जिसको तन्त्रकाल के नाम से भी संबोधित किया जाता है आचार्यों ने भिन्न भिन्न पद्धतियों का प्रचार किया। इसमें शैव, शाक्त वैष्णव देवी-देवताओं को ग्रहण किया। इस प्रकार इतने प्रकार के श्रृंखलाबद्ध चित्र उपस्थित हो गये जो कि सबकी प्रस्तुती करना सम्भव नहीं।

दक्षिण भारत में शैव समुदाय का प्रचार था। मध्ययुग में उत्पन्न शैव मत में भी तन्त्रों के अनेक प्रभेद थे। परन्तु अभी तक प्रकाश में आने का गौरव कुछ ही ग्रन्थों को हुआ है इन मतों का प्रभाव हिन्दी संसार के ऊपर बहुत कम पड़ा। अतः मध्ययुग की साधनाधारा से सम्बद्ध होने पर भी हिन्दी साहित्य के विकास युग में इनका प्रचार तथा प्रसार बहुत ही कम था।

भारतीय वैदिक धर्म में तन्त्र क्रिया और तन्त्र साधना का प्रवेश क्यों और कैसे हुआ यह अत्यन्त जटिल और गूढ़ विषय है साधक अपने तन्त्र क्रिया द्वारा अपनी साधना से लोगों की विपदाओं को दूर करता था इस लिए तन्त्र को आगम का पर्यायवाचक माना गया है।

बुद्धधर्म में भी तान्त्रिक उपासना का प्रचलन मध्ययुग के आरम्भ में हुआ और वह 11वीं और 12वीं शताब्दी तक इतना प्रभावशाली बना कि उसने पूर्वी भारत को तन्त्रमय बना डाला।

<u>तन्त्र काल</u> (600 -100)

महायान के अनन्तर तीन यान उत्पन्न हुए और इन तीनों के मूल में तान्त्रिक साधना विद्यमान है ये यान मन्त्रयान, वज्रयान, कालचक्र यान। हिन्दू समाज में तन्त्र-मन्त्र का रिवाज बहुत पहले से चला आ रहा है। मंत्र फूँकना, जादू-टोना तथा सम्मोहन आदि की चर्चा साहित्य में मिलती है। मध्ययुग (600-1200) तन्त्र का ही युग माना जाता है लोगों का ऐसा विश्वास था कि मंत्र के जपने का उच्चारण करने से मनुष्य दैवी शक्ति प्राप्त करता है 10वीं सदी से तेरहवीं सदी के भीतर मंत्रयान तथा कालचक्र का प्रसार था उस समय पिशाच या भूत प्रेत हटाने का भी उल्लेख है। तावीज़ पहनना, शकुन निकालना, इष्ट सिद्धि के लिए बलिदान, भूत पर विश्वास आदि विभिन्न अन्धविश्वासों पर सामान्य जनता की आस्था थी।

सबसे प्रधान विश्वास स्वर्ग तथा नरक की भावना मानी जा सकती है। यद्यपि यह विचार अत्यन्त प्राचीन समय से समाज में था परन्तु इस युग में स्वर्ग प्राप्ति के लिए नये मार्गों पर चलने का वर्णन मिलता है। स्नान कर, जल में डूब कर या अग्नि में जाकर प्राण त्यागने का विवरण हिन्दी प्रदेश के लेखों में भरा पड़ा है। प्रयाग इसके लिए मुख्य तीर्थ

भक्ति आन्दोलन:या भक्ति काल :- (1200 ई0से 1800 ई0पूर्व)

भारतीय धर्म-साधना में भक्ति भावना का उदय कब और कैसे हुआ इसमें अनेक आचार्यों के अनेक मतभेद है ग्रियर्सन के अनुसार धर्म का उदय ईसाई धर्म मानते हैं इनका कहना है कि ईसा के दूसरी-तीसरी शती में कुछ ईसाई मद्रास में आकर बस गये थे जिनके प्रभाव के कारण भक्ति का विकास हुआ। लेकिन हमारे हिन्दी के इतिहासकारों ने आ0 रामचन्द्र शुक्ल ने भक्ति भावना का उदय मुस्लिम राज्य से बताते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने — "मुसलमानों के अत्याचार के कारण यदि भक्ति की भावधारा को उमड़ना ही था तो पहले उसे सिंध में फिर उत्तर भारत में प्रकट होना चाहिए था परन्तु वह दक्षिण में हुई।

द्विवेदी जी के अनुसार — भक्ति आन्दोलन का विकास का श्रेय दक्षिण के आलवार भक्तों को है। अत: इन सब से भक्ति-आन्दोलन का पता लगाने के लिए हमें वैदिक धर्म से लेकर पन्द्रहवी-सोलहवी शताब्दी तक के साहित्य पर विचार करने से ज्ञात होगा।

आर्यों का साधन का परिचय वैदिक साहित्य में मिलता जैसा की हम पहले इसका वर्णन कर चुके है। श्रद्धा तत्व का अस्तित्व प्राय:सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है।

इस्लाम धर्म का प्रभाव भी हिन्दू धर्म पर था परन्तु भक्ति-आन्दोलन का मूलाधार तो हिन्दू धर्म ही है और उसको तीव्र करने का श्रेय इस्लाम धर्म को है।

सूफी विचारधारा वाले निर्गुणवादी थे तथा भक्ति को ज्ञान से अलग करके उसे प्रेम के रंग में रंग दिया और अन्तिम दशा में प्रेमी और प्रिय का अन्तर ही समाप्त हो जाते हैं। मुसलमानों के सम्पर्क में आने से एक नए दृष्टिकोण का संचार हुआ कि प्रेम के द्वारा किस प्रकार से भक्ति का संचार हो सकता है। नवीन भक्ति मार्ग सूफी निर्गुणवाद तथा हिन्दू सगुण वाद के बीच का रास्ता है, निर्गुणवाद से इसके नैतिक विचार मिले। ऐसे वातावरण से जो नवीन भक्ति आन्दोलन का उत्थान हुआ वह समन्वय तथा सामंजस्य शक्ति से ओत प्रोत था इस लिए उसमें हिन्दू और मुस्लिम धर्म के विचार मिलते हैं। नानक यही कहते हैं न मैं मुसलमान हूँ न हिन्दू, कबीर की शब्दावली के अर्थ नए है कबीर दास हिन्दू से भी उतने प्रभावित थे जितने मुसलमान से और उतने इस्लाम से। प्रेम ही मुक्ति-प्राप्ति का एक साधन था यह काल धार्मिक क्षेत्र में विषम स्थिति से गुजर रहा था जो सनातन धर्म के विचारकों को नए ढंग से सोचने के लिए बाध्य कर दिया। दक्षिण भारत में विचारकों की नयी पीढ़ी का उदय हुआ जो कि धर्म और ईश्वर की नयी व्याख्या हुई।

आगे चल कर और भी कई आचार्य हुए जिन्होंने दार्शनिक मतों की स्थापना की। भक्ति मार्ग को प्रशस्त बनाया इनमें-- द्वैतवाद के प्रवर्त्तक श्री मध्वाचार्य (1199ई०-1303 ई०) शंकर मायावाद का खंडन विष्णु की भक्ति प्रचार द्वैताद्वैतवाद के प्रवर्तक श्री निम्बार्काचार्य (12ई०-13वीं ई०) राधाकृष्ण की भक्ति का प्रचार, शुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्त्तक श्री वल्लभाचार्य (1459ई०-1530ई०) और वल्लभाचार्य ने बाल-कृष्ण की

दूसरी ओर रामानुजाचार्य की परम्परा में [14वीं शताब्दी] स्वामी रामानन्द हुए जिन्होंने सीता-राम की भक्ति का प्रचार किया। 15वीं० और 16वीं श० में भक्ति आन्दोलन पूरे भारत में फैलने लगा जिनमें- आचार्य चैतन्य महाप्रभु के चैतन्य सम्प्रदाय, स्वामी हरिदास के सखी सम्प्रदाय, श्री हित हरिवंश के राधा-वल्लभ सम्प्रदाय इन लोगों ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। दूसरी ओर कबीर, दादू, नानक आदि संतों ने भक्ति का ऐसा रूप प्रस्तुत किया जिसमें सगुण-निर्गुण मिश्रित रूप की उपासना की गई।

17वीं श० तक आते आते भक्ति के स्वरूप में काफी परिवर्तन हुआ और भक्ति के स्वरूप में परिवर्तन [धार्मिक या सांस्कृतिक] तभी बदलते है जब समाज प्राचीन रूढ़ियों से घिरे होते है सामाजिक न्याय की अवहेलना करते है। उत्तर भारत में बौद्ध, जैन धर्म इन्हीं रूढ़ियों से घिरे होने के कारण इनका उदय हुआ था। दक्षिण भारत की स्थिति भिन्न थी इसके धर्म कर्णधार ब्राह्मण और समार्त थे उस वातावरण में सामन्ती-व्यवस्था अधिक प्रतिक्रिया-वादी रूप धारण करती जा रही थी निम्न वर्ग के लोग उसकी छाया तक को नहीं छू सकते थे, उच्च वर्ग के लोग धर्म की आड़ लेकर अन्याय तथा अत्याचार करते थे इसी, लिए शुद्र वर्ग विद्रोह कर उठा [धर्म पर से एकाधिकार समाप्त कर दिया जाय] इसी एकाधिकार ने कालान्तर में भारतीय भक्ति आन्दोलन को जन्म दिया। दक्षिण के इस नव जनवादी धार्मिक आन्दोलन ने उत्तर भारत को गहरे रूप से प्रभावित किया। कुछ आचार्यों ने भक्ति की स्थापना के लिए शब्द-प्रमाण, गुरु,शास्त्राभ्यास

भक्ति साधना के लिए आवश्यक बताया। परन्तु इसके साथ यह भी कहा ये साधन भगवान की कृपा होने पर ही सुलभ होते हैं कुछ भक्तों ने "गुरु" को महत्व दिया। भक्ति मार्ग के आचार्य ज्ञानी और भक्त दोनों ही थे। ज्ञान के बिना भक्ति सम्भव नहीं है। तुलसी ने ज्ञान और भक्ति में किसी प्रकार का विरोध नहीं माना उसका यही रहस्य था" सूर और तुलसी दोनों भक्त एवं विद्वान थे इसी कारण भक्त के रूप प्रस्तुत करने में सफल रहे परन्तु कबीरदास इसमें असफल रहे।

उपनिषदों में भी गुरु- भक्ति को परमात्मा की भक्ति तुल्य माना गया। गुरु को माता, पिता तथा साक्षात् ईश्वर तक बताया गया। दक्षिण की वैष्णव-धारा उत्तर में आकर तीन रूप धारण किए। हिन्दी के भक्ति साहित्य की समीक्षा करने से ज्ञात होता है कि निर्गुण भक्तिधारा और सगुण भक्तिधारा। निर्गुण के सन्त कविगण हैं। जिसमें कबीर और नानक हैं। सगुण भक्तिधारा के राम और कृष्ण आश्रय है उनके प्रतिनिधि तुलसी-दास तथा सूर है। नाथपन्थ के सिद्ध सन्तों की कविता वज्रयानी साहित्य तथा निर्गुण भक्ति की जोड़ती है सिद्ध लोगों पर वज्रयानी बौद्धों का विशेष प्रभाव प्रतीत होता है मुसलमानों का प्रवेश भारत में हो गया था उनके धर्म के साथ हिन्दू धर्म का समाजरूप हिन्दी युग की विलक्षण घटना है। और भारतीय संस्कृति का मूल स्वर आरम्भ से ही मानवतावादी रहा है और उठने की तीव्र आकांक्षा रखती थी इसी लिए उस समय यही कहा गया है कि "आत्मा ही भक्ति है, उसका जीवन स्त्रोत रस है, उसका शरीर माधवी है।

कबीरदास का भारत के धार्मिक क्षेत्र में नवीन चेतना का स्वर फूंकने वालों में शंकराचार्य के बाद सर्व प्रथम स्थान है। इनका व्यक्तित्व क्रान्ति-कारी था नवीन जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं। कबीर का काल-- प्रौढ़ सन्त--मत का काल था कबीर और उनके अनुयायी सभी सुधारवादी थे। इन्होंने बाह्याडम्बरों का खण्डन तथा एकेश्वरवाद का प्रचार किया इन पर एक ओर भक्ति, योग तथा एकेश्वरवाद के रूप में सिद्धों और नाथों का प्रभाव है और दूसरी ओर प्रेम की तीव्रता, भक्ति और माधुर्य उपासना के रूप में सूफियों तथा वैष्णव की अहिंसा और प्रेम का प्रभाव है। हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया तथा मूर्तिपूजा और बहुदेववाद का खण्डन किया। धर्म में कोई भेद नहीं सर्वप्रथम कबीर ने ही नारा बुलन्द किया। इनसब ईश्वर की सन्तान है, मानव सब समान है।

इसी प्रकार तुलसीदास में हिन्दू धर्म के प्रति आस्था थी इस्लाम के विरोध में हिन्दू धर्म की रक्षा की। उन लोगों की आन्तरिक शत्रुओं-मतमतान्तर, द्वेष, कलह अन्धविश्वास आदि से किया। तुलसी ने वैसे अपना सारा काव्य "स्वान्तः सुखाय" के लिए था इनका सुख जन कल्याण के लिए था यह एक व्यवहारिक आदर्शवादी है। इनका भी दृष्टिकोण मानवतावादी था उनमें "सत्यं शिवं सुन्दरम्" का स्वरूप साकार हो उठा था उन्होंने राम की कथा व्यावहारिक आदर्शवाद का प्रतिपादन किया।

सूर भी भगवान् के निर्गुण रूप की सत्ता को स्वीकार करते हैं उसके दर्शन को सब तरह से अगम्य मानकर सगुण का गुणगान करते हैं। सूर

तुलसी की सगुण लीला सम्बन्धी रचनाओं में ज्ञान और भक्ति का तीव्र संघर्ष है। सूर के भ्रमर गीत में भी ज्ञान पर भक्ति की विजय दिखाई गई है। मीरा और जीव गोस्वामी की प्रसिद्ध जनश्रुति में भी यही भावना झलक रही है। 17वीं श० तक आते आते मध्यकाल की चारों धारायें शिथिलप्राय हो गई और यह भक्तिधारा जो 15वीं श० और 16वीं श० में जनवादी या लोकवादी शुरू हुई थी 17वीं श० में गौण हो गई।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस युग में दिल्ली के राज्य सिंहासन पर औरंगजेब का राज्य था। राजनैतिक दृष्टिकोण से वह शक्तिशाली था धार्मिक दृष्टिकोण से कट्टर इस्लामवादी इस युग के सारे उसके अधीन हिन्दू राजायें युद्ध क्षेत्र में उसका सामना नहीं कर सके। इस लिए युद्ध से मुख मोड़कर हिन्दू सामंत वैभव और विलास में डूबने लगे, ऐसा प्रतीत होने लगा कि सारा समाज ही पतितोन्मुख हो रहा है। पतितोन्मुख समाज को सोये हुए निद्रा से जगाने के लिए महामति प्राणनाथ ने एक नये धर्म और समाज का संदेश दिया। जिसे उन्होंने अपना जागनी आन्दोलन या कयामत का संदेश कहा। जागनी आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में महामति हिन्दू, ईसाई, बुद्ध, जैन सभी धर्मों के मूल पुरुषों के समन्वित प्रतीक बन गये। इस प्रकार महामति प्राणनाथ का जागनी आन्दोलन अपने युग की समस्त धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और भाषा समस्या का समाधान लेकर प्रतिष्ठित हुआ।

उपास्य कृष्ण का नया स्वरूप :—

महामति प्राणनाथ ने 17वीं शती में कृष्ण के जिस स्वरूप की अवतारणा की वह समस्त भारतीय साहित्य में नवीन और अनन्य है। प्राणनाथ के कृष्ण-गीता, महाभारत, विष्णु स्वामी {शुद्ध द्वैत} निम्बार्काचार्य {द्वैता-द्वैत}, वल्लभाचार्य पुष्टिमार्ग हरिदास चैतन्य महाप्रभु, सूरदास, नन्ददास के कृष्ण आदि से अधिक व्यापक, अधिक सुविकसित इस लिए भिन्न स्वरूप है। गीता के कृष्ण अक्षरातीत, पुरुषोतम है। अक्षर पुरुष के रूप में सृष्टि रचयिता हैं। और अक्षर पुरुष नारायण {विष्णु के रूप में} दुष्टों का संहार वाले हैं। वही ज्ञान योग, कर्मयोग, सन्यास योग, भक्तियोग, ध्यान योग के परम अधिष्ठाता योगेश्वर हैं। वही कृष्ण इन समस्त साधनाओं के प्रतिपादक प्रथम आचार्य तथा वही इन साधनाओं के परम साध्य {प्राप्य पुरुष या उपास्य देव है} वह कृष्ण समस्त गीता युग के आर्य तथा आर्येतर वर्गों के मूल पुरुषों से अभिन्न हैं क्यों कि वे अपने को दैत्यों में प्रह्लाद, धनुर्धारियों में राम, कवियों में उशना है, ऐसा प्रतिपादित करके अपनी महान विभूति का परिचय देते हैं। महामति सबके मूल में पुरुषोत्तम कृष्ण को मानकर अक्षरातीत पर ब्रह्म के रूप में केवल उनकी उपासना को मान्यता देते हैं। भागवतकार ने भी मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन परशुराम, राम, कृष्ण को एक ही के भिन्न-भिन्न युगों में अवतरित अभिन्न रूप तो माना किन्तु भक्ति योग के उपास्य कृष्ण के मधुर स्वरूप को ही प्रधानता दी। मध्य युग में भक्ति सिद्धान्त के समर्थक विष्णु स्वामी, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, हरिदास आदि आचार्यों

और भक्तों ने इन्हीं "रसेश्वर मधुर" कृष्ण को उपास्य माना भक्ति के अधिष्ठ्य कृष्ण का लोकरक्षक, धर्मरक्षक रूप गौण हो गया। रीतिकाल में तो राधा-कृष्ण सामान्य नायक-नायिका के प्रतीक बनकर रह गये भक्ति की रसानुभूति तथा अध्यात्म की गहराई उनमें न रही। जिससे काव्यधारा उदात्त भावभूमि से पतितोन्मुख हो गई।

महामति प्राणनाथ ने रसेश्वर अक्षरातीत कृष्ण को प्रधानता अवश्य दी, किन्तु उनके लोक रक्षक, धर्मरक्षक रूप को ओझल नहीं किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह कृष्ण की तीन लीलाओं को मान्यता देते हैं—

1- ब्रज रास का स्वरूप

2- कृष्ण का स्वरूप (धर्म रक्षक)

3- जागनी लीला का स्वरूप

यही नहीं उनकी अवधारणा है कि जो कृष्ण रास में हैं। वही फिर अरब में मुहम्मद के रूप में अवतरित हुए और धर्म का उपदेश देने के कारण "बशरी" (मानवी) स्वरूप कहलाए। मुहम्मद को उन्होंने परमात्मा के हुक्म का वह स्वरूप माना जो युग-युग में जिबरील, ईश्वरीय आदेश, की सहायता से मानव को ज्ञान देकर उसके मानवीय गुणों की रक्षा करके उसे धर्म में स्थित रखता है। (प्राणनाथ सम्प्रदाय और साहित्य) 1973 और फिर वही 17वीं शती की सारी राजनीति सामाजिक, धार्मिक समस्याओं के समाधान के लिए देवचन्द्र और अन्त में प्राणनाथ के रूप में अवतरित हुए और जागनी या कियामत का खेल लाये।

महामति को परमात्मा ने अपना सेवक (जीव या अंश), अंश (आत्मा), ज्योति (नूर), आवेश (हुक्म) और बुद्धि (इल्म) प्रदान किया। इन पंच शक्तियों के गुणात्मक समन्वय से मेहराज ठाकुर श्री प्राणनाथ को "महामति" का परमपद या उपाधि प्राप्त हुई।

मनोवैज्ञानिक रूप से जागनी लीला की इस प्रकार की जा सकती है कि 16वीं शती की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा भाषा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने के लिए महामति प्राणनाथ गीता-भागवत के कृष्ण तथा बुद्ध, ईसा, मुहम्मद तथा सद्गुरु देवचन्द्र के स्वरूपों की अवतारणा स्वयं में इस प्रकार करते हैं कि उनका जोश या भावमय प्रवेश उनके अन्तरात्मा में हो गया, जिससे युग की सम्पूर्ण समस्याओं को हल करने के लिए विश्व में प्रकटित सब स्वरूपों को अपने में आत्मसात करके हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम- सभी धर्मों के मूल पुरुषों के सम्मान और आदर की भावना की प्रतीक है। महामति प्राणनाथ जितनी ऊँची भूमिका में गीता-कृष्ण के अतिरिक्त कोई भारतीय धर्माचार्य या कवि नहीं प्रतिष्ठित हुआ। अपने "कुलजम" नामक वृहत धर्म ग्रन्थ में वे इस उद्देश्य को इस प्रकार व्यक्त करते है। —

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सबका झगड़ा मेट के या दुनिया या दीन ।।

कुलजम खुलासा प्रकरण 13

इस प्रकार महामति प्राणनाथ ने अपने जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित किए तथा बुनियादी सिद्धान्तों की स्थापना की जो कि — प्रथम सिद्धान्त परमात्मा की एकता।—

सबका इष्ट एक ही परमात्मा है या परब्रह्म है वही क्षर-अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म है। परमात्मा एक है (भिन्न भिन्न भावाओं में) उसके अनेक नाम है।

प्राचीन भारत का इतिहास इतना व्यापक था कि वह द्राविड़, किरात निषाद, गंधर्व, किन्नट, शक, हूण-आभीर, यवन आदि भिन्न भिन्न जातियों और धर्मों को समाहित करके अपवित्र नहीं हुआ, ध्वस्त और प्रनष्ट नहीं हुआ बल्कि दूसरी जातियों के धर्मों को अपने में समाहित करके भी पुष्ट, अधिक व्यापक और अधिक जीवंत हो गया। महामति प्राणनाथ भी अन्य जातियों, धर्मों का समन्वय करके भारतीय धर्म-साधना को उतना ही व्यापक विराट और जीवंत रूप प्रदान करना चाहते थे, जितना व्यापक कृष्ण ने तत्कालीन युग में हिन्दू धर्म को प्रदान किया था। कृष्ण के समय में न तो ईसाई लोग थे, न ईसाई धर्म, न मुसलमान थे और न इस्लाम धर्म। उस समय तो आर्यों के अतिरिक्त असुर, दैत्य, दानव, अनेक जातियाँ और उनके अलग अलग धर्म थे। कृष्ण सब धर्मों और सब जातियों में प्रतिष्ठित होते है और अपने में सबको प्रतिष्ठित मानते हैं। गीता में कृष्ण के इसी व्यापकता विराटता, जीवन्तता और समन्वय के सिद्धान्त को अपनाते हुए महामति प्राणनाथ ने अक्षरातीत श्रीकृष्ण उसी जागनी स्वरूप की अवतारणा की जो बुद्ध, ईसा, मूसा, मुहम्मद से अभिन्न है और जो सबका समन्वित रूप प्रस्तुत करता है। इसलिए महान सैद्धान्तिक धार्मिक विश्वास के कारण बिना संकोच के वे उद्घोषित करते है—

श्रीकृष्ण जी ब्रज रास में, पूरे ब्रह्म पूर्णब्रह्म भगवान ।

सोई स्वरूप लाया फुरमान, रसूल कहलाया स्याम ।।

इस प्रकार वे मानते हैं कि जिस कृष्ण ने ब्रज में रासलीला की वही ईसा, मूसा, के ज्ञान को समाहित करने वाला मुहम्मद हुआ। वही स्याम ब्रज से, "अरब" में परमधाम (नूरमकान) का सन्देश लाया ---

स्याम राम से अरब, ल्याया साहेब का फुरमान ।

हकीकत अक्षर धाम की, तिन बाँधी सब जहान।।

महामति प्राणनाथ के जीवन वृत्त लेखक स्वामी लालदास जी अपने बीतक नामक ग्रन्थ में भी इसी का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं ---

ब्रजरास में खेल के, आया अरब स्याम ।

और वही स्याम फिर इनमें प्रकट हुआ है।

"अब सो कहाँ है महम्मद, तुम उठ क्यों न
देखो जाग ।।"

संबंध

इस प्रकार महामति प्राणनाथ कृष्ण, ईसा, मुहम्मद को अभिन्न मानते हैं। प्राणनाथ कृष्ण को इस ऊँची भूमिका में प्रतिष्ठित कर देते हैं जहाँ से वे संसार की समस्त महान अवतारी विभूतियों से अभिन्न हो जाते हैं। कृष्ण का इतना व्यापक स्वरूप मध्यकालीन भारत के किसी मनीषी-धर्माचार्य, महासन्त, कवि की कल्पना या अनुभूति में नहीं आया। कृष्ण स्वरूप की यही भूमिका प्राणनाथ को और प्रणामी साहित्य को

मध्यकाल की चारों धारायें से अलग स्वतंत्र स्वरूप प्रदान करती है। कृष्ण के इसी विराट स्वरूप की अवधारणा के कारण प्रणामी धर्म में महामति प्राणनाथ को भागवत तथा भविष्य पुराण में वर्णित निष्कलंक विजयाभिनन्द बुद्ध तथा कुरान में वर्णित आखिरी इमाम मेंहदी का अवतार या प्रतीक मानते है जो लोग इस तथ्य को धार्मिक विश्वास के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते है, ऐसे लोग ऐतिहासिक दृष्टि से प्राणनाथ महान समन्वयात्मक दृष्टिकोण को समझने का कष्ट करें।

अद्वैतवाद के समर्थक शंकराचार्य, विशिष्टाद्वैत के प्रतिपादिक रामानुज, शुद्धाद्वैत के आचार्य विष्णु स्वामी, पुष्टिमार्ग के प्रचारक वल्लभाचार्य द्वैता-द्वैत-द्वैत के प्रतिपादिक निम्बार्काचार्य, रामोपासना के प्रचारक रामानन्द, कबीर, तुलसी, सगुणोपासक सूर, तथा सूफ़ी फकीरों के समर्थक जायसी, मंझन, कुतबन आदि के सामने भी धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्यायें थीं, किन्तु किसी भारतीय आचार्य सन्त भक्त कवि ने अपने उपास्य के इतने व्यापक रूप की अवधारणा नहीं की, जो विश्व के समस्त धर्मों, समस्त जातियों के मूल पुरुषों से अभिन्न हो।

अतः महामति प्राणनाथ ने जिस महानता से पुराण व कुरान का समन्वय किया, वह उनकी धार्मिक आस्था की उपज थी। और साहित्य कारों ने महामति प्राणनाथ को समन्वयता के कारण भक्तिकाल की पाँचवीं धारा स्वीकार किया है। क्योंकि महामति प्राणनाथ समस्त जातियों और धर्मों को समाहित करके एक एक ही मार्ग और एक ही उपास्य श्रीकृष्ण को बताया है श्री प्राणनाथ की विचारधारा में न तो दादू, कबीर समा-

सूरदास के कृष्ण आदि से अधिक व्यापक, अधिक सुविकसित इस लिए इनके भिन्न स्वरूप हैं। गीता के कृष्ण अक्षरातीत, पुरुषोत्तम है, कबीर ने सगुण और निर्गुण राम के उपास्य थे, तुलसीदास के उपास्य भी राम थे। सूफी-धारा के सगुण रूप थे। और प्रेम पर बल दिया। प्रेम और सौंदर्य का अटूट सम्बन्ध है। लेकिन महामति प्राणनाथ के साहित्य में समन्वय के साथ-साथ अलगाव और वैचारिक वैशिष्ट्य मिलता है। इनमें चारों धाराओं के कुछ न कुछ तत्व आ जाते हैं परन्तु इनकी यह विशेषता रही है कि यह किसी भी धारा में समाहित नहीं होते। इसी लिए एक नई समन्वयवादी धारा प्रस्तुत करता है इसी कारण इसे भक्ति साहित्य की पाँचवी धारा की संज्ञा दी जाती है। मध्य युग में संत, सूफी, कृष्ण और रामधारा के अध्ययन से जो कुछ कहा गया वह सभी कुछ प्रणामी धारा में समन्वित है। किसी भी धार्मिक काव्यधारा की उपासना पद्धति, उसके कर्म काण्ड, मोक्ष या अन्तिम लक्ष्य की विशेषताएँ इस बात पर आधारित रहती है कि उस धारा में उपास्य की प्रकृति उपास्य का नाम , उसकी प्रकृति, उसका स्वरूप, उसकी लीला या कार्य तथा उसकी प्राप्ति के सुख के स्वरूप का निर्धारण किस प्रकार हुआ है।

महामति प्राणनाथ के सांस्कृतिक अनुशीलन के लिए उनके व्यापक धार्मिक दर्शन का विश्लेषण परम आवश्यक है क्यों कि महामति प्राणनाथ की व्यापक वाणी धार्मिक राजनीतिक, सामाजिक और भाषा सम्बन्धी संदेश देती है। महामति प्राणनाथ के वाणी का स्वरूप उनके धार्मिक

स्वरूप पर आधारित है अतएव सर्वप्रथम महामति प्राणनाथ "किरंतन" पदावली के सांस्कृतिक विचारधारा को जानने के लिए उनके धार्मिक सीमा का विश्लेषण आवश्यक है अतः इस अध्याय में धार्मिक दृष्टि से महामति प्राणनाथ प्रणीत किरंतन पदावली सांस्कृतिक विश्लेषण करने का प्रयास किया जायेगा।

महामति प्राणनाथ ने अपने किरंतन के 133 प्रकरण में प्रायः सर्वत्र, ब्रह्म, माया, जीव आत्मा-परमात्मा, संसार, साधना, गुरु, धर्म, धर्माचार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की है। विश्व के प्रायः सभी धर्मों में निराकार अथवा साकार के रूप में इष्टदेव को स्वीकार किया गया है चाहे उसे अनेक नाम दिए गए हों, किन्तु वह मूल पुरुष अथवा परमात्मा है और प्राणनाथ के अनुसार सभी सम्प्रदाय में मूलतः एक है। श्री प्राणनाथ के आराध्य अक्षरातीत ब्रह्म है। उनके अक्षरातीत ब्रह्म, अक्षर से परे और गीतामें वर्णित उत्तम पुरुष से अभिन्न हैं। प्राणनाथ जी ने इन्हें श्री कृष्ण[227] श्री राज जी या कहा है। उनका आनन्द अंग श्री श्यामा जी है, इन्हीं युगलस्वरूप राज श्यामाजी की आराधना प्राणनाथ ने की है महामति प्राणनाथ ने ब्रह्मा, शिव विष्णु आदि देवताओं की पूजा को गौण माना है और अक्षरातीत श्री कृष्ण को ही आराध्य माना है। श्रीकृष्ण की परम ज्योति ही ईसा, मुहम्मद में

महामति ने भागवत गीता की तरह ब्रह्म के तीन रूपों- क्षर, अक्षर और अक्षरातीत, को स्वीकार किया गया है प्रणामी धर्म का उपास्य क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत ब्रह्म स्वरूप है--

अक्षर की लीला अक्षर धाम, इन्हें अक्षरातीत कहेलाये ।

अपने जोस पोहोंचे जहाँ, वहाँ अटकने कैसे पहुचाये ।।

कि०पु० 68/45

परब्रह्म के धाम में कल्पना मात्र से नहीं, अटूट श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास से पहुँचना होता है।

तेरे बीच घाट बाट न तत्त्व कोई, तुं वरे पाउ बिना पंथ ।

निरंजन के परे न्यारा, तहाँ हमारा कंथ ।।

परब्रह्म के धाम में पहुँचने के लिए किसी चीज की जरूरत नहीं है वहाँ केवल अपने प्रिय पथ पर चलना है जहाँ पर हमारे कंत विराजमान हैं।

म०कि०पु० 8/8

महामति प्राणनाथ ने अपने उपास्य श्री श्यामाजी का भी वर्णन किया है वही अक्षरातीत ब्रह्म है। प्रेम भक्ति ही से वे प्राप्य हैं। वे सगुण साकार के उपासक हैं। जैसा की इसमें वर्णन किया----

प्रकटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्टि सिरदार ।

ईश्वरी सृष्टि और जीव की, सब आप करो दीदार।।

म०कि०पु० 57/2

ब्रह्म सृष्टियों की अगुणी सखी संग है ईश्वरी सृष्टि फरिश्ते और जीव सृष्टि (मानव) दोनों मिलकर इनका दर्शन करें पूर्ण ब्रह्म में परमात्मा प्रकटहुए है।

श्री प्राणनाथ जी आत्मा को पत्नी या सखा रूप मान कर उस परात्पर पर ब्रह्म की मानसिक उपासना करते हैं। वह जीवों की ब्रह्म सृष्टि ईश्वर सृष्टि एवं जीव सृष्टि नामक तीन श्रेणियाँ मानते हैं। ब्रह्म सृष्टि को नित्य मुक्त, ईश्वर सृष्टि को मुमुक्षु एवं जीव सृष्टि को बद्ध मुक्त की संज्ञा दी गई है। जीव सृष्टि और ईश्वरीय सृष्टि बिना गुरु के ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु ब्रह्म सृष्टियाँ नित्य सिद्ध होती है। और इनका आत्मज्ञान लुप्त नहीं होता इन ब्रह्म आत्माओं को परमात्मा से साक्षात् रूप से ज्ञान उपलब्ध होता है इसलिए महामति प्राणनाथ जी कहते हैं:—

सतगुरु मेरा स्यामजी, मैं अनेनिस चरण रहूं।
साफ सेहेजे हो गये, करने पड़या न जोर ।।

किर०प्र०52/1

मैं उनके चरणों में पड़े रहने के कारण नित्य सुख का भोग करती है और तो सतगुरु वही श्याम जी है और ब्रह्मात्माओं को जाग्रत करने का ज्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता है अतः महामति प्राणनाथ कहते हैं कि —

साफ सेहेजे हो गये, करने पड़या न जोर ।
रात मिटी सुख अंधेरी, भयो रोशन सतनी भोर ।।

कि०प्र० 90/17

ईश्वरीय सृष्टि प्रयास से जीव सृष्टि को कठिन साधना से मुक्तिदायी ज्ञान उपलब्ध होताहै। परमधाम की ओर सा उजाला सामने हो गया

अन्धकार (माया का अन्धकार) मिट गया। अज्ञान मिट जाने पर ही ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है। जब निज धाम से रात्रि का अंधकार मिट कर तारतम ज्ञान का अखण्ड ज्ञान प्राप्त होता है तो फिर सभी अक्षरातीत स्वामी की शरण में दौड़ते हैं निजधाम से तारतम ज्ञान का अखण्ड उदय होता है:-

उदयो अखंड सूर निज वतनी, भई जीत कोटन कोट।
कहें महामत रात टली सबनकी, आए सब धनीकी ओट।।

कि०पु० 60/24

यहाँ पर श्री प्राणनाथ जी ने उन लोगों की बात कही है जिनका अज्ञान मिट जाता है और मिटते ही वह अक्षरातीत स्वामी की तरफ दौड़ते है और इसी लिए अज्ञान को दूर करने की बात कही है:--

निद्रा परी नाखी देवो, उठीने उभा थावो ।
बीजो ते वात मूकी करी, तमे ग्रहो प्रभुना पावो।।

कि०पु० 128/43

अत: यहाँ पर कहा है जो अन्धकार गहन निद्रा की तरह है उसे झटक कर फेंक दो सब बन्धनों को छोड़कर प्रभुकी शरण पकड़ लो। जाग्रत हो जाओ, उठ खड़े हो जाओ। अक्षरातीत अर्थात अखण्ड भूमि के अधिपति परब्रह्म परमेश्वर जो सत्-चित्-आनन्द से पूर्ण है।

एक सुख नेहेचल धामको, और सुख अखंड अक्षर ।
तीसरो बैकुंठ भुवनों, ए त्रिधा सृष्टि यों कर ।।

तीनों सृष्टियों का वर्णन किया है उसमें ब्रह्म सृष्टि को अखंड परमधाम का सुख प्राप्त है इसकी ईश्वरीय सृष्टि का सुख अक्षर धाम का आनंद है। तीसरा जीव-सृष्टि जो नश्वर एवं स्वप्नवत बैकुंठ सुख प्राप्त है।

महामति प्राणनाथ जी ने पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत उत्तम पुरुष सच्चिदानंद को ही एक मात्र सर्वोपरि सत्ता स्वीकार किया है। लीला भेद से उन्होंने ब्रह्म के तीन स्वरूप माने हैं। अक्षरातीत, अक्षर और क्षर पुरुष। इनमें अक्षरातीत अनादि अखण्ड चेतन स्वरूप हैं, जो परमधाम के अधिपति हैं। इनके आनन्द अंग से ब्रह्म आत्माओं और तेज से परमधाम का प्रकाश है। ये ही पर अक्षर ब्रह्म हैं। अक्षर पुरुष अक्षरातीत के "सत" अंग है। इनके नूर से ईश्वरीय सृष्टि का विकास हुआ, ये अक्षर धाम के अधिपति है। इनकी माया से क्षर ब्रह्माण्ड की सृष्टि होती है। क्षर पुरुष आदि नारायण की शक्ति से नश्वर ब्रह्माण्ड और जीव सृष्टि की रचना होती है यह समस्त विराट, विश्व के अधिपति हैं।

अक्षरातीत ब्रह्म और अक्षर ब्रह्म अनादि, अविनाशी और अखण्ड स्वरूप हैं, जबकि क्षर पुरुष विराट महाप्रलय के समय अक्षर ब्रह्म की मूल प्रकृति में विलीन हो जाते हैं। महामति प्राणनाथ सृष्टि तीन प्रकार का बताया है:-

ब्रह्म सृष्टि- अंग से। ईश्वरीय सृष्टि- नूर से। जीव सृष्टि- माया से ।

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा किसी एक वर्ग विशेष का नहीं । विभिन्न धर्मों के अनुयायी चाहे वह इस्लाम, ईसाई और यहूदी धर्म के हों अथवा वेद, उपनिषदों, गीता भागवत् का आचरण करने वाले हिन्दू हों। सभी इसी परमात्मा की सृष्टि हैं।

यह सारा संसार चौदह लोक का अधिकारी, अधिपति, देवताओं की पूजा करता है। और इतने लोगों को यह भी नहीं पता है कि इनके मूल कौन हैं, इसी मूल में परम सत्ता विद्यमान है।

चौदे भवन के जो धनी, जिन्हें पूजत सब साथ।
ए मूल नहीं को, कोई और है समरथाय ।।

कि0पु0 74/22

त्रिगुन ईस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुधनाहें।
कहाँ से आए हम कौन हैं, कौन हम किनी नाहें ।।

कि0पु0 74/23

त्रिगुन के त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) इस ब्रह्मांड के ईश हैं और सारे संसार पर एक मात्र सत्ता यह तो उनको भी इसका अभिमान नहीं है।

अक्षर सरूप के पल में, ऐसे के कोट इंड उपजे ।
पलमें पैदा करके, फेर चन्दी पल में खपे ।।

म0कि0पु0 74/26

अक्षरातीत की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं। अक्षरातीत, उत्तम पुरुष के सत्य अंग स्वरूप अक्षर ब्रह्म एक पल में ऐसे कई ब्रह्मांड उत्पन्न करते हैं। और उसी एक पल में समाप्त हो जाते हैं।

श्री कृष्ण का स्वरूप परमधाम में और उनका ब्रज, रास, जागनी ।

> बिन मंडल ए माडे मंडल, थोभ न थंभ न कोई ।
>
> ताको नाही कहत क्यों साधो ए रच्यो बिन कौन सनंध ।।
>
> कि०पु० 5/9

जिसने इस ब्रह्माण्ड को रचा बिना किसी स्तम्भ या सहारे या बंधन के यह मंडप खड़ा किया वह नहीं है। नहीं कह सकते। जिसने इन सबकी रचना की— वह रचना करने वाला कौन है?

> वैराट सब मैं देखिया, बैकुंठ बिस्नोसांई ।
>
> सुन्यों जैसे जल बताशा, सो सुन माहे समाई।।
>
> कि०पु० 8/6

मैंने सारे विराट देख लिया और बैकुंठ (विष्णु) से लेकर पाताल तक शेषशायी नारायण सब देखा भाला परन्तु समस्त ब्रह्मांड महाशून्य से उठने वाले बुलबुले की तरह हैं उसी से उठते हैं और उसी में समा जाते हैं।

लेकिन मेरे उपास्य का स्वरूप परमधाम में सगुण और निर्गुण से परे एक अलौकिक शक्ति है।

> तेरे बीच बाट घाट न तत्वकोई, तूं करे पांई बना पंथ ।
>
> निरंजनके परे न्यारा, तहां हमारा कंथ ।।
>
> कि०पु०8/8

हमारे तो परम सखा (उपास्य) प्रेम के मेर से चलते हैं उनके बीच कोई बाधक तत्व नहीं है जहाँ निरंजन से परे, सबसे न्यारे परमधाम में हमारे धनी विराजमान हैं।

> सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम ।
> सनमंध मेरा सब साथ सों, मेरो धनी सुंदर वर स्याम ।।

प्र0कि0प्र0 82/10

सबने मिल कर यही साखी दी कि उनका परमधाम ही मेरी आत्मा का घर है। मेरे स्वामी, मेरे पति अक्षरातीत ब्रह्म स्वरूप श्री श्यामसुन्दर हैं।

> मूल सरूप बीच धाम के, खेल में जामें दोय।
> हरा दुसाला गुदरी, कहे रूह अंगना के सोय ।।

प्र0कि0प्र0 94/5

परमधाम के मूल स्वरूप में श्री श्यामा एक ही है। संसार में उन्होंने श्री देवचन्द्र और मेहराज ठाकुर के दो तन धारण किया इन्हीं दो तन को, अनेक ग्रंथों में सब इस्लाम का हरा दुसाला, कुरानी वस्त्र और सफेद गुदड़ी, त्याग का जामा, बताया गया।

> मिली एक सूरत कही, रूह अंगना आए तिनसर ।
> इत जाहे पैगम्बर दो भए, एक मलकी एक महूत ।।

प्र0कि0प्र0 121/8

इसमें श्यामा का अवतरण श्री देवचन्द्र जी एवं उनके दो पुत्र का वर्णन है। उन ब्रह्म सृष्टि, मोमिनों का समुदाय श्रेष्ठ और महान बतायागया ,

जिनके लिए रूह अल्लाह श्यामा का अवतरण श्री देवचन्द्र जी के रूप में हुआ। उनके अधिकारी दो अंजाम हैं। एक बिहारी जी (नकली) मान्य पुत्र मेहराज ठाकुर (असली) हैं।

कृष्ण उनके लिए भगवान हैं, पैगम्बर मुहम्मद साहब तथा श्री देवचन्द्र, महामति प्राणनाथ और छत्रसाल देवी कृपा से अभिषिक्त महान पुरुष हैं। कुलजम में कृष्ण के साथ मुहम्मद साहब का नाम लिया जाता है इसी लिए मुहम्मद साहब को भी अवतारी पुरुष माना जाता है। श्री देवचन्द्र, प्राणनाथ और छत्रसाल प्रणामी समुदाय के जैसे त्रिदेव ही हैं।

यही गिरो रब्बानी, रहें बीच दरगाह ।
के हजारों सिफतें इन की, माहें कुरान रूह अल्लाह ।।

न०कि०ग्र० 108/12

यही खुदाई जमात ब्रह्म सृष्टि, की और दरगाही की अर्थात परमधाम की आत्माएं हैं। संसार में जितने भी अवतारी पुरुष हुए सब ने अपने अपने ग्रंथों में हजारों गुणों के साथ वर्णन किया है। जिसमें शिरोमणि और असली रूह अल्लाह, श्यामा स्वरूप स्वयं सद्गुरु देवचन्द्र जी हैं।

जाहेर महंमद पुकारही, फुरमान ल्याया मैं।
के हजारों बातें करी, साहेब की सूरत से ।।

कि०ग्र० 108/15

मुहम्मद साहब ने इसमें स्पष्ट कहा था कि मैं तो एक, परमेश्वर परमात्मा का आदेश कुरान के रूप में लाया हूँ। उन्होंने अमरद खुदाई स्वरूप के सामने

इसमें महामति ने अपने उपास्य (श्रीकृष्ण) के महत्व का वर्णन किया है:—

तपसी कहूँ विध देह दमो, साधा अंग सुख संकल ।

पर तौले न आवे एक ने, सुख श्री कृस्न मंगल ।।

म०कि०प्र० 127/5

साधनाओं और कठोर यातना सहकर तथा तपस्या करके अपने शरीर को सुखा लो और सब प्रकार के यातनाओं के सहने के बाद धैर्य पूर्वक दुखों को सह लो। ये सारे उपाय भी कृष्ण की तुलना में भी नहीं ठहर सकते ।

मेहराज कहे सुख ए धन, जो धनी रखे रमीत ।

चौदे भवन ते जीतियो, धन धन ए कुनवंत ।।

म०कि०प्र० 127/6

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि ऐसा शुभ धन है जो श्री कृष्ण का नाम ले और हृदय में बस जाये ऐसे लोग पुण्यवान हैं वह चौदह लोकों को जीत लेता है जो इस नाम से कृतार्थ हो जाता है।

<u>कृष्ण का स्वरूप परमधाम में और उनका ब्रज, रास, जागनी।</u>

श्रीकृष्ण की कारी कमरी की महिमा का वर्णन है:-

गोवरधन को धारिया, एक बूंद न भुका ब्रज।

आग ओढा पानी ज्यूं लेके, सौंप लिया सब जन ।।

म०कि०प्र० 110/5

इसी कमरी वाले श्यामसुन्दर ने अपने सामर्थ्य से गोवर्धन पर्वत को उठा

लिया। प्रलय की इतनी बड़ी में एक बूंद पानी भी प्रविष्ट न होने पाई। आकाश से जब की आग बरसती रही भीषण झंझावात हुआ प्रलयकारी वृष्टि होती रही इसके बाद भी श्री कृष्ण ने सब कुछ सोख लिया।

> कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं।
> सब सिनगार को सोभा देवे, मेरा दिल आटक्या तुझमों ।।
>
> प्र०कि०ग्र० 110/1

इसी लिए तू मुझे बहुत प्यारी लगती है सारे श्रृंगार की इसी लिए शोभा है। इसी लिए तू मेरे चित्त मेरे मन में बस गई है।

> मन तन जोबन बढ़ता नौतन, आया अनहद आसक इसक गंज ले ।
> मधुर अमृत मुख दंत रसनारस, नितनए सुन्दर सब देखे बढ़ते ।।
>
> प्र०कि०ग्र० 113/2

मेरे तन मन में विराज रहे यौवन पूर्ण, किशोर प्रियतम प्रेम का अंबार, इश्क का खजाना लिए आये। अमृतमय अधर, मुख दन्त, रसमयी रसना सब नित्य नवीन और परिपूर्ण सौंदर्य अधिकाधिक दिखाई देते हैं।

> निलवट की नैन नासिका श्रवन, बोल चैन हास नित नवले देखाए।।
> रूप भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मद हो जाए ।।
>
> प्र०कि०ग्र० 113/3

भौंहें, ललाट, बाँके नयन, सुन्दर नासिका, श्रवण, वचन, उनके समस्त कार्य व्यवहार और सत्ता सब नित्य नवीन दिखाई देते मोहन प्रियतम एवं

मोहिनी अंगना परस्पर मदोन्मत्त, मोहित और गुणाभिभूत हो जाते हैं।

इन अंगना पेहेरी अंबर, हुई नहीं जाहेर ।

दुनियां फिरदे आंखनी, सो देखे नजर बाहेर ।।

प्र०कि०पु० ।।0/7

महामति प्राणनाथ ने यहाँ पर वर्णन किया है कि इन अंगना, श्री देवचन्द्र जी ने इस कामरी के भेख को मन में धारण किया था। इसी के पश्चात् वह एकाकार हुए थे जिनका मन अन्धकार से घिरा रहता है उसको उसी मन से दिखाई पड़ता है लेकिन जिनके मन में प्रकाश हो जाता है वह लोग साधु वेश अनुपम देखें हैं।

पट पेहेर आप किसना, हैंन जवेर सिनगार ।

इन लज्जत आई मोमनों, तिन दुनी करी मुरदार ।।

प्र०कि०पु० ।।0/8

रेशम के वस्त्र और पौष्टिक सुस्वादु भोजन, स्वर्ण एवं रत्नजड़ित आभूषण पहनने वाली ब्रह्म सृष्टि को जब प्रियतम के आनंद का रसास्वाद मिला तो उन्होंने सारी दुनिया को मृतकवत् समझकर कामरी को ओढ़ लिया। और उसी उपास्य धाम की चर्चा महामति प्राणनाथ करते हैं।

जिस गोकुल को तुम अधिक कहत हो,

सो तुमारी दृष्टे न आया ।

प्र०कि०पु० ।।/2

श्री कृष्ण की लीला भूमि जिस अखंड गांव गोकुल की चर्चा करते है उसे किसी ने नहीं देखा। उसी परमधाम का वर्णन (श्री कृष्ण जहाँ रास लीला किया करते थे) कर रहे हैं।

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामजी स्याम ।
सो फल चरचा को,छोड़के, जाए लेवत है हराम ।।

प्र०कि०पु० 105/13

इसमें अखण्ड परमधाम की चर्चा है जहाँ पर श्री श्यामा एवं श्याम अपनी अंगनाओं सहित विराजमान है। और उनके प्रिय का अविनाशी धाम तजकर त्याज्य, मर्त्य एवं वर्ज्य वस्तुओं की ओर भटकती है। कबीर, नानक आदि निर्गुण संतों की भाँति महामति जी ने निराकार ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार नहीं किया।

" पूरण ब्रह्म ते न्यारे, आनन्द अखण्ड अपार " —
साकार "स्वलीला द्वैत ब्रह्म को मूलस्वरूप के रूप में उपास्य माना और लीला के समय द्वैत के रूप में स्वीकार किया जहाँ वो सर्वशक्तिमान परब्रह्म परमेश्वर आनन्दमय लीला धाम है।

सूक्ष्म रूप ने सुन्दरता, उनमद सारे अंग ।
बराबर एके भात के, और के जिस के रस रंग।।

प्र०कि०पु० 93/17

उसी स्वामी का स्वरूप (श्रीकृष्ण) सूक्ष्म और सुन्दर है समस्त अंग-प्रत्यंग

में प्रेम का उन्माद है। उसके अंग समान रूप से स्नेहासिक्त है और विविध प्रकार के रस और आनन्द से परिपूर्ण है।

आनन्द अपनी आइयो, मीजो उमंग कर ।
हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनो घर ।।

म०कि०प्र० 80/7

परमधाम का आनन्द आविर्भूत हुआ है। इसे हृदय में पूरे उमंग से ग्रहण करो और परमधाम का साक्षात्कार करने के लिए हंसते खेलते आगे बढ़ते चलो। जहाँ पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की दिव्य लीलाएं होती है जो कि बैकुण्ठ, गोलोक व अखण्ड वृंदावन से आगे अक्षरधाम व उससे भी आगे अक्षरातीत का परमधाम है।

धाम के मोहोलों सामग्री, नाहीं सुमारी कई विध ।
अंदर आंख खोलिए, आई है निध निध ।

म०कि०प्र० 80/11

उस परमधाम में जहाँ विविध प्रकार की सुख-सामग्री है। अंतरात्मा की आंख खोलकर देखो वहीं पर अंतरंग अखण्ड निधि प्रकट हुई है। परमधाम का वर्णन करते हुए महामति प्राणनाथ कहते है —

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार ।
सोई कमाड़ सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार ।।

म०कि०प्र० 93/7

वहाँ के चोक और चौबारे, गलियाँ जैसे प्रत्यक्ष हो उठे हैं। स्तम्भ दीवारें एवं द्वार, किवाड़ और सीढ़ियाँ सब की याद आ गई है सब ओर प्रकाश ही प्रकाश है।

> कोई मोहोल कोई मालिए, कोई छज्जे रोसन ।
> कोई निलावे साथ के, कोई बोले मीठे बचन ।।

प०कि०प्र० ९३/८

परमधाम का ही वर्णन है वहाँ के ऊँचे ऊँचे भवन वैसी ऊँची, मंजिलें दिख रही है छज्जे जगमगा रहे है वहाँ का हास परिहास सब कुछ समझ में आ रहा हृदय में समा रहा है।

इस प्रकार परमधाम के पचीस पक्ष के अंतर्गत रंगमहल, फूलबाग, महाबन पुखराज यमुनाजी के सात घाट, अक्षर धाम, हौज कौसर, पुखराज पर्वत माणिक पहाड़ जवेरों की नहरें, आठ सागर और आठ भूमि आदि का वर्णन किया गया है इस प्रकार महामति ने परमधाम का वर्णन किया है। वैसे परमधाम के परम सौंदर्य का वर्णन परिकरमा ग्रन्थ में दिया गया है। महामति प्राणनाथ के अनुसार परमधाम की सभी सामग्री शोभा और प्रेम से परिपूर्ण है प्रेममयी ब्रह्म सृष्टि को ही ऐसे ऐश्वर्य पूर्ण परमधाम में विचरण करने का अधिकार है। परमधाम ही वह अधिष्ठान है जहाँ पूर्णब्रह्म परमात्मा की दिव्य लीलाएं सम्पन्न होती है। जिसका मूल सूक्ष्म स्वरूप है:-

नूर मुख चोक माडनी अति नूर में,
नूर बस्तर नूर भूषन जहूर ।
नूर जाहेर रोसन नूर नौतन, नूर सब
अंग उद्योत नूर पूर ।।

म० कि० पृ० ११४/२

उनके मुखारविंद की अद्वितीय छवि नूर अंकित है। वस्त्राभूषण आदि उनके नूर का प्रकाश विस्तार ही है। नित्य नवीन नूरमय यौवन के तेज एवं प्रकाश से अंग-प्रत्यंग देदीप्यमान हैं। इसमें अपने उपास्य का वस्त्राभूषण का वर्णन है।

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नेना निलवट नासिका नूर ।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अपूर ।।

म०कि०पृ० ११५/१

उस प्रियतम का स्वरूप जो कि नूरमय है नयन, ललाट, नासिका आदि नूर-मय है। गालों से लाल नूर झलकता है। मुख, ठोढ़ी और अधर सब नूर से भरपूर हैं।

सोहाग दिया साहेब ने, कामनी सुहागिन ।
बाजू बोले कुदरत, झाझी सासू जन ।।

म०कि०पृ० ११०/१

कहते कवि का महिमा का वर्णन करते हुये कहते हैं कि प्रियतम ने अपनी सौभाग्यवती आत्माओं को कामनी इस संसार में अखण्ड सुहाग प्रदान

किया। आदि काल से अविर्भूत महान अवतारी पुरुषों ने भी इसकी महिमा का गान गाया था और साधुओं ने हमेशा इसे सराहा ।

तूं नाम निरगुन कहावही, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुम परे ।।

प०कि०पृ० 110/2

महामति प्राणनाथ ने इसमें कहा है कि तू तो तुमको तो निर्गुण नाम दिया जाता है लेकिन तू तो समस्त गुणों का शिरोमणि, गुणों की खान एवं उनकी महिमा प्रदान करने वाली है। संसार भर के सारे नग-नगीने और मोती तुम्हारे सामने तुच्छ एवं हीन दिखाई देते हैं। तुझसे बढ़कर कुछ नहीं। तेरी शोभा तक कोई नहीं पहुंच पाता।

कामरी पेहेरी व्रज वधू, और सुन्दरवर स्याम ।
श्री पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम ।।

प०कि०पृ० 110/3

इस कामरी को व्रज की गोपियों ने भी पहना। सुन्दर वर स्याम ने इसे धारण किया मुहम्मद साहब ने भी इसे अपनाया और अब इमाम मेहदी ने इसे ओढ़ा।

कम विसेखे, ईश्वर नाहि चेतन के के ठाम ।
पसु पंखी जेते बोले सुन्दर, सो मैं कैसे कहूं नाम ।।

प०कि०पृ० 80/4

वहाँ भी शोभा शाली वन -उपवनों को निहारो जिनमें खेलने के कई ठिकाने हैं। उन वनों में अनगिनत सुन्दर पशु खेलते है अनेक उनकी जातियाँ है, अनेक रंगों में पक्षी मिलते हैं। पशु पक्षी उनके खिलौने हैं। जो कई प्रकार के विनोद पूर्ण खेलों से मन को मोह लेते हैं।

परमधाम की स्वरूप भूता शक्ति श्री श्यामाजी है। और उनके आनन्दभूत अंग बारह हजार सखियाँ हैं जिनको श्री प्राणनाथ जी ने ब्रह्म सृष्टि ब्रह्ममुनि, मोमिन आदि नामों से उल्लेख किया है। जहाँ अनेक सुख सुविधा और अमोद प्रमोद के साधन परमधाम में उपलब्ध हैं। श्री राज जी (परब्रह्म) श्री श्यामा जी नित-नये साज शृंगार और वेश-भूषा धारण कर सखियों तथा अन्य सहयोगियों के साथ यहीं नित्य विहार करते हैं। महामति प्राणनाथ ने संसार की समस्त क्रियाओं को लीला माना है इनकी समस्त साहित्य लीला रस से परिपूर्ण है। परमधाम की लीला के साथ श्री कृष्ण की व्रज-लीला के रहस्य को भी व्यापक अर्थ प्रदान किया है। महामति प्राणनाथ ने लीलाओं का ज्ञान कराने के लिए लीलाओंका आयोजन करके व्रजलीला, रासलीला और जागनी लीलायें बतायी है।

व्रजलीला में ब्रह्माण्ड में आयोजित अक्षर ब्रह्म रचित कालमाया का वर्णन है। जिसमें ब्रह्मांगनाओं ने गोपियों के रूप में अक्षरातीत परमात्मा श्रीकृष्ण के साथ रह कर आनन्द लाभ किया है। इसमें मंदिर में स्वप्न में खेली गई लीला है।

रासलीला— योग माया द्वारा रचित ब्रह्माण्ड में होती है। ब्रह्मात्माओं

की अर्धजागरण में खेली गई लीला है जिसे किशोर आनन्द कहा गया है।

और

जागनी - जागृतावस्था की लीला है। जो कि इस ब्रह्माण्ड में खेली गई है इसमें आत्मा को पूर्ण रूप से जागृत करके प्रबुद्ध करना ही जागनी लीला है। अक्षर ब्रह्म में जो सूक्ष्म अव्यक्त प्रकृति संश्लिष्ट थी- उसका व्यष्टि से समष्टि में और अपने महाविष्णु सगुण रूप प्रत्यक्ष कर दिखलाया गया और वृन्दावन में कृष्ण के सगुण रूप में अवतीर्ण होकर उन्होंने अपनी अंशभूत श्यामाजी को राधा के रूप में तथा सखियों को गोपियों के रूप में प्रादुर्भूत किया। परमात्मा आनन्द स्वरूप है, पर अकेले में उसकी कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि पूर्णब्रह्म के आनन्द अंश से श्यामाजी और सखियाँ अवतरित हुई। वैसे तो पूर्णब्रह्म अद्वैत है, पर लीला के समय उन्होंने द्वैत रूप धारण किया। वैसे तो लीला सगुण रूप में ही स्वीकार की जा सकती है इसलिए प्राणनाथ ने ब्रह्म को " शुद्ध साकार स्वरूप" माना है उन्होंने पूर्णब्रह्म को भी राज कहा है।

अमें नामी रामत राज कने, तेतां पहेली दाम देखाडी ।
कांईक मनोरथ रह्या मनमां, तेणें भरवाडी रमाडी।।

प्र०कि०प्र० 124/10

महामति प्राणनाथ ने इसमें व्रज और रास के मण्डल को दिखाया था जो श्री राज प्रियतम से जिस खेल को दिखाने की याचना की थी सखियों के मन में दुःख की तनिक सी आकांक्षा शेष रह गई थी प्रेम और आनन्द

के रंग में भरकर प्रियतम ने पुनः जागनी लीला का यह खेल रचाया।

रास रच्यो रंगसूं भली भाँति, प्रगटिया परनाम ।
एसुख सोभा आगी जिन्याऍं, केम करी कहुं बखाण ।।

म०कि०पु० 124/7

जागनी रास लीला के लिए यह ब्रह्मण्ड रचाया गया है और उसमें भली प्रकार रंगों से पूर्ण रास रचायेगी और इस परम आनन्द पूर्ण रास का मैं अपनी जिह्वा से वर्णन कैसे करूँ इसका बखान कैसे करूँ ।

पहेली वृन्दावन माँ रामत, वली ते आगी उत्पन ।
आ लीलाओनी प्रगट करसे, सुकजी तणे वचन ।।

म०कि०पु० 124/8

पहले जो वृन्दावन में जो खेल रचाया गया था वही अब पुनः यहां प्रकट हुआ। शुकदेव जी अपना साक्ष प्रदान करके पुण्य वचन द्वारा लीलाओं का वर्णन प्रस्तुत करेंगे।

मेरा अंग पाँच तत्व का, मन अंत सकरन विचार।
कहेनी लीला अक्षरातीत की, जो पर आतम के पार ।।

म०कि०पु० 73/13

यहाँ पर महामति प्राणनाथ ने अक्षरातीत लीला का वर्णन करते हुए कहते कि पंच भूतों से बना यह मेरा शरीर एक उनका सीमा से बंधा है उस का भूमि का है और मुझे विचार कर अपने विवेक से ही अक्षरातीत लीला का वर्णन करना है जो परात्मा के भी पर से परे है।

उठके नहाइए जमुनाजी, कीजे सकल सिनगार।

साथ सब्योंकी मिलके, खेलिए संग भरतार ।।

प्र०कि०पु० 80/14

विस्मृति की नींद से जागकर उठो और यमुना के पावन जल में स्नान करके परमधाम के सारे श्रृंगार करके, उसके पश्चात् समस्त अंगनायें साथ मिलकर प्रियतम स्वामी के साथ क्रीड़ा में मग्न हो जाओ।

मंगल गाइए दुलहे के, आयो सखी स्यामा वर स्याम ।।

नैनों भर भर निरखिए विलसिए रंग रस काम ।।

प्र०कि०पु० 80/10

श्री श्याम (श्री श्यामा के वर) पधारे हैं ऐसे दुलहा के आने पर स्वागत गीत गाओ। और इस मंगलमय घड़ी में आनन्द रस से पूर्ण सभी अंगनाए अपनी अपनी कामनाएँ पूरी कर लो।

धनि धनि देखाया मन्दरी, सुरतां देयां फिराए।

जब पैठे हम रास में, उछरंग फिरके अब आए ।।

प्र०कि०पु० 92/3

हृदय उमंग और आनन्द से पूर्ण स्वामी ने हमारी सुरता को बढ़ाकर, व्रज एक रास की याद दिला दी और उसी सुरता को साध कर देखो कि हमने रास लीला के लिए ही वृन्दावन में प्रवेश किया है।

व्रज रास बीती लेखन लीला, ते जागों ते दिन ।

लेह घड़ी ने लेखन पल, वेराट चाले अंग अंग ।।

प्र०कि०पु० 124/7

ब्रह्माण्ड का वर्णन करते हुए बताया कि व्रज और रास का मण्डल यही है। यही लीला है, यहाँ हमारे प्रियतम हैं यही दिन है यही घड़ी है और उस समय वहाँ गोकुल है इस संसार में इस जगत में लीला होने से ब्रह्माण्ड धन्य-धन्य हो गया। आगामी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप ।

आये धनी मेले मिले, प्रगटी है सत जोत ।।

प्र०कि०प्र० 55/3

आने वाले शास्त्रों के भविष्य वक्ता करने वाले और उनके ज्ञाता जो आज तक छिपे हुए थे अब वह सब प्रत्यक्ष रूप में आ गये हैं और स्वयं इस संसार के मेले में अक्षरातीत स्वामी स्वयं पधारे जिनसे की सत्य ज्योति प्रकट हुई।

पेहेले मंडल में भागी मुझे लेत आप ब्याहीयत ।

कौल किया लिख्या शास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत ।।

प्र०कि०प्र० 55/4

पहले मंडल (व्रज लीला) में श्याम से मेरी सगाई हुई थी और अब वे विवाह करने के लिए यहाँ जागनी लीला में पधारे हैं। शास्त्र वचनों के अनुसार, प्रियतम ने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा करने की बेला आ गई। श्री परमधाम में अक्षरातीत ब्रह्म, श्यामा जी और इस तरह परस्पर एकाकार है, ब्रह्मानन्द रस में लीन है अनेक लीलाओं में रत है।

सत घर सत दोऊ परखत, तोरन बांधे हैं बंध।

दिन मंगलें विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध ।।

प्र०कि०प्र० 55/6

सत (अक्षरधाम) पार सत्य, अक्षरातीत धाम दोनों पर्वत के समान है, जिनके बीच तोरण बांध दिए। स्तम्भ के बिना ही विवाह हुआ। मूल का पूर्व सम्बंध था इसीलिए यह विवाह सम्पन्न हुआ।

नेहम अर्क में मांडवा, चोरी खम रोपे है चार ।
सो खम थापे थिरकर, कहूं सो तिन को पुकार ॥

प्र०कि०प्र० 55/7

उस अर्क मण्डल में चार स्तम्भ स्थिर है नभ नेहम निर्मित है वह बड़े मजबूत हैं जो कि इस प्रकार है:-

एक ब्रज दूजो रास को, दूजे होय इन वेराट।
चारों खमों चोरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट ॥

प्र०कि०प्र० 55/8

एक खम्भा ब्रज लीला है दूसरा रास लीला का है तीसरा और चौथा जागनी लीला का है जो कि अर्शनाक में स्थिर है चारों खम्भों में अविचल सज्जा की गई है।

एक बेर एक मांडवे, मोर बांधियो शीश ।
ब्याही बारे हजार को, और हजार चोवीस ॥

प्र०कि०प्र० 55/9

एक ही लग्न में एक ही मण्डप में बारह हजार ब्रह्मप्रियाओं एवं चौबीस हजार कुमारिकाओं से विवाह रचाया जो मोर मुकुट बांध श्याम दूल्हे हैं।

परमधाम में लीला का वर्णन करते हुए कहते है कि महामति प्राणनाथ यह वही खेल है जिसको देखने के लिए इच्छा व्यक्त की थी अब हम सब खेलते हुए उस खेल को देखने के लिए परमधाम की ओर चलेंगे और वहां भी इसी की चर्चा होगी।

रोसनी पटुके करी अकास में, चरन भूखन जामें हजार हांई ।
कहे महामत मोमन कह जिनको, नाजुक हेत तोहे अरस माहीं ।।

म०कि०पु० 112/5

इसमें महामति प्राणनाथ परमधाम के प्रकाश के आकर्षण का वर्णन करते हुए कहते है कि पटुका प्रकाश चतुर्दिक व्याप्त है। चरणों के आभूषणों का तेज एवं प्रकाश आकर्षित कर देता है और प्रियतम अपने अपूर्व सौंदर्य से क्रियात्मारूपेण मोमनों के हृदय को भी, परमधाम की ओर आकर्षित करते हैं।

जामा जड़ाव जुगमा अंग जुगते, चार हारों करी अंबर झलकार।
जगमगे जाम ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार

म०कि०पु० 112/2

प्रियतम का जड़ाव दार जामा उनके अंग पर शोभायमान है लड़ियों वाले चार हारों की झलक आकाश तक चमक रहे है जवाहरातों की ज्योति बिखर रही है मैं उनकी मधुर चितवन और मोहक नयनों पर बलिहारी जाऊँ।

स्याम स्यामाजी सुंदर, देखो करके उलास ।
मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास ।।

म०कि०पु० 60/5

अतः श्री श्याम और श्यामा के सुन्दर चिन्मय स्वरूप को उल्लसित होकर देखो। मन के मनो कामना पूर्ण करने के लिए आनन्द के साथ अपने प्रियतम के साथ विहार करो।

रेत सेत जमुना जी तलाब, के ठौर बन करें विलास।
सकल के सारे अंग भीगल रेहेस रंग विनोद हांस ।।

प्र०कि०पृ० 69/3

यमुना नदी और हौज कौसर तालाब की उज्ज्वल श्वेत रेती के कण मोतियों की तरह चमकते हैं। वन में विभिन्न क्रीड़ा-स्थल है। ब्रह्मात्माओं के अंग प्रत्यंग प्रिय प्रेम से सराबोर है वे परस्पर हंसी विनोद में मग्न आनन्द पूर्ण क्रीड़ाए करती है।

परमात्मा आनन्द स्वरूप है, अकेले में आनन्द की कल्पना नहीं की जा सकती। आनन्द के लिए ही पूर्ण ब्रह्म के आनन्द अंश श्यामाजी और सखियाँ अवतरित हुई। वैसे तो पूर्ण ब्रह्म अद्वैत है, पर लीला के समय उन्होंने द्वैत रूप धारण किया। (महामति के अनुसार)

अखंड प्रेमी परमात्मा अपनी अंग रूपा आत्माओं केलिए नित्य नई लीलाओं का आयोजन करते हैं। और उनकी लीलाएं अखंड परमधाम में ही होती है यहाँ के दिव्य चेतन लोक के अनुरूप ही उनके स्वरूप एवं श्रृंगार हैं। श्री राज (परब्रह्म) और श्यामा जी नित्य-नये साज-श्रृंगार और वेश-भूषा धारण कर सखियाँ तथा अन्य [illegible] सहयोगिनों के साथ यहीं नित्य विहार करते हैं। सुगम, स्वस्थ तरह-तरह की लीलाओं और

क्रीड़ा-कौतुक द्वारा मनोरंजन करती है । परमधाम की हर भूमि पर उनका दर्शन होता है वह सर्वत्र व्याप्त हैं। और :-

सबे मिलके रास जागनी, खेलें इहाँ चोबीस हजार ।
करसी लीला अछर दस तोड़ी, होत विलास आनन्द अपार ।।

प्र०कि०प्र० 54/14

सब मिलकर जागनी रास खेल रही है यहाँ चोबीस हजार ईश्वरी सृष्टि प्रकट होगी । दस वर्ष तक अक्षय देश में आनन्द -विहार की लीला चलेगी।

पसु पंखी अति सुंदर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान ।
अनेक विध के खेल जो खेलत, सो केते कहूँ मुख इन जुबान ।।

प्र०कि०प्र० 89/4

वनों में सुंदर पशु पक्षी शोभायमान है वे किलोलें करते हुए खेल खेल में मग्न है मन को मोह लेने वाले अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं जिनका वर्णन मुख से नहीं किया जा सकता है।

चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर ।
बन यमुना हिरदे चढ़ि आए, इन विध हुए हजूर ।।

प्र०कि०प्र० 83/13

प्यार का रंग चढ़ते ही प्रेम का तीव्र प्रवाह बढ़ चला और परमधाम के वन, कुंज, यमुना के रंग हृदय में अंकित होने लगे। इसी प्रकार से मैं स्वामी के

अति निकट पहुंच गया।

सोहैं कटाछैं स्याम को, खैंचत सूरत बनाय ।
बांके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाय ।।

म0कि0ग्र0 93/15

श्यामजी अपने नेत्रों के कटाक्ष द्वारा हमारी सुरत को स्नेह पूर्वक खींचते हैं और बांकी चितवन से नेत्रों की पुतलियों को घुमाकर हमारे नयनों से नयन मिलाते हैं।

कंठ हार सजे सिंगार, नैन सवार सो मे मुखार ।
संग आधार करे विहार, महामति काम सरे ।।

म0कि0ग्र0 123/4

वे श्याम गले में हार पहनकर, समस्त शृंगार सजाये, नयन सजाकर आई हैं उनके मुखारविंद की शोभा अवर्णनीय है। वे प्रियतम के संग विहार केलि में मग्न हैं। महामति कहते हैं, इस प्रकार समस्त प्रेम-विभोर अंगनाओं के सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं।

अंग अंग उछरंग, सखी मन उमंग ।
अलबेली अति अनंग, भामनी रस भरे।।

म0कि0ग्र0 123/2

उनके अंग-प्रत्यंग में उत्साह एवं उमंग है। हर सखी आनन्द में मग्न और आनन्द में विभोर है उन्हें प्रियतम का भरपूर प्रेमामृत मिला है।

सब सखियाँ कृष्णमय होकर उन्हीं का अनुकरण करती है तथा राधा के चारों ओर घेरा डाल कर कोई कृष्ण बनती है तो कोई ग्वाल बाल बनती है फलस्वरूप श्रीकृष्ण के ध्यान में इतना तन्मय हो गई है कि उनको गोपियों में श्रीकृष्ण दिखाई देने लगे। और उनके मधुर मिलन के स्मृति से ही उनका सारा ताप तन का मिट गया चारों तरफ आनन्द का उल्लास छा गया। और इस प्रकार अक्षरातीत ब्रह्म का नया स्वरूप धारण करके प्रकट हुआ तो रास लीला का पुण्य काष्ठा हु गई। वास्तव में रास लीला इस ब्रह्माण्ड की लीला नहीं है। इसके लिए योगमाया द्वारा केवल ब्रह्माण्ड रचा गया। जिस समय रास लीला हो रही थी तो ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली अक्षर ब्रह्म की चित्तवृत्ति इतना इसमें मग्न थी कि योग-माया के अतिरिक्त किसी ब्रह्माण्ड की रचना नहीं हो सकी।

माया और अहंकार ही अलगाव पैदा करते हैं। श्रीकृष्ण जब यह रास रचा रहे थे। तभी गोपियों में दर्प उठा कि विश्व की समस्त नारियों में श्रेष्ठ है बस फिर उसी समय श्रीकृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये। और अक्षर ब्रह्म पुण्य लीला में इतने मग्न थे कि उन्हें स्वरूप बोध न रहा और अन्तर्ध्यान हुए श्रीकृष्ण को ढूंढने गई गोपियों को सब अन्धकार दिखा केवल वृन्दावन ही दिखाई दिया। रास लीला के उपरान्त काल माया का संसार निर्मित हुआ उसमें सब लोग ज्यों की त्यों प्रकट हुए।

अध्याय - ६

प्रेमलक्षणा भक्ति

(भावात्मक सामग्री)

भक्ति

महामति जिस ईश्वरीय प्रेम का वर्णन करते है वह शुद्ध, माधुर्यनिष्ठ एकनिष्ठ आध्यात्मिक है। वह प्रेम-लक्षणा भक्ति है। साधना के तीन अंग है- कर्म ज्ञान, भक्ति । ज्ञान की पराकाष्टा सत्य है, क्रिया की पराकाष्टा - धर्म है, अनुभूति की पराकाष्टा प्रेम या भक्ति। कर्म योग वह है जहाँ भक्ति के साथ सारे कर्म का समर्पण भगवान के प्रति होता है। गीता में ज्ञान, कर्म, भक्ति , ध्यान को ही चतुर्मुखी योग कहा गया है। दुःख सुख का सम्मिश्रित भाव का मिश्रण स्थल ही लौकिक जीवन मानव जन्म से अनेक विषम परि- स्थिती से गुजरता रहता है और उसी के पीछे जो आविर्भाव वही [illegible] है।

महामति के अनुसार प्रेम द्वारा ही ईश्वर मिलन सम्भव है और मानव मात्र की साधनाओं का माध्यम है। ज्ञान के द्वारा सत्य की अनुभूति है जप, तप, पूजा, माला, वेश, तीर्थ यात्रा, स्नान, व्रत, उपवास, रोजा, नमाज आदि कर्मकाण्ड बाह्याडम्बरों द्वारा नहीं पहचाना जा सकता । वैसे तो माया का पार ब्रह्म पाना कठिन है क्योंकि अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा की रहस्य को समझना कठिन है। उसके प्राप्त करने के लिए ध्यान कर्म और ज्ञान से अधिक प्रेम भक्ति का महत्व है। महामति की साधना पद्धति "श्रीकृष्ण" के युगल किशोर स्वरूप की परा प्रेम लक्षणा भक्ति है। इस भक्ति में माधुर्यभाव, पतिव्रत की भावना, समर्पण की भावना, अनुराग आदि है। यही प्रेम मार्ग है। और उसके उपास्य "श्रीकृष्ण" ही है।

अक्षरातीत है वैसे महामति प्राणनाथ ने उनके कई नाम दिये हैं जैसे कृष्ण, मोहम्मद, ईसा, निष्कलंक बुद्ध।

सुंदर सरूप स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी ।
हम दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी ।।

इसमें महामति प्राणनाथ श्री श्याम एवं श्री श्यामा जी का सुन्दर स्वरूप ऐसा है कि स्वयं को बार-बार न्योछावर कर देने की इच्छा होती है। इस युगल स्वरूप ने अपूर्व कृपा की। मुझे अपनी दृष्टि में जुगाये रखा एवं चरण शरण प्रदान की ।

महामति प्राणनाथ अपने उपास्य का वर्णन करते हुए कहते है ।

मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम ।
मैं पिंड न देखूं, ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम ।।

प्र०कि०पु० 88/10

धाम के मार्ग में जो बाधा बने उसे मैं मिटा दूंगी यह पिंड शरीर और ब्रह्मांड -मायासृष्टि की ओर मेरी दृष्टि नहीं रुकी, क्यों कि मेरे हृदय में श्रीश्याम और श्यामा बसते है।

{सुन्दरबाई श्यामा का अवतरण श्री देवचन्द्र के रूप में हुआ । }

अंग अंग सखी मेरी सेज रसभरी, अंग अंग विलास में के विहारी ।
अंग अंग सखी मेरे सोई रस रंग, अंग अंग सखी मे किए श्याम संग ।।

प्र०कि०पु० 84/5

हे सखी। मेरी वह आनन्दपूर्ण शय्या भी धन्य हुई। जिनसे विलास पूर्ण शिंगार की। रस-रंग, विनोद-कौतुक भरे वे सारे खेल धन्य हुए, जो रँगीले प्रियतम श्याम के संग सम्पन्न हुए।

मान धारी पतित जो हुते, जिन जुध जग पति सौं किए ।
जगपति जग में बड़ा जोरावर, तिन मार वरन तले लिए ।।

म०कि०पु० 16/6

बड़े-बड़े मानधारी पतित हुए, जिन्होंने इस विष्णु अर्थात् जगदीश से टक्कर ली। विष्णु भी परमात्मा की आज्ञा के अधीन आत्माओं को मायावी-संसार और अपनी पूजा में उलझाए हुए हैं। जगदीश बड़े सामर्थ्यवान हैं। उन्होंने सबको मारकर अपने अधीन कर रखा है। इस लिए सब उन्हीं की पूजा करते हैं।

मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई ।
सुंन निराकार पार पर आतम, मैं तापर दृष्टि चढ़ाई ।।

म०कि०पु० 16/8

मैंने बड़ी युक्ति से आत्मा को जगाकर, संसार की लोभ प्रवृत्ति राह से उलटकर, परब्रह्म परमात्मा की ओर लगा दिया। शून्य निराकार के पार परात्म तक मेरी सुरत चढ़ गयी।

महामति की दृष्टि में प्रतिक्षण परमात्मा के प्रेम में मग्न रहना ही वास्तविक भक्ति अथवा मोक्ष है। प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचकर साधक, को सायास कर्म करने की आवश्यकता नहीं रह जाती

सुन्न निरगुन निरंजन, देखे बैकुंठ निराकार ।

अक्षर पार अक्षरातीत, प्रेम पुकार्यो पार के पार ।।

प्र०कि०प्र० 33/9

शून्य, निर्गुण, निरंजन, बैकुंठ और निराकार सबको देखकर और इन सबको भी पार अक्षर ब्रह्म और उसके भी पार अक्षरातीत स्वामी के प्रेम को प्रकट किया।

ए भी फेर विचारिया, सांच आगे ना रहे असत ।

यह बल हुकम के, देह सुपन रही इत ।।

सोई हुकम आप पोहोंचिया, जो करी थी अरज ।

सबद भी सिर पर लिए, आया वतन का जागृत ।।

प्र०कि०प्र० 86/11,12

और फिर दुबारा उस पर विचार किया, सत्य के सामने मिथ्या का अधिकार नहीं चला। यह सब स्वामी के आदेश का ही चमत्कार था उसके सामने यह नश्वर शरीर के स्वरूप को पहचान कर यथावत वहीं पड़ी रही।

वही प्रियतम का आदेश अब अपनी पूर्ण प्रतिज्ञा के अनुसार प्रत्यक्ष प्रकट हुआ है। उन शब्दों को भी सबने मान लिया है। स्वामी द्वारा प्रदत्त अखंड जाग्रत ज्ञान एवं उनके आदेश का बल हमें मोह निद्रा से जगाने अवतरित हुआ है।

भक्ति शब्द का अर्थ है भगवान की सेवा या भगवान का प्रेम । प्रेम और सेवा के बिना भक्ति नहीं हो सकती। आगे भक्ति को मुक्ति

का सर्वोच्च साधन नहीं मानता है किन्तु भक्ति के लिए भक्ति साधन और साध्य दोनों ही है। महाभारत में बताया है कि परमात्मा के प्रति प्रेम भक्ति ही संसार से विरक्त करके प्रियतम से एकाकार करती है वस्तुतः भक्ति में प्रमुख तीन तत्व हैं— अनुराग, श्रद्धा और विश्वास। परात्पर में परम अनुराग या निष्काम अनन्य प्रेम हो जाना ही भक्ति है। और महामति प्राणनाथ जी ने भी आनन्द स्वरूप चिद्घन श्री कृष्ण को प्राप्त करने हेतु परा प्रेम लक्षणा भक्ति का उपदेश किया है।

प्रेमा भक्ति से ही प्राप्य इनके आराध्य अक्षरातीत ब्रह्म है। महामति प्राणनाथ श्री कृष्ण को शक्ति संवलित मानते हैं- उपासक के तीन स्तर हैं— अक्षरातीत, अक्षर, क्षर के उपासक इन्हें क्रम से ब्रह्मसृष्टि (फरिश्ते) एवं जीव सृष्टि - (नासूत)। भक्ति क्रम तथा अक्रम उभयात्मक है।

दुख से विरहा उपजे विरहा प्रेम इसक ।
इसक प्रेम जब आइया तब नेहचे मिलिये हक ।।

म०कि०प्र० 18/16

प्रेम तत्व ही ईश्वर की परम विभूति है और परमात्मा में परम अनन्य विशुद्ध प्रेम का होना ही भक्ति है। और प्रेम लक्षणा भक्ति को प्रणामी संत साहित्य के संतों ने मान्यता दी। पतिव्रत्य भाव से अक्षरातीत ब्रह्म की उपासना ही इन संतों की भक्ति साधना है परब्रह्म प्रियतम है, आत्मा उनकी प्रिया है। अपने प्रियतम पर अपनी नश्वर देह का बलिदान करने की वेला में रुकते नहीं है। क्यों कि उनके प्राण प्रियतम में बसे हैं।

प्रेम लक्षणा भक्ति में समर्पण का भाव

अंग आशक आगूहीं फना, जीवत नासूत के नाहें ।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या कपाए ।।

म०कि०पु० 91/12

प्रेमी के अंग-प्रत्यंग पहले से ही मृतप्राय होते हैं। वे जीव तो अपने जीवन प्रियतम में जी रहे होते हैं। उनकी जीवन डोर पिया के हाथ में रहती है। वे चाहे इसे रखें अथवा तोड़ दें- अपने लिए समर्पित हो जाने का अवसर प्रदान करें।

मद चढ्यो महामत भई, देखो ए मस्ताई ।
धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई ।।

म०कि०पु० 83/11

इस प्रेम मद का प्रभाव तो देखो, जिसकी मस्ती चढ़ जाने पर ही, मैं महामति हुई । परमधाम में विराजे श्रीश्याम-श्यामा और उनकी समस्त अंगनाओं का नख-शिख सौंदर्य मेरे हृदय में अंकित हो गया।

महामत कहे मेहेबूब जी, अब देखाए बाहेदत दिन ।
हांसी करी भली भांतसों, अब उठो सुख दीजे तिन ।।

म०कि०पु० 75/15

महामति कहते हैं, हे मेरे प्रियतम! हमारा हृदय आप की लीला देखना चाहता था। अब तो हर प्रकार से हंसाई हो गई। इसके बाद तो हम सब उठकर, मिल-जुल कर प्रियतम प्रदत्त अखण्ड सुखों का उपभोग करें। [illegible]

जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार ।

कोई विध करके उड़ाइए, ए जो आड़ो देह विकार ।।

प०कि०यु० 75/6

परमधाम प्राप्ति के मार्ग में जो भी रुकावट बने, मैं उसे जला दूंगी। चाहे जैसे भी हो, इस शरीर में घुन की तरह लगे विकारों को नष्ट करना, जलाना ही है।

मैं जाण्या अपने तनको, मारों भर भर बान ।

तिनसे छूटी देह को, जला करो निदान ।।

प०कि०यु० 85/12

इसमें साधक अपनी साधना को बताते हुए इस नश्वर शरीर और अपने परमात्मा के प्रति प्रेम का वर्णन कर रहे हैं। पुनः मैंने विचार किया कि अपने शरीर को तीखे बाणों से छलनी-छलनी कर दूं। उसके आघात प्रत्याघात द्वारा इस नश्वर देह का अन्त कर दूं।

अब आतमने दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इश्क ।

जोस इश्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेशक ।।

प०कि०यु० 85/14

आत्मा को जब यह दृढ़ निश्चय हो गया है कि यह देह प्रेम के बिना नहीं उड़ सकती। प्रेम- इश्क और आवेग (जोश) जब दोनों मिल जाएंगे तो निस्संदेह इस देह का क्षय होगा।

इसमें महामति ने अपनी [illegible] समर्पण का भाव व्यक्त किया है जो,

कि अपने को सैकड़ों बार कुरबान करने को तैयार है।

जो अक्स असल वतन की, तो क्यों रखवे देते जीव ।

करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पीउ ।।

प्र०कि०पु० 91/5

जो परमधाम के वास्तविक प्रेमी हैं, वे आत्मबलिदान करते हुए कदापि संकोच नहीं करते। बलिदान के लिए आह्वान प्राप्त होते ही अपने स्वामी पर वे करोड़ों बार बलिदान हो जाते हैं।

कुरबानी को सब अंग, हँस हँस मिल हरखत ।

पीउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत ।।

प्र०कि०पु० 91/10

समर्पित या कुरबान होने के लिए सारे के सारे अंग हँस-हँसकर उल्लसित होते हैं। अपने प्रिय के नाम पर मिट जाने का सुअवसर पाकर सारे अंग नाच उठे हैं।

इन खसम के नाम पर, कै कोट बेर वारों तन ।

टूक टूक कर डार हूँ, कर मनसा वाचा करमन ।।

प्र०कि०पु० 91/7

ऐसे प्रियतम के नाम पर मैं कई करोड़ों बार अपना शरीर कुरबान कर दूँ। मन के भाव, मुख के वचन और तन के समस्त कर्म टूक-टूक, टुकड़े-टुकड़े कर के उन पर न्योछावर कर दूँ।

कुरबानी सब सखियां, उमंग सारे अंग ।

सुरत पोहोंची जाय धाम में, मिलाप धनी के संग ।।

इसकसौं सेवा करूं, सब अंगों साबयात ।।
अब तो उनका मिलनी आसी, और उनका दूसरी ।।

प्र०कि०गु० 62/17

आप दूल्हा है। मैं आप की दुल्हिन - इसके अतिरिक्त मैं कोई संबंध नहीं जानती आपको स्वामी मानकर समस्त गुण अंग इन्द्रियों से मैं आपकी सेवा करती रहूं, इतना ही निवेदन है।

प्रेम दरद इसक तुमारा, मैं फेर मागूं फेर ।
प्यारे मिलूं प्यारे पीउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर ।।

प्र०कि०गु० 62/20

मैं बार-बार आपका प्रेम विरह और दर्द इश्क माँगती हूं। ताकि मैं प्रेम पूर्वक अपने प्रियतम से मिलूं। प्रियतम की प्यारी अंगना महामति बार-बार यही विनती करती है।

अत: महामति प्राणनाथ अपने स्वामी से कहते है कि मैं आप को छोड़कर किसी आते तक मेरे दिल के तो सारे भेद खुल चुके हैं। अब तो जैसा आप कहेंगे वैसा ही मैं करूंगा।

नीके करी सबों, ऐसी ना करी दूजी कोए ।
कहूं एक नाम्या वारें, प तुम कैसी बनाई सोए ।

प्र०कि०गु० 109/19

अपना अनुग्रह और विशेषाधिकार प्रदानकर आपने मुझे इस संसार में सबसे श्रेष्ठ बना दिया। इतनी और ऐसी प्रतिष्ठा कभी किसी और को न मिल पायी

फिर भी, मेरी आत्मा इतना कुछ पाकर भी सन्तुष्ट नहीं हुई। कुछ और माँग लेने की भी इच्छा अब भी शेष है। यह आपकी कैसी मोहक लीला है प्रियतम!

किन विध मैं तुमको कहूँ, क्यों कर विनय करूँ ।

ये आसान तुमारे कद में, मैं गुजरान क्यों करूँ ।।

न०कि०पु० 109/3

आप से मैं क्या निवेदन करूँ? कैसे कहूँ? परन्तु कहे बिना मन भी नहीं मानता। आप का परम अनुग्रह प्राप्त कर या चुपचाप बैठे रहकर मैं अपने कर्त्तव्य का कैसे निर्वाह करूँ? ~~मैं इन सुख दुख से ना~~

मैं इन सुख दुख से ना डरूँ, मेरे धनी साहिब सन्मुख ।

मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख ।।

न०कि०पु० 94/30

संसार के लोगों के द्वारा दिए गये किसी भी दुख-सुख से मुझे डर नहीं लगता। मुझे तो केवल मेरा स्वामी साहिब जो मेरे सन्मुख और अनुकूल रहे। मुझे दुख तब होता है, जब मेरी संगी अंगनाओं को सत्य धर्म की राह पर चलते हुए कोई कष्ट पहुँचाता है।

अब बोहोत कहूँ मैं केता, करी है इसारत ।

दिल आवे तो लीजो समझ, सुख पाए कहें महामत ।।

न०कि०पु० 94/36

अब और अधिक मैं कितना कहूँ? मैंने मात्र संकेत कर दिया है। यदि अब

तुम्हारे दिल को भा जाए तो इस सीख को तनिक अपने योग्य अवश्य बना लेना। इसी राह पर चलकर महामति ने भी अवश्य कुछ पाया, इसीलिए ऐसा कहा है।

अब हुकम होय अपनी सो करूं, मेरा बल ना चले कछु इत ।
सुरखरू तुम करोगे, पुकार कहे महामत ।।

म०कि०पु० 100/10

हे स्वामी, अब आप जैसी आज्ञा दें, मैं वैसा ही करूंगी। इस माया में मेरा कुछ भी बल नहीं चलता। महामति बार-बार पुकार कर कहती हैं, हे प्रियतम! आप मेरे समस्त अपराध एवं अपने प्रेम के ऋण से मुक्त करके, मुझे अपने योग्य बनाइयें।

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, वर कर ग्यान अभिष्ट ।
न्यारा हुआ न निहकाम होय के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट ।।

म०कि०पु० 101/4

अपनी पंडिताई साथ लिए और ज्ञान-चर्चा करते हुए मैं भी अन्यान्य संसारी वक्ताओं की तरह प्रवाह में धो गयी। सबसे अलग, निष्काम निःस्पृह होकर रह न पायी मैं निरगुण ही पड़ी रही। प्रियतम का अनुग्रह प्राप्तकर पुष्ट न हुई। संसार में मान्य निर्गुण या पुष्टि मार्ग ने अपना न सकी।

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन ।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन ।।

म०कि०पु० 100/9

जैसे जैसे आप ने कृपा की, वैसे वैसे ही मेरे अवगुण बढ़ते गये। तथापि आपने बार-बार कृपा की। लेकिन मेरा मन बार-बार विघ्न उत्पन्न करता रहा।

अक्षर पार द्वार जो हुते, सोए दिए सब खोल ।
ऐसी कुंजी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल ।।

म०कि०पु० 97/9

अक्षर ब्रह्म के पार परमधाम के जो द्वार थे, उन्हें भी उन्होंने खोल दिया । उन्होंने कृपा पूर्वक मुझे तारतम की ऐसी कुंजी प्रदान की, जिसे कोई भी मोल चुकाकर नहीं पा सकता।

महामत प सनमंधि पाइए ऐसा अखंड सुख अपार ।
गुरु प्रसादे नाटक देख्या, पाया मन अनेक प्रकार ।।

म०कि०पु० 7/17

महामति कहते है कि ऐसा अखंड अपार सुख तो परब्रह्म से सम्बन्ध से ही मिलता है। गुरु की कृपा से मैं यह लीला-नाटक देख पाया जिसमें अनेक प्रकार से मन की विविधता का ही विस्तार मिला।

चारों खूंटे दावानल दसों दिसा, ए जलत वासनाओं की निवार ।
कृपन मोह की नजर करो निरमल, तुम सुख दाता ब्रह्म अंग की किरतार।

म०कि०पु० 58/3

इसमें महामति प्राणनाथ अनुग्रह तथा कृपा दोनों करते हुए कहते है कि दसों दिशाओं में फैली आग में जलती आत्माओं को बचाओ और अपनी कृपा दृष्टि से मोह दूर करके आत्माओं को निर्मल करो। सुख दे प्रसन्नकर उन्हें विरह ताप से मुक्त करो।

मेहेरें इनको ऐसा किया, वही वतन रोसन ।

मुक्त दे सचराचर, इन तारे चौदे भवन ।।

प्र०कि०पु० 82/4

लेकिन उनकी कृपा ने हमें केवल स्वरूप प्रदान कर परमधाम को प्रकट करने योग्य बना दिया। चर अचर जीवों को मुक्ति मार्ग दिखाकर हमने चौदह भवन को उबार लिया।

और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन ।

साथ पराई सब अंगों, यो कै विध कृपा रोसन ।।

प्र०कि०पु० 82/7

उनकी कृपा ने और भी कैसे-कैसे चमत्कार किये। परमधाम को हमारा वतन निर्धारित किया फिर मेरे एक-एक अंग को जाग्रत कर इस बात की साक्षी दी। उनकी कृपा हम पर विविध रूपों में प्रकट हुई।

बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार ।

एक ए लिखे में ना हुई, वाको वाही जाने सुमार ।।

प्र०कि०पु० 82/6

उनकी कृपा बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ी कि उसका कोई और छोर न रहा। उनकी कृपा का ब्योरा मैं नहीं दे सकी। जिसकी दया है, वही उसका अनुमान लगा सकता है।

ऐसा न कोई उमराव, जो भाने दिल का सूल ।

जब करसी तब होयसी, किया साहेब का कबूल ।।

प्र०कि०पु० 94/23

ऐसे बादशाह के दरबार में ऐसा कोई पदाधिकारी नहीं, जो दिल का दुःख बाट ले। उन तक सन्देश पहुँचाने के सभी प्रयास निष्फल कर दिये गये। अब स्वामी कृपा करेंगे तभी उनका दिया सुख मिलेगा।

> मेरे तो गुरराम हो धनी, जो पकुया ही बंध ।
> जो कदी न छुटया रात में, तो फजर छुटसी फंद ।।
>
> प्र०कि०पु० 94/28

उनकी कृपा से मेरा भी निर्वाह हो जायेगा। मैं तो उनके प्रेम बन्धन में पड़ा ही हूँ। लैल-तुल-कद्र की रात में जिसका बन्धन न टूटा तो फजर-या जागनी की प्रभात बेला में उसका फंदा अपने आप छूट जायेगा।

> सुंदर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी ।
> कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी बायन सुख कारी।।
>
> प्र०कि०पु० 119/5

सुन्दर स्वरूप प्रदानकर हे प्रियतम, आपने मुझे सर्वश्रेष्ठ एवं भाग्यशालिनी बना दिया। मेरे ऊपर आपने असीम कृपा की। इस अनुग्रह पर ललिता कोटि बार बलिहारी जाती है। मेरे स्वामी अखंड सुख प्रदाता है।

> कारी कुमत कुब कुबल, ऐसी कठिन कठोर हूँ भारी ।
> आतम मेरी निरमल करके, सेहेजे पार उतारी ।।
>
> प्र०कि०पु० 119/4

मैं स्वयं तो काफी कलुषी हूँ, कुबुद्धिपूर्ण, कुबड़ी, कुमार्गगामी एवं पत्थर की तरह कठोर भी हूँ। फिर भी आपने मेरी आत्मा को पवित्र करके सहज ही पार उतार दिया।

मेरे अभी आपके हुलसा, मैं कर ना सकी पेहेचान ।

सो रोऊं मैं याद करकर, जो मारे हेत के बान ।।

प०कि०ग्रं० 85/1

हे मेरे परमधाम के स्वामी दूल्हा। मैं आपको पहचान न पायी । आपके स्नेह भरे वचन अक्सर जो मेरे मन को बींध जाया करते थे। उन्हें याद करके मैं रोती रहती हूं।

क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग भभक ।

फिर बर सारा जलिया, जाए लागा पोहोंची हक ।।

अभी तक मेरा रोना-कलपना शेष नहीं हुआ। न जाने और कितना विरह विलाप शेष है। प्रेम की आग कुछ ऐसी भभक उठी है कि कि सारा वन-उपवन एवं ब्रह्मांड जल गया। विरहाग्नि की लपटें प्रियतम परमात्मा के धाम तक भी पहुंच गयी।

जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक ।

इनमें पंछी क्यों रहे, जो पर जल हुआ पाक ।।

प०कि०ग्रं० 75/8

सारा जंगल रोते रोते और विरह संताप में जल भुनकर खाक हो गया। इनमें वह पक्षी जीवित कैसे रहें, जिनके पंख जल-भुन गये हैं?

पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक ।

भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक ।।

प०कि०ग्रं० 75/9

पहाड़ों के हृदय भी रोते-रोते टूक-टूक हो गये। भवजल ही नहीं, सारा भव-सागर भी रोते-रोते सूख गया।

ए खेल झूठा तो छोड़िया जाए, जो सत सुख अंग में भाए ।
जब सत सुख देखोगे खेल, तब झूठा सुख देखोगे ठेल ।।

प्र०कि० 75/13

यह झूठा खेल तभी छोड़ा जा सकता है, जब अंग प्रत्यंग को सच्चे सुख का अनुभव प्राप्त हो। जब उस सत्य सुख और लीला विलासको देखोगे तो नश्वर दुखों को ठेलकर दूर हटा दोगी।

अन्तस्करन निसान आए, ले आतम को पहोंचाए ।
मन चोटें लुभाए, नींद दई उड़ाए ।।

प्र०कि०पु० 83/12

अन्तःकरण को जो संकेत प्राप्त हुए उसने उन्हें आत्मा तक पहुँचा दिया। उनके प्रेम और विरह के दंश ने ऐसी टीस पैदा की कि आत्म-विस्मृति की नींद उड़ा दी ।

छक्यों साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार ।
पर आतम अंतस्करन उपज्यों, लेले संग आधार ।।

प्र०कि०पु० 83/9

प्रेम के रस में समस्त अंगनाएँ प्रेमोन्मत्त हो उठीं। काया के सारे विकार छूट गये। तदुपरांत परात्मा के अंतःकरण में बात आयी कि प्रियतम के संग रमण करें।

प्रेम की मदिरा का पान करते ही सारे बंधन और नियम छूट गये।

महामत महामद बूँदों, आयो धाम को अहमद ।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद ।।

म०कि०पु० 83/15

प्रेम की गहरी मस्ती से छाते जाते ही, महामति पर परम धाम का गौरवपूर्ण आदेश और श्यामा जी का उन्मद आवेश परिलक्षित हुआ, जिसे लेकर वह सारी अंगनाओं के बीच से प्रेम के इस प्रेम-महानन्द में छक गये। सुन्दर साथ भी उस मस्ती में झूमने लगे। उनको साथ लेकर वे असीम के पार अखंडानंद में पहुंच गये।

मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात ।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करो विख्यात ।।

म०कि०पु० 94/26

मेरी अंतव्यथा - दिल के दर्द की बात एक मात्र मेरा साहिब, परमात्मा ही जानता है। इस संसार में मुझे ऐसा कोई भी नहीं मिला, जिसे मैं अपने हृदय का मर्म बता सकूं या खुल कर अपनी बात कह दूं। महामति प्राणनाथ कि विरह वेदना में ही प्रिय दर्शन सम्भव है वही उनकी भक्ति है और भक्ति में ही परमात्मा दर्शन सम्भव है।

संयोग तथा परम तत्व की प्राप्ति :--

वास्तव में संयोग का अभाव ही वियोग बन जाता है महामति प्राणनाथ के अनुसार जब आत्मा अपने परमात्मा से बिछड़ने का अनुभव करती

है तो वह विरह साधना में दिखाई पड़ता है।और जब तक परमात्मा के प्रति वियोग उत्पन्न नहीं होगा तब तक वह परमधाम की प्राप्ति नहीं कर सकता वही प्रेम साधना है जो की आत्मा परमात्मा से मिलन करता है और फिर अखण्ड सुख की प्राप्ति जो की मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

<u>दुख द्वार</u> :—

दुख ते विरहा उपजे विरहा प्रेम इश्क ।
इश्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक ।।

प्र०कि०पु० 18/16

दुख से परमात्मा के लिए विरह उत्पन्न होता है विरह से प्रेम (इश्क) अंकुरित होता है। प्रेम (इश्क) जब पल्लवित होता है तो प्रियतम से मिलन निश्चित है।

दुख सोभा दुख सिनगार, दुखही को सब साज ।
दुख ले जाए धनी पे, सुख सुखे होत अकाज ।।

प्र०कि०पु० 18/17

दुख ही शोभा है, दुख ही श्रृंगार है। आत्म जागृति के लिए सारी साज-सज्जा सामग्री और तैयारी, दुख ही है। यही दुख प्रियतम से मिला देता है। जब कि सुख से सारा बना बनाया काम बिगड़ जाता है।

प्रेमी जनों के लिए दुःख ही कवच बनकर पीड़ा की रक्षा करता है। दुख ही आभूषण बन कर उनको संवारता है। और विकारों से मुक्त होकर निर्मल होता है। जीव को दुःख प्यारा लगने लगे तो परमात्मा

से सच्चा प्रेम निश्चित है।

सब खोज सबद को लीजे तत्व, तोल देखिए कहीं केहीनत ।

जासों पाइए प्राणको आधार, सो क्यों खोय गमावे गमार ।।

प्र०कि०पु० 4/7

इसलिए शास्त्रों के वचनों को खोजकर सार तत्व ग्रहण करो। विचार कर देखो कि महामति कौन है? जिस मानव जीवन में परमात्मा की प्राप्ति सम्भव है। रे मूढ़ जीव ! तू उसे खोकर वृथा गँवा रहा है?

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो ।

हम पीछे फेर न देखहीं, पीउसों करें रस रंग ।।

प्र०कि०पु० 88/14

हमने सबके गुण, अवगुणों को क्षमा कर दिया। हमें इसकी भी चिन्ता नहीं कि कोई हमारे संग चले या पीछे पड़ा रहे। हमें वापस मुड़कर देखने का अवकाश नहीं, क्योंकि वहाँ हमें अपने रंगीले प्रियतम का आनन्दपूर्ण संयोग एवं प्रेमामृत प्राप्त होगा।

खेल देखाया ब्रह्म सृष्टि को, करके हुकम आप ।

ए खूब खेल कायम किया, करके सत मिलाप ।।

प्र०कि०पु० 73/45

परमात्मा ने स्वयं आज्ञा देकर ब्रह्म-सृष्टि को खेल दिखाया। फिर इस नश्वर-लीला को रखकर इसमें प्रत्यक्ष प्रकट हुए। ब्रह्म सृष्टि से मिलाप करके उन्हें परमधाम ले गये। संसार के जीव उनके साक्षात्कार से अखण्ड-पद पा गये।

बोले वाले पर कोई न पेहचाने, परखत नहीं परखाने ।

महामत कहे नाहीं पार खोजोगे, तब आप आप ओलखानो ।।

म०कि०ग्र० 2/5

वार्ता-क्रम में हुई आम-चर्चा मात्र से उसे कोई नहीं पहचान पाता। जानते हुए भी उसकी आन्तरिक प्रेम परख नहीं हो पाती। महामति कहते है, अंतर में पेठ उस पार (अक्षर) की खोज करोगे। तब कहीं जाकर स्वयं को पहचान सकोगे।

एही अंकुर माया कारन, भरत विछोहा अंतराय ।

ना तो एक आहि इन पियाकी, देवे ब्रह्मांड उड़ाय ।।

म०कि०ग्र० 62/5

माया से उत्पन्न मोह का यह अंकुर अंगनाओं के लिए प्रियतम मिलन के समय अन्तर पैदा करने वाला बन जाता है। अन्यथा प्रिय के लिए आरम्भ में उठी एक ही आह इस ब्रह्मांड को उड़ाने के लिए पर्याप्त है।

वाह्याडम्बरी :—

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो अंग उत्तम आभन ।

उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बान ।।

म०कि०ग्र० 15/4

चाहे सात बार स्नान करो। शुद्ध अंग के सर्वोत्तम वस्त्र पहनो। उत्तम ब्राह्मण जाति में जन्म ग्रहण कर लो। तथापि जीव अपनी कुटिलता नहीं छोड़ता।

कहने का तात्पर्य वाह्याडम्बर से आन्तरिक शुद्धि नहीं हो सकती। मनोयोग से ही सत्य की प्राप्ति, अनुभव होगा।

घर अगुआ दिए बिन हाथ न आवे सत की बड़ी ठकुराई।
और उपाय याको कोई नाहीं, बिन देवे आप बड़ाई ।।

प्र०कि०पु० 6/10

अपने मन को समर्पित किये बिना उसे प्राप्त करना असम्भव है। सत्य की बड़ी महिमा है। इसके सिवा उसे प्राप्त करने का और कोई उपाय नहीं। स्वयं बड़ाई न लो।

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल ।
तोलों ना रीझे साहब, जोलों ना साफ दिल ।।

प्र०कि०पु० 132/2

करोड़ो बार प्रार्थना करो। ऊपर से चाहे कितनी ही शुद्धि के लिए आचार अनुष्ठान कर लो। जब तक मन को साधकर वश में नहीं कर लेते, तब तक पर ब्रह्म स्वामी का मिल पाना असम्भव है।

जैसा बाहेर होत है, जो होय ऐसा दिल ।
तो अधखिन पीउ न्यारा नाहीं, मांहें रहे मिल मिल ।।

प्र०कि०पु० 132/4

तुम्हारी काया जितनी बाहर से स्वच्छ है, यदि मन भी ऐसा ही निर्मल हो जाये तो पलभर भी अपने प्रियतम से अलग न रहे। फिर तू रात-दिन उनसे रमण करेगी।

• . जिन जैसा किबला सेवया, आगूं आया तैसा तिन ।

दुनी कारन खोवे दीनको, तो आखर वही जलन ।।

प्र0कि0पु0 108/33

जिसने जिसे पूज्य मानकर सिर झुकाया है, मन से जिसकी पूजा की, उसके सम्मुख वही आयेगा। जो ऐसी क्षणभंगुर दुनिया के लिए परमार्थ-धर्म को खो देते है, उन्हें अन्त में, पश्चाताप की अग्नि जलाती है।

जब तक तू इस भवसागर पर है तब तक असावधानी से तू वैसे खो सकता है।

हे सफर जे लई येई, से केहीन वदया बीआर ।

हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखी खोल उघार ।।

प्र0कि0पु0 133/3

भवसागर में यह तेरी यात्रा सफल रही तो तुझे दूसरी बार काया की नौका पर सवार नहीं होना पड़ेगा। यदि तू अन्तर की आँख खोलकर चले तो इस बार नर तन द्वारा उठाये इस जोखिम में अत्यधिक लाभ होने की सम्भावना है। नश्वर का मोह त्याग देने पर अखण्डानन्द की उपलब्धि होगी। महामति प्राणनाथ अंगनाओं को सम्बोधित करते हुए कहते हैं।

एही सुरत अब लीजो साथजी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड ।

आगे पीछे दुख काहेको देखे, लीजे अपना सुख अखंड ।।

प्र0कि0पु0 89/5

अरी अंगनाओं! इन सबको ध्यान रखकर ध्यान में सुरत साधो। पिंड और ब्रह्मांड के द्वन्द्व को भुला दो। जागरण के पश्चात् भी संसार के भ्रम में दुख क्यों देख

रही हो? अपना अखण्ड और अविनाशी सुख प्राप्त करो।

बीजों फेरो ए क्याने करे, क्यों ते लेठ सनीध ।
टली वानोतर अग्नी थयो, ते अखंड सुख लेसे संजोग ।।

प्र०कि०पु० 125/19

ऐसे कुशल व्यापारी को पुनः संसार की हाट पर क्रय-विक्रय के लिए आना नहीं पड़ता। वह तो स्वयं ही साहूकार बन जाता है। कारिंदा से बढ़कर वह साहूकार ही बन गया। अब वह अन्तरिक्ष के अखण्ड घर में बैठा अनन्त सुख भोग करेगा। महामति प्राणनाथ कहते हैं परमधाम की पहचान और मोक्ष की प्राप्ति कैसे होगी?

महामत ऐसा गुरु कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर ।
आतम अरथ लगावही, तब पिया वतन हजूर ।

प्र०कि०पु० 29/18

<u>गुरु-मार्गदर्शक :-</u>

महामति प्राणनाथ कहते है कि गुरु उसे बनाइये जो मूल अंकुर, घर के सम्बन्ध में पहचान करा दे। अब उनके वचन, आत्मा को स्पर्श कर जायें, तथा शास्त्र वचनों को जगह से हटाकर आत्मार्थ लगाया जाय तो प्रियतम का घर दूर नहीं, अत्यन्त निकट है।

सगरी तायें सुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार ।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासो पाइए पीउ भरतार ।।

प्र०कि०पु० 18/4

सेवी । तभी तो वह दुख मुझे प्यारा लगा। अपने अंतर्मन में विचारकर देखो उस दुख को कैसे छोड़ा जाय भला, जिससे प्रियतम का लाड़प्यार उपलब्ध होता है।

साथ सुनो एक वचन, आवे आई अर्कून लाड़ुबार ।
रास खेल घर वलसी, मैंने इन भरतार ।।

प्र०कि०प्र० 55/26

हे सुन्दर साथ। ध्यान देकर सुनो। जब अग्नी सखियाँ- साकुंडल लाडूबार आवेंगी तो जागनी रास लीला खेलकर हम सब स्वामी के संग इकट्ठी घर लौटेंगी।

तूं देख दरसन पंथ बेठे, करे किव सिध साध ।
वहीं चौदें सुन समावें, तहाँ आगे अगम अगाध ।।

प्र०कि०प्र० 3/4

तू विभिन्न दर्शन समुदाय एवं पंथों को देख। कितने सिद्ध और साधकों ने कविताई की है। चौदह लोकों को पाकर वे शून्य के विस्तार में खो गये। इसके आगे जो अगम्य और अति गहन "बेहद भूमि" है वे इसमें प्रवेश नहीं कर पाते।

ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्ति देसी सबन ।
कलिजुग असुराई मेटके, पाकर पोहोंचावसी त्रिगुन ।।

प्र०कि०प्र० 73/10

वे ब्रह्म-सृष्टि को परमधाम पहुँचायेंगे और समस्त संसार को मुक्ति देंगे। कलियुग

को आसुरी वृत्ति का संहार करके त्रिगुण स्वरूप तीनों देवताओं को पार, अक्षर धाम में पहुंचा देंगे।

> महामत कहे बिंद छेदे की उड़ाया, पाया सागर सुख सिंध ।
> अक्षरातीत अंग कर पाया, ए निध पूरब सनंध ।।
>
> -ख0कि0प्र0 3/10

महामति कहते है कि छेदे निकाय, सहज ही, बिन्दु (माया) का आवरण उड़ गया तो स्वयं को सुख सागर, सिंधु में पाया। अनंत सुखों का सागर अक्षरातीत परमात्मा का अंग कर मुझे प्राप्त हुआ। पूर्व संबंध के प्रताप से मुझे मेरी अपनी ही निधि मिली।

अध्याय - 7

सुझाव

समाज

सामाजिक सुधार, राजनैतिक सुधार, भाषिक सुधार महामति प्राणनाथ जागनी आन्दोलन का प्रमुख लक्ष्य अध्यात्मिक जागनी था सोती हुई आत्माओं को स्व: स्वरूप या निज स्वरूप का ज्ञान कराने प्रेम लक्षणा भक्ति के द्वारा उन्होंने ब्रह्मसृष्टि या मोमिन उच्चतम पद पर पहुंचाकर परमधाम पर पहुंचना उनका लक्ष्य है।

इस अध्यात्मिक जागनी लक्ष्य के पूर्ति के लिए उन्हें समुचित पृष्ठभूमि तैयार करनी पड़ी और इसके अन्तर्गत उन्होंने धार्मिक जागनी, दार्शनिक नवचेतना, प्रेम लक्षणा भक्ति आदि का सहारा लिया। महामति प्राणनाथ की जागनी का इन पक्ष का प्रस्तुत विवेचन गत पृष्ठों में किया गया है महामति प्राणनाथ के जागनी रूपी तरु के फूल पत्ती और फल के रूप में उनकी अध्यात्मिक, धार्मिक, दार्शनिक और प्रेम लक्षणा भक्ति में लिया जा सकता है। इस तरु का समुचित पुदान करने के लिए उन्हें समाज सुधार, राजनीतिक सुधार और भाषिक सुधार की ओर देखना पड़ा।

<u>सामाजिक सुधार</u> :—

जिस प्रकार महामति प्राणनाथ सर्वधर्म समभाव पर बल दिया है उसी प्रकार सामाजिक दृष्टि कोण से स्वर जाति समभाव स्वर व्यक्ति समभाव की नवचेतना जगाई। महामति प्राणनाथ रूढ़िग्रस्त वर्णाश्रम व्यवस्था या जाति प्रथा

को जन्म पर आधारित नहीं मानते थे व्यक्ति की उच्चता उसके कर्म से मानते थे कीर्तन पदावली में तो जीवन के सूक्ष्म भाव, धर्म दर्शन और भक्ति पर विशेष बल दिया है अपेक्षा गति राजनैतिक, सामाजिक, भाषिक सुधार किर्तन पदावली में कम मिलता है। किन्तु कुलजम सरूप में संग्रहीत कलश, प्रकास, सनंध, खुलासा, खिलवत, सिधामत नामा या मारफत नामा में इन तीनों पक्षों में विशेष बल दिया गया है। किर्तन पदावली एक प्रकार से जोश वाणी है लेकिन अन्य समाज सुधार, राजनैतिक सुधार भाषा पर बल दिया गया है। प्राणनाथ को अपने जागनी आन्दोलन की प्रेरणा जाति पाँति और रूढ़िवादिता को दूर करने के लिए की गई थी। यह कहा जाता है कि एक हरिजन को उन्होंने दीक्षा दे दी उनके गुरु भाई तथा गुरु पुत्र बिहारी लाल जी ने इसका विरोध किया यहीं पर महामति प्राणनाथ ने प्रण किया कि हम ऐसे धर्म का ऐसे जागनी का प्रचार करूंगा जिसमें सभी जाति सभी पुरुष स्त्रियों को सभी वर्णों को समान रूप से समाहित किया जाय और सारे देश का भ्रमण करते हुए प्रणामी धर्म में या प्रणामी समाज बिना जाति-पाँति लिंग का विचार किये हुए हिन्दू-मुसलमान ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, पुरुष स्त्री सब को सम्मिलित किया जाय। धार्मिक समाज में प्रणामी समाज में सामाजिक समानता को पूर्णरूप से उतारा गया है।

जब तक हिन्दू समाज इस व्यवस्था को कर्मणा मानता रहा या इसके सम्बन्ध में संकीर्ण तथा रूढ़िवादी दृष्टि कोण से परे रहा तब भारतीय समाज गतिशील बना रहा। मध्य युग में हिन्दू समाज ने वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित मानकर प्रगति शील खो दी थी। इसका दुष्परिणाम सन्तों ने अनुभव किया तथा श्री प्राणनाथ ने खुलकर इस पर कुठाराघात करते हैं। श्री प्राणनाथ जाति के प्रति

भी उदारवादी थे उनकी पत्नी उनके साथ हमेशा रही। उनके वाणियों में कहीं कहीं सामाजिक जीवन के रहन सहन, रीति-रिवाज का भी वर्णन मिल जाता है। अतः इस प्रकार सामाजिक क्षेत्र में इनका एक अपना मौलिक देन है। यह एक समाज सुधारक महान सन्त थे।

राजनैतिक सुधार :—

महामति प्राणनाथ का सम्बन्ध स्वयं राज परिवार से था उनके पिता स्वयं राजमंत्री थे और वह स्वयं राजमन्त्री थे। अपने युग भयावह राजनैतिक परिस्थिति से वह परिचित थे वह राजनीति को एक स्वस्थ राजनैतिक और धार्मिक आधार देना चाहते थे कि देश का राजा किसी एक देश समुदाय का अनुगामी होकर अपने समुदाय को लादे। इसी लिए औरंगजेब की धार्मिक संकीर्णता रूढ़िवादिता धर्मान्धता को दूर करके सब धर्मी एकता का संदेश देना चाहते थे। वह इस बात के कायल थे कि राजा को किसी समुदाय को पकड़ कर नहीं चलना चाहिए उसे समुदाय निर्पेक्ष होना चाहिए। इस लिए अपने राजनैतिक दृष्टिकोण में जहाँ एक ओर यह मानते थे कि राजीति को आध्यात्मिकता को स्वस्थ आधार चाहिए वही यह भी मानते थे समुदायकता की राजनीति में राजा नहीं फंसे। राज में धार्मिक समुदाय के समर्थक थे। अपने जागनी आन्दोलन की अवधि में वह अनेक राजा के सम्पर्क में आये लेकिन कही भी उन्होंने राजा को धार्मिक संकीर्णता से बचने नहीं दिया। औरंगजेब के उनके चीफ (Chief C.H.) काजी सुलेमान को एक पत्र भेजा परन्तु उससे भी काम न होकर मतभेद बना रहा।

औरंगजेब के मत परिवर्तन में असफल होने के कारण औरंगजेब की धर्म विरोधी नीति के विरुद्ध श्री प्राणनाथ जी ने भारत के समस्त राजाओं को संगठित करने का प्रयत्न किया। औरंगजेब की पृथक भयावह राजनीति से भयभीत हिन्दू राजाओं को संगठित करने में भी वह असफल रहे, किन्तु यह उद्देश्य भी अपने में ऐतिहासिक महत्व का है। श्री प्राणनाथ ने देश के सारे राजाओं को संगठित करने का प्रयत्न किया तथा उसी समय छत्रसाल को अपना शिष्य बनाकर एक नयी प्रेरणा दी। आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रत्येक क्षेत्र में उनके सहायक बने।

सोलह महीने तक दिल्ली में रह कर प्राणनाथ ने औरंगजेब को समझाने का तथा सच्चे धर्म की नीति को समझाने का यत्न किया परन्तु काजी मुल्लाओं से घिरे रहने के कारण वह सफल नहीं हो सके और फिर प्राणनाथ हिन्दू राजाओं को धार्मिक मार्ग में जागृत करने के उद्देश्य से धर्म प्रचार में लग गये।

भाषा :--

भाषीय क्षेत्र में भी श्री प्राणनाथ की दृष्टि को अधिक व्यापक थी इसमें इनकी एक अपनी मौलिक देन थी। आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व ही खड़ी बोली पर आधारित हिन्दी में रचना की। वैसे तो वह कई भाषा जानते थे - जैसे फारसी, अरबी, संस्कृत, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, सिंधी, गुजराती, जानते थे लेकिन उनकी रचना हिन्दी तथा हिन्दी को ही राष्ट्रीय रूप दिया।

इस्लाम धर्म विवेचन के समय फारसी और अरबी शब्दों का प्रयोग किया है।

वैसे तो जो भाव व्यक्त करना रहता था जिस भाषा की आवश्यकता पड़ती थी उसका वह प्रयोग करते थे क्यों कि उनके अनुसार धर्म ग्रन्थ और भाषा पर सर्वथा अधिकार समझते थे। महामति स्थायी निवास पन्ना में बुन्देलखण्ड होने के कारण उनकी वाणी में बुन्देली भी मिलती है।

अलंकार का प्रयोग भी किया है परन्तु किरतन पदावली में अलंकार ज्यादा नहीं मिलते है। चौपाई और छंद का प्रयोग अधिक किया है। तथा रस और व्यंजना हमें मिलता है।